3-डी सपने

लड़कियों की ज़ुबानी

कॉपीराइट © NCAAC 2022

नेशनल कोएलिशन अड्वोकेटिंग फॉर एडोलसेंट कंसर्नस (NCAAC) भारत के विभिन्न हिस्सों से 22 संगठनों का एक गठबंधन है जो महिलाओं, किशोरों और बच्चों के सशक्तीकरण, नागरिकता, विकास, गरिमा और संरक्षण के अधिकारों पर सामुदायिक स्तर से लेकर राज्य और राष्ट्रीय स्तर तक काम कर रहे हैं।

www.pldindia.org/advocating-for-adolescent-concerns/

सदस्यः

पार्टनर्स फॉर लॉ इन डेवलपमेंट (PLD) (Convenor), आरंभ इंडिया (महाराष्ट्र), एक्शन इंडिया (दिल्ली), एरिया नेटवर्किंग एंड डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स (ANANDI) (गुजरात), बटरफ्लाइज़ (दिल्ली), सेंटर फॉर इंक्वायरी इनटू हेल्थ एंड अलाइड थीम्स (CEHAT) (महाराष्ट्र), काउंसिल टू सिक्योर जस्टिस (CSJ) (दिल्ली), एनफोल्ड प्रोएक्टिव हेल्थ ट्रस्ट (कर्नाटक), HAQः सेंटर फॉर चाइल्ड राइट्स (दिल्ली), हिडन पॉकेट्स कलेक्टिव (कर्नाटक), लहर (दिल्ली, बिहार), महिला जन अधिकार समिति (MJAS) (राजस्थान), महिला सर्वांगीण उत्कर्ष मंडल (MASUM) (महाराष्ट्र), निरंतर ट्रस्ट (दिल्ली), न्यू अलीपुर प्राजक डेवलपमेंट सोसाइटी (पश्चिम बंगाल), सहियार स्त्री संगठन (गुजरात), Sama रिसोर्स ग्रुप फॉर वीमेन एंड हेल्थ (दिल्ली), शक्ति शालिनी (दिल्ली), श्रुति डिसेबिलिटी राइट्स सेण्टर (पश्चिम बंगाल), वाईपी फाउंडेशन (दिल्ली), विशाखा (राजस्थान), एडवोकेट महरुख अदनवाला (व्यक्तिगत) (मुंबई)

PLD

www.pldindia.org

लेखन एवं प्रकाशनः पार्टनर्स फॉर लॉ इन डेवलपमेंट (पीएलडी)
कॉपी संपादनः चंद्रिका
कवर और चित्रः अनुप्रिया
पृष्ठ सज्जा एवं मुद्रणः दृष्टि प्रिंटर्स, नई दिल्ली
वित्तीय सहयोगः UNFPA, INDIA (निबंध प्रतियोगिता परियोजना हेतु परामर्श)
FORD FOUNDATION, INDIA (पुस्तिका प्रकाशन)

ISBN: 978-93-84599-11-9

3-डी सपने

लड़कियों की ज़ुबानी

आपके सपनों को सलाम!

विषय-सूची

NCAAC की ओर से कुछ शब्द और आभार 5

आइए सपना देखें! – पूर्वा भारद्वाज 7

जूनियर वर्ग के निबंधः

1.	सैर, फ़ैशन और उर्दू	अनम	15
2.	जीवन को दिलचस्प बनाना है	शाहिदा बानो	17
3.	निर्दोष के लिए न्याय की तलाश	रुकय्या बानो	19
4.	तन, मन, धन से लोगों की सेवा	चुन्नेश्वरी राना	21
5.	दूसरों के बारे में सोचना है	नैन्सी कुमारी	23
6.	सरकारी चिकित्सालय में काम	केसर मेघवाल	25
7.	लड़की बहुत कुछ कर सकती है	सरिता पांडेय	27
8.	*PDCA* (प्लान, डू, चेक, एक्ट) चक्र	वंशिका साहू	29
9.	रोमांच, इच्छा और मेहनत	अंजली कुमारी	31
10	सपना ही खेवनहार है	मोनिका कुमारी रेगर	33
11.	3D Printing	Shomya Prajapati	37
12.	हॉकी टीचर	मंतशा परवीन	39

13.	वर्ल्ड टूर की चाह	मनीषा राम	42
14.	फ्लोरेन्स नाइटिंगेल	ज्योत्सना	44
15.	कला की दुनिया में	निक्की कुमारी	46
16.	आर्टिस्ट बनना है	हेमा दानू	49
17.	बिहार पुलिस	आशिया परवीन	52
18.	पत्रकार बनने से मुझे कोई नहीं रोक सकता	लक्ष्मी कुमारी	53
19.	मम्मी–पापा धूप में मज़दूरी न करें	सीमा नाथ	55
20.	सरकार से हमें नौकरी मिलनी चाहिए	चाँद धोबी	57

सीनियर वर्ग के निबंध:

1.	मैं एक फुटबॉल की तरह हो गई हूँ	शुभांगणी सूर्यवंशी	61
2.	शोषण शब्द छोटा है, मगर उसका असर बहुत अधिक है	शिवांगी	66
3.	दिल्ली आकर सपने देखने की शुरुआत	अमिता	69
4.	2001 से 2022 – वही संघर्ष, वही झगड़े	सृष्टि	71
5.	हार के आगे जीत है	मुस्कान कुमारी	75
6.	समष्टि के लिए व्यष्टि	विजयलक्ष्मी	78
7.	आज़ादी से रहना पसन्द है	यशोदा गुर्जर	81
8.	चमत्कार की संभावना	गमिता कोला	83
9.	सपने मेरी जान हैं	सुमित्रा	85

10.	सपने तो हज़ार हैं, करने को भी तैयार हैं	शालू	87
11.	पंख देकर देख लो	सहर फातिमा	90
12.	भरो बाज की उड़ान	महिमा कुमारी	93
13.	अंतरिक्षयात्री	पूजा	95
14.	वाइल्ड लाइफ़ फ़ोटोग्राफ़र	ध्वनि डी घेलणी	98
15.	लेखन अब जीवन का एक तरीका बन गया है	जनक कुमारी	100
16.	मेकअप आर्टिस्ट	नेहा	102
17.	कंप्यूटर इंजीनियर की राह पर	मंजू नैणावा	105
18.	आदर्श शिक्षिका	बारीआ संजलबेन	107
19.	जीवन में सफलता	मनीषा कुमारी	109
20.	दरवाज़े के अन्दर से बाहर की ओर	अंशिका	113

सलंग्नः लेखकों के बारे में जानकारी 116

NCAAC की ओर से कुछ शब्द और आभार

लड़कियाँ अपनी ज़िन्दगी में क्या हासिल करना चाहती हैं? उनकी अपने लिए क्या आकांक्षाएँ हैं? परिवार और सामाजिक भूमिकाओं से हट कर, उनके अपने लिए क्या सपने हैं? ग्रामीण और शहरी–गरीब क्षेत्रों की लड़कियों के लिए यह प्रश्न और भी अहम हैं। खासकर तब जब उनमें से अधिकतर हाशिये पर रहने वाले समुदायों की लड़कियाँ हैं। इन सवालों को लेकर NCAAC ने 15 से 25 वर्ष की ऐसी ही लड़कियों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। हमारी इच्छा थी कि यह प्रतियोगिता अनेक भाषाओँ में हो, पर अफसोस कि अपनी टीम की वर्तमान भाषिक क्षमताओं की सीमा के कारण हमने इसे हिंदी में ही रखा।

इस प्रतियोगिता की घोषणा करने के एक महीने बाद – मई से जून 2022 तक – क़रीब 480 निबंध हमें मिले। विषय थाः मेरा सपना या मैं जीवन में क्या चाहती हूँ। लड़कियों को निबंध, अपने परिवार या समाज या सरकार को नज़र में रखते हुए लिखने के लिए कहा गया था। यह जानने के लिए कि लड़कियों को पितृसत्तात्मक समाज के ढाँचे के अलग–अलग हिस्सों से क्या उम्मीद है, और किससे सबसे ज़्यादा उम्मीद है।

कुल 12 राज्यों से इतनी लड़कियों को इतने कम समय में निबंध लिखने के लिए प्रोहत्साहित करना आसान नहीं था। NCAAC के सदस्यों और उसके अलावा अनेक ज़मीनी स्तर पर काम करने वाली संस्थाओं ने अपने किशोरी और युवा मंचों तक इस निबंध प्रतियोगिता के आयोजन की बात पहुँचाई। कुछ ने छोटे शहरों में लड़कियों के कॉलेज में जा–जाकर बताया, कुछ ने

युवतियों की कार्यशाला में निबंध लिखने के लिए समय दिया। उसके बाद इन 480 निबंधों को समेटना, परख़ना और चिह्नित करने का काम बहुत पेचीदा रहा, जिसको अनेक साथियों ने धीरज और उत्साह से निभाया।

लड़कियों और संस्थाओं द्वारा क़रीब 480 निबंध हमें पत्र, ईमेल, गूगल डॉक्, और व्हाट्सएप्प (WhatsApp) द्वारा पहुँचाए गए। इन सारे निबंधों को श्रेणीबद्ध करने के लिए – कनिका, एकता, बरखा, दर्शना, और मेधा को आभार। निबंध प्रतियोगिता में चयन प्रक्रिया के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी पूर्वा भारद्वाज ने जोश और विश्वास से निभाई। और अंतिम चयन प्रक्रिया के लिए हम अपने निर्णायक मंडल (जूरी) के चार सदस्यों के आभारी हैं – अनीता भारती, ग़ज़ाला जमील, कविता बुंदेलखंडी और कबीर मान – उन्होंने अपना कीमती समय दिया और तहे दिल से पूरी प्रक्रिया को अंजाम दिया । वे सब इस पर एकमत थीं/थे कि लेखों में विजेताओं का चयन किसी एक बिंदु के आधार पर नहीं, बल्कि अनेक बिंदुओं पर होना चाहिए। जैसे – कल्पना की उड़ान, भाषा की रोचकता, लड़कियों का क्षेत्रीय, सामाजिक, और आर्थिक सन्दर्भ और नारीवादी मुद्दों की समझ।

इस पुस्तिका में कुल 40 निबंधों को पहला और दूसरा पुरस्कार मिला है – एक सीनियर और एक जूनियर श्रेणी में। यह पुस्तिका लड़कियों के सपनों को आपसे साझा करने के लिए बनाई गई है। उनकी दमदार आवाज़, उड़ान भरने की इच्छाएँ, और बदलाव की उम्मीदें, हम सबको तसल्ली देती हैं। उनके निबंधों को पढ़कर यही लगता है कि दुनिया को सपनों और सपने देखनेवालों ने ही बचा रखा है।

सारे निबंधों को प्रकाशित करना संभव न था, इसलिए हम चुनिंदा निबंधों को लेकर आपके सामने आए हैं। उनके सपने कई महत्त्वपूर्ण सवाल उठाते हैं। ज़रूरत है कि उनके आधार पर हम सरकारी नीतियों और कानून को टटोलें – सवाल पूछें और सुझाव दें। उदाहरण के तौर पर लड़की की शादी की न्यूनतम उम्र को 18 से 21 करने पर, क्या इन से लड़कियों के लिए अच्छी तालीम, नौकरी के अवसर, संसाधन और सुरक्षित माहौल तैयार हो पाएगा जिससे वे अपना सपना हासिल कर सकें? क्या 21 की उम्र तक लड़कियों को बच्ची घोषित करने के बाद उनकी आवाज़ परिवार, समाज और सरकार के सामने मज़बूत होगी या कमज़ोर पड़ जाएगी? हमें उम्मीद है कि ये निबंध हम सबको ऐसे सवालों पर मंथन करने के लिए मजबूर करेंगे।

– **मधु मेहरा** (PLD, Convenor, NCAAC) और **मनीषा गुप्ते** (MASUM)

आइए सपना देखें!

– पूर्वा भारद्वाज[1]

आइए सपना देखें! सपना न कहिए, सपनों की रेल कहिए। एक 18 साल की लड़की (अनम) के 'सुहाने सपने' को देखिए –

बचपन में उसे पुलिस वाली बनना था, फिर पापा के चाहने पर डॉक्टर बनना था। पढ़ाई करनी है, जॉब करना है जॉब के पैसों से आगे पढ़ाई करनी है। शादी के बाद भी पढ़ाई को जारी रखना है। पूरे परिवार के साथ फ्लाइट में बैठना है, सऊदी अरब घूमना है। समुद्री इलाके में रहना है, पहाड़ी इलाकों में घूमना है। मेकअप आर्टिस्ट बनना है। सिलाई पसंद है तो फैशन डिजाइनर बनना है। डॉक्टर नहीं बन पाने की हालत में उर्दू टीचर बनना है क्योंकि उर्दू लिखना–पढ़ना पसंद है। 'एन्ज्यो लाइन' (इंटरटेनमेंट इंडस्ट्री) में जुड़ना है। उस जॉब के पैसे से मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लेना है।

और अंत में वह Paris & London जाने के सपने पूरा करने पर जाकर साँस लेती है।

और सपनों की इस रेल से हमारी भिड़ंत हुई नेशनल कोएलिशन एडवोकेटिंग फ़ॉर एडोलेसेंट कंसर्न्स – NCAAC – द्वारा आयोजित ''मेरा सपना' निबंध प्रतियोगिता (मई, 2022)' के दौरान। जैसी कि आशा थी बड़ी तादाद में किशोरियों–युवतियों ने अपने लेख भेजे। कुल 12 राज्यों –

[1] निबंध प्रतियोगिता में चयन प्रक्रिया के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी पूर्वा भारद्वाज ने निभाई।

राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, गुजरात, पंजाब, हरियाणा से तकरीबन 480 लेख हमें मिले। समय सीमा न होती तो और मिलते!

लड़कियों के इन सपनों में लक्ष्य, महत्त्वाकांक्षा, आकांक्षा, इच्छा – ये सारे शब्द घुले–मिले हैं और जगह–जगह पर उनमें बारीक फ़र्क भी किया गया है। इसलिए सपनों का क्रम सब जगह एक जैसा नहीं है, न ही उनकी संख्या निश्चित है। किसी लड़की ने बचपन से एक सपना पाला तो युवावस्था तक उसी को पूरा करने में जुटी है तो कइयों के सपनों ने अपना रास्ता बदला और अपनी शक्ल भी बदली। यह भी लड़कियों को (जनक कुमारी को) मालूम है कि अलग–अलग दायरे और भूमिका में सपने अलग होते हैं। जैसे छात्र पढ़ाई में बेहतर करके आगे बढ़ने का सपना देखते हैं तो परिवार में अच्छे दोस्त बनाने का सपना देखते हैं।

प्रायः लड़कियों में अपने सपनों को लेकर काफ़ी स्पष्टता है और उनको दिशा भी पता है। यदि किसी को (जनक कुमारी) लेखक बनना है तो उसके सामने स्पष्ट है कि विधा क्या होगी। उसे उपन्यास लिखना है, प्रकाशित कराना है। तभी प्रसिद्ध लेखक बनने का सपना पूरा होगा। इसी तरह मेकअप आर्टिस्ट को नेल या आईलैश एक्सटेंशन से लेकर पार्लर की बुनियादी सुविधाओं के बारे में मालूम है। कंप्यूटर इंजीनियर को अपनी शाखाओं – सॉफ्टवेयर–हार्डवेयर का पूरा ज्ञान है।

इसका यह कतई मतलब नहीं है कि सारी लड़कियों के सपनों की डोर उनके हाथ में है और उनका रास्ता सीधा और बाधारहित है। अपने निजी जीवन की रुकावटों से लेकर समुदाय, क्षेत्र और राज्य द्वारा खड़ी की गई रुकावटों का उन्हें तीखा अहसास है। लड़की होने के नाते, ग्रामीण क्षेत्र की होने के नाते, गरीब होने के नाते, पिता की गैरमौजूदगी के कारण, घरवालों की बीमारी और असमर्थता के कारण, कायदे का रोज़गार न होने के कारण, सरकार की अनदेखी आदि के कारण जो कठिनाइयाँ हैं,

वे उनकी आँखों के सामने हैं। परिवार की बनावट और उसके नियंत्रण के कारण उनका दम घुटता है, कई बार उन्हें कदम पीछे खींचना पड़ता है। एक लड़की (शुभांगनी) कहती है कि "मैं एक फुटबॉल की तरह हो गई हूँ।"

तब भी लड़कियों के स्वर में कड़वाहट नहीं है, न ही हताशा है। गरीबी के चक्र से उन्हें बाहर आना है, लेकिन उनके लेख "गरीबी अभिशाप है" जैसे जुमलों से खाली हैं। वे किस्मत की बात भी नहीं करतीं। वे न घरवालों को कोसती हैं, न मौकों की कमी की शिकायत करती हैं और न ही संसाधनों की कमी की दुहाई देती हैं। यह यथास्थितिवाद नहीं है। क्रांतिकारी जज़्बे की कमी नहीं है। हमारी नज़र में यह जीवन से अदम्य आशा को दिखलाता है। बदलाव

की उम्मीद के साथ लड़कियाँ कदम बढ़ा रही हैं। वे बाहर निकलना चाहती हैं – पारिवारिक रिश्तों से और शादी के बंधन से भी।

वे सपने देखती हैं। एक लड़की (गमिता) को सपनों में "चमत्कार की संभावना" दिखती है। क्यों न हो? सपना उनके जीवन में रस, रंग और स्वाद लाता है। एक लड़की (अंजलि) कहती है कि जैसे चाय में पत्ती के बिना स्वाद नहीं, वैसे ही सपने के बिना जीवन बेकार है। एक (मोनिका) का कहना है –

> *"बिना सपने के हम उस नौका के समान हैं जिसका कोई खेवनहार नहीं है। मेरी नौका भँवर में डूब सकती है और कहीं चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो सकती है। सपना बनाने से जीवन में रस आता है।*

वाकई सपना ज्ञानेन्द्रियों का हासिल है। एक लड़की (मनीषा) सीधे कहती है कि वह सपने देखती है क्योंकि उसे "सपने देखने की आदत है।" इतनी सहजता भला आती कहाँ से है? शायद अपने जीवन में किसी और चीज़ पर तो उसका अख़्तियार नहीं है, पर कम से कम सपने देखने पर अपना अख़्तियार है।

हम सबका जीवन विविधताओं से भरा है। ज़ाहिर है कि ''मेरा सपना' निबंध प्रतियोगिता' में भाग लेने वाली लड़कियों का जीवन भी एक–सा नहीं है। उनमें जगह, भाषा, शैक्षिक स्तर, जाति–धर्म, उम्र आदि का काफी अंतर है। लिहाज़ा उनके अनुभव अलग–अलग हैं। तब भी लड़की होने की सच्चाई बहुत बार उनको चक्की में एक तरह से पीस देती है। जीवन में बोझिलपन, नीरसता, एकरसता का अहसास हावी होने लगता है। उससे निपटने में काम आता है सपना और उस सपने को साकार करने की ज़िद । तभी तो उन्हें (सुमित्रा) "सपनों में जीना पसंद है।"

एक लड़की (शाहिदा) को अपना जीवन दिलचस्प बनाना है और उसे मालूम है कि यह इच्छा उसकी अकेले की नहीं है। वह लिखती है –

> *"मैं अपने जीवन में बहुत कुछ करना चाहती हूँ, मैं ही क्या हर लड़की ऐसा चाहती है। लेकिन मैं हर लड़की की तरह आम जिंदगी, जैसे बचपन में काम सीखो – झाड़ू–पोंछा, बरतन (करो)। उम्र 18 (हो तो) शादी घर सँभालो और बस इसी में जिंदगी खतम। मुझे तो अपनी अलग ही दुनिया सजानी है।"*

ज़िंदगी के घर्षण और रुखड़ेपन को झेलने की ताकत देता है सपना। यही वजह है कि कई

लड़कियों ने अपने लेख में लिखा है कि उन्हें नींद भरी आँखों से नहीं, जागी हुई आँखों से सपने देखना पसंद है। वे (ध्वनि) इतना ज़रूर चाहती हैं कि

> *"कोई ... अगर मेरे सपनों को सराहे नहीं तो चलेगा, पर उन्हें तोड़ने की कोशिश हरगिज़ न करे, क्योंकि सपने बहुत कीमती होते हैं, उसे तोड़ने से सामने वाला इंसान टूट के बिखर जाता है।"*

इसलिए लड़कियों (संजू बडोला) को मालूम है कि सपने टूट गए तो उन्हें जोड़ना भी उनका काम है। उसके लिए मुमकिन है कि एक समय पर अपने सपनों को स्थगित करना पड़े और फिर जब माकूल माहौल मिले तो वापस सपनों को पूरा करने में जी जान से जुट जाएँ। उसके लिए वे सरकार से माँग भी करती हैं। दयनीय या कृपा भाव से नहीं, अधिकार भाव से। इस क्रम में वे सरकार के कार्यक्रमों, सरकार की कार्यप्रणालियों और नीतियों पर तटस्थ भाव से टिप्पणी करती हैं।

लगभग सारी लड़कियाँ परिवार के सहयोग की उम्मीद रखती हैं। बहुतों को सहयोग मिल भी रहा है और कइयों ने जूझकर उसे हासिल किया है। वे परिवार की सीमाओं को भी जानती हैं और उन सीमाओं को तोड़ते हुए परिवार के साथ ही आगे बढ़ना चाहती हैं, चाहे परिवार कैसा भी हो। आख़िर, परिवार का विकल्प उनके सामने नहीं है। पितृसत्तात्मक परिवार की जकड़न की एक–एक गिरह को वे अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने तरीके से और अपनी शर्तों पर खोलना चाहती हैं।

लड़कियों के "सपने ठोस हैं, मिट्टी के बने हुए नहीं हैं।" उनके सपनों के पीछे हकीकत छुपती नहीं है। किसी की माँ–दीदी और नानी प्रेस का काम कर रही हैं या किसी के माँ–पिता धूप में मजदूरी कर रहे हैं या किसी की माँ को अपमानित होकर ससुराल में रहना पड़ रहा है – इन सबको लड़कियाँ दर्ज करती हैं। वे यह देखती हैं कि उनके घरों में हिंसा हो रही है। उस वक्त बहुत बार ससुराल ही नहीं, मायके से भी उनकी माँओं को सहयोग नहीं मिलता है। वे खुद भी हिंसा झेलती हैं। हिंसा के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़नेवाले असर को समझती हैं। और इन सबसे उबरने–निकलने का रास्ता दिखाता है उनका सपना। वह बाहरी और भीतरी जंजीरों को तोड़ने का हौसला देता है। एक जिस लड़की (मंतशा) को हॉकी टीचर बनना है, उसके शब्द हैं –

> *"मैं लड़कियों को उन जंजीरों से निकालना चाहती हूँ जो उनकी इच्छा को दबाती है।"*

यहाँ यह भी कहना ज़रूरी है कि लड़कियों के सपनों की बुनियाद में केवल निजी जीवन के

अनुभव नहीं हैं। एक लड़की (मुस्कान) को पड़ोसी परिवार की कर्ज़ चुकता न कर पाने के कारण सामूहिक आत्महत्या बुरी तरह विचलित करती है। उसे लगता है कि "यदि ये शिक्षित होते तो सूझ–बूझ से काम लेते। तो ये घबड़ा कर अपने पूरे परिवार के साथ आत्महत्या नहीं करते।" इसलिए उसके सपनों के सबसे ऊँचे पायदान पर है शिक्षा हासिल करना ताकि समाज की गड़बड़ियों को ठीक किया जा सके।

शिक्षा की माँग, शिक्षा का महत्त्व, शिक्षा से उम्मीदें अथाह हैं। हमें लड़कियों के लेखों में सबसे अधिक इत्मीनान दिलानेवाली बात यह लगी कि ढेर सारी लड़कियों को शिक्षक बनना है। शिक्षक के पास भविष्य की कुंजी है, यह छोटे शहरों–कस्बों की और प्रायः सरकारी स्कूल–कॉलेजों में पढ़नेवाली इन सभी लड़कियों का मानना है। एक तरफ जहाँ शिक्षा के निजीकरण ने शिक्षा को महँगा, पहुँच से दूर और संस्थानों को चमक–दमक भरा बना दिया है, वहीं दूसरी तरफ सादे से सरकारी स्कूल–कॉलेज में अभी भी कितनी ताकत है, इसकी कल्पना की जा सकती है! शिक्षक, खासकर सरकारी शिक्षक की सामाजिक छवि को धूमिल करने का जो प्रयास हमें चारों तरफ दिखाई देता है, उनके बीच इन लड़कियों के मन में शिक्षक बनने की चाह जगमगा रही है।

निबंध प्रतियोगिता में शामिल लड़कियों के लेखों में पितृसत्ता या जेंडर, जाति–धर्म के सामाजिक नियम–कायदों की शब्दावली भले नहीं है, मगर रोज़मर्रा के अपने अनुभवों के आधार पर वे सामाजिक ढाँचों का पर्याप्त विश्लेषण करती हैं। उनकी परिपक्वता देखिए (शिवांगी) दृ

> *"शोषण एक ऐसा शब्द है जो छोटा तो बहुत है, पर इसका शोषित व्यक्ति पर बुरा असर पड़ता है ... इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है। व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार हो सकता है ... व्यक्ति कभी कभी डिप्रेशन की वजह से आत्महत्या भी कर लेता है। शोषण से व्यक्ति की सोचने–समझने की क्षमता खत्म हो जाती है जिससे व्यक्ति सही फैसला नहीं कर पाता और एक गलत फैसला व्यक्ति का जीवन बर्बाद कर देता है।"*

शोषण की वजह और उसके चक्र पर बात करके शोषण खत्म करने के लिए क्ड बनने का सपना कितना तार्किक और सुचिन्तित है! है न? इससे यह पता चलता है कि लड़कियों को सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक ही नहीं प्रशासनिक ढाँचों का पता है। प्ै, प्ै, पुलिस अफ़सर, आर्मी अफ़सर और जज बनने की उनकी ख्वाहिशों में सत्ता की समझ झलकती है। अहम बात यह है कि लड़कियों के सपनों में इन पदों पर पहुँचने को निजी लाभ उठाने अथवा पैसे कमाने के रूप में कहीं नहीं देखा गया है। पैसे की अहमियत पता होते हुए भी वह किसी की प्राथमिकता नहीं है।

लड़कियाँ ताकतवर बनने की राह चुनती हैं, मगर वह केवल पद से नहीं है। भूमिका महत्त्वपूर्ण है और उस माध्यम से परिवर्तन लाना महत्त्वपूर्ण है। वे परिवार की खुशहाली लाने से लेकर "सामाजिक कुरीतियों, भ्रष्टाचार आदि" को दूर करके देश सेवा करना चाहती हैं। लड़कियों को दूसरों के बारे में सोचना है, गरीबों का मुफ़्त और सही इलाज करना है, मरीज़ की प्रेम से देखभाल करनी है। न्याय दिलवाना है, सच्ची खबर पहुँचाना है, बुराइयों के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद करना है। इसके लिए जो रास्ता वो चुनती हैं उसमें खूब मेहनत लगेगी, समय लगेगा, अड़चनें आएँगी, असफलता का भी सामना करना पड़ सकता है – इससे वे अनजान नहीं हैं।

इन सबके बीच मस्ती और बेफिक्री की कमी नहीं है। उसे हम सिर्फ वाइल्ड लाइफ फ़ोटोग्राफ़र, मेकअप आर्टिस्ट, अंतरिक्षयात्री बनने या वर्ल्ड टूर करने के सपनों में ही नहीं पाते हैं, बल्कि नर्स बनने या टीचर बनने में भी पाते हैं।

लड़कियाँ सजग हैं, भाषा की सत्ता को लेकर भी। किसी की बेचैनी है कि इंग्लिश बोलना कैसे सीखें तो कई लड़कियाँ गैर–हिन्दी भाषी (जैसे गुजराती, उड़िया भाषी) होते हुए भी अपने सपनों के बारे में हिन्दी में बखान करती है। एक (सौम्या) ने लगभग तीन पन्नों में अंग्रेज़ी में अपना मन खोल कर रख दिया है। 3क्डी प्रिंटिंग के अपने सपने के बारे में लिखते समय वह लड़की सीखने की पूरी प्रक्रिया के साथ अपने बारे में धाराप्रवाह बताती चली जाती है। हमें भी अपने साथ लिए लिए!

इन सारे लेखों की ज़बर्दस्त खूबी यह है कि जो भाषागत त्रुटियाँ हैं (वाक्य–विन्यास में चुस्ती की कमी से लेकर वर्तनी को लेकर सतर्कता की कमी तक) उनकी तरफ एक बार भी ध्यान नहीं जाता है। असल है उनकी मौलिकता, उनकी सोच और बात कहने की बेचैनी।

सबको बधाई!

जूनियर वर्ग

15-18 वर्षीय लड़कियों के लेख

सैर, फ़ैशन और उर्दू

मैं जब छोटी थी, तो पुलिस वाले को देखकर बहुत खुश होती थी। और सोचती थी कि मैं बड़ी होकर पुलिस वाली बनूँ! और लोगों की हेल्प करूँ। लेकिन मेरे पापा चाहते हैं कि मैं डॉक्टर बनूँ। तबियत खराब होने की वजह से मेरी पढ़ाई छूट गई थी। अपने सपने पूरे करने के लिए मैंने अपनी पढ़ाई दुबारा शुरू की है। अब 12वीं के बाद मैं कॉलेज में भी पढ़ना चाहती हूँ।

पढ़ाई के साथ–साथ मैं जॉब भी करना चाहती हूँ। जॉब के कमाए पैसों से मैं अपनी पढ़ाई का खर्चा और अपनी ज़रूरतें भी पूरी कर सकती हूँ।

मैं शादी के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती हूँ और चाहती हूँ कि मेरे ससुराल वाले मेरा सपोर्ट करें।

मेरा बचपन से यह सपना था कि मैं अपने पूरे परिवार के साथ फ्लाइट में बैठूँ और सऊदी अरब घूमूँ। मेरा बचपन से बहुत मन करता है कि मैं समुद्री इलाके में रहूँ और पहाड़ी इलाके में भी घूमूँ। मुझे वहाँ की ठंडी हवा लेने का बहुत मन है। मेरा बचपन से ही शौक है कि मैं मेकअप आर्टिस्ट बनूँ।

मुझे सिलाई करना भी बहुत पसंद है और मैं चाहती हूँ कि मेरा फैशन डिज़ाइनर बनने का सपना भी जल्द पूरा हो।

मैं डॉक्टर नहीं बन पाई तो मेरा एक और सपना है। मुझे उूर्द पढ़ना और लिखना बहुत पसंद है। और मैं चाहती हूँ कि मैं उर्दू की टीचर बनूँ। इससे मैं अपने घर की परेशानी को दूर कर सकती हूँ। मैं चाहती हूँ कि मेरे सपनों को पूरा करने के लिए मेरा परिवार मेरा सपोर्ट करे। मेरा परिवार मेरे भाईयों को सपोर्ट करता है, मुझे भी उतना सपोर्ट करे। मैं अपनी ज़िंदगी और अपने शौक खुद पूरे करना चाहती हूँ। मेरे सपने और भी हैं। एक सोच यह भी है कि मैं एनजीओ (छळव) लाइन में जुड़ना चाहती हूँ। इस जॉब से कमाए पैसों में से, मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लेना चाहती हूँ।

इस सपने को पूरा करने में जी जान लगा देना चाहती हूँ। मेरे पापा की कमाई से घर का खर्चा पूरा नहीं हो पाता, मैं अपने पापा की हेल्प करना चाहती हूँ। चाहती हूँ कि मेरे पापा जितनी मेहनत करते हैं मैं भी उतनी मेहनत से पढ़ाई करूँ और आगे बढ़ूँ ताकि मेरे सपने साकार हों। इससे मेरे भविष्य का रास्ता साफ़ होगा और उज्ज्वल होगा।

मैं अच्छी–अच्छी जगह घूमने जाना चाहती हूँ जैसे कि पेरिस–लंदन। ऐसा मेरा सपना है कि मैं एक बार यहाँ घूमूँ। पहले मैं पढ़–लिख के इस क़ाबिल बन जाऊँ कि अपने मम्मी–पापा का नाम रोशन करूँ। दिल्ली से बहार निकलूँ और अपना लंदन–पेरिस जाने का सपना पूरा करूँ। मैं चाहती हूँ, मेरे साथ–साथ मेरे मम्मी–पापा भी हों।

सपने मेरे एक नहीं, मेरे सपने अनेक हैं।
इनको पूरा करने के मेरे इरादे नेक हैं।
मेहनत करूँगी।
एक दिन बात नहीं मानूँगी किसी की।
चलूँगी मैं अकेली।
साथ चलेगा मेरा परिवार, और सरकार।

– अनम, 18, नई दिल्ली

जीवन को दिलचस्प बनाना है

मेरा नाम शाहिदा बानो है। मैं कक्षा 8 में पढ़ती हूँ। मेरी मम्मी का नाम हसीना बेगम है। मेरे पापा का नाम शरीफ़ मोहम्मद है। मैं खुद को एक बहादुर लड़की मानती हूँ। मुझे लगता था कि सपनों को पूरा करना कोई मुश्किल काम नहीं है लेकिन 'टेक सेंटर, महिला जन अधिकार समिति' से जुड़ी तब मुझे सपनों को पूरा करते समय आने वाली कठिनाईयों का पता चला और उन्हें अब मैं ख़त्म करना चाहती हूँ।

मैं बचपन से ही एक बैंक मैनेजर की नौकरी का सपना देखती थी। मैं गणित विषय में कमज़ोर होने के कारण बार–बार अपना सपना बदलने की कोशिश करती रही लेकिन फिर भी इस सपने को पूरा करने की मेरी आशा ख़त्म नहीं हुई। मैं अपने सपने को लेकर परेशान रहने लगी, फिर महिला जन अधिकार समिति से जुड़ी, यहाँ पर कंप्यूटर सिखाने के साथ–साथ ऐसे क्रियाकलाप कराए जाते थे, जिनसे हम लड़कियों को – "मैं कौन हूँ?" " मेरी इच्छाएं क्या हैं?" " मेरे सपने क्या हैं?", आदि, के बारे में खुद पर विचार करने की समझ मिलती है। जिसके माध्यम से मुझे धीरे–धीरे समझ आने लगा है कि मुझे आगे चलकर करना क्या है। मेरे और भी बहुत से पुराने सपने हैं जिन्हें मैंने इस वजह से छोड़ दिया था कि मैं एक लड़की हूँ। मुझे बहुत दूर–दूर परीक्षा देने या किसी फंक्शन या प्रोग्राम में जाना पड़ता। क्योंकि जब मेरी बड़ी बहन का परीक्षा का सेंटर टोंक होने के कारण वहाँ नहीं जाने दिया गया। तब मैंने यह सोचना छोड़ दिया कि मैं भी कहीं जा पाऊँगी। लेकिन अब मैं अपने इस सपने पर वापस विचार करती हूँ और ये सोचती हूँ कि बस अब अपने घरवालों और परिवार वालों को यह

बात बता दूँ कि मुझे परीक्षा के लिए दूर–दूर जाने की इजाज़त दे दें। एक दिन मैं ज़रूर ये सब कर दिखाऊँगी। इन्शाअल्लाह!

मैं अपने जीवन में बहुत कुछ करना चाहती हूँ। मैं ही क्या हर लड़की ऐसा चाहती है। लेकिन मैं हर लड़की की तरह आम ज़िंदगी नहीं जीना चाहती। जैसे बचपन में काम सीखो, झाड़ू, पोछा, बर्तन ही करो। 18 साल की उमर में शादी कर घर संभालो और बस इसी में ज़िंदगी ख़त्म। मुझे तो अपनी अलग ही दुनिया सजानी है। जैसे अच्छे–अच्छे काम करके अवार्ड जीतकर मम्मी–पापा का नाम रोशन करना है। बड़े होकर देश के लिए कुछ करना है। मैं अपनी ज़िंदगी को इंटरेस्टिंग बनाना चाहती हूँ, जिसे जीने मेंमज़ा आए। पर मुझे ये भी पता है कि यह कोई आसान काम नहीं है। लेकिन हाँ, अगर इसे मैं इसी जोश के साथ पूरा करूँ तो हो सकता है कि मैं इसे एक दिन हक़ीक़त में बदल दूँ। जीवन में मैं वैसे तो बहुत कुछ सकती हूँ लेकिन एक छोटी सी इच्छा जो अपने सपने को पूरा करते हुए मैं चाहती हूँ वह यह है कि, मैं जो भी बड़ा काम करूँ, उसमें मुझे बस अपने मम्मी–पापा का साथ चाहिए। उनका सपोर्ट हो तो मैं और ज़्यादा अच्छे से यह सब कर पाऊँगी। क्योंकि मुझे फ़र्क नहीं पड़ता कि समाज, रिश्तेदार, पड़ोसी... आदि मुझे क्या समझते हैं। लेकिन मुझे इस बात से ज़रूर फ़र्क पड़ेगा कि मेरे मम्मी–पापा मुझे क्या सोचते हैं। मैं ये कभी भी नहीं चाहूँगी कि मेरे मम्मी–पापा मुझे गलत समझें और न मैं कभी ऐसा होने दूँगी। मुझे खुद पर विश्वास है।

अपने इन सपनों को पूरा करने के लिए मैं अपने परिवार से यही चाहती हूँ कि वे मुझे पूरा सपोर्ट करें। किसी चीज़ का मुझ पर कोई दबाव न डालें। लड़की होने के कारण मुझ पर ज़्यादा रोक–टोक न करें। मुझे मेरे सपने पूरे करने के लिए मेरी उत्सुकता को और बढ़ाएँ, न कि समाज को देखते हुए कहें कि समाज क्या कहेगा और इस वजह से मेरे सपनों की क़ब्र खोद दें। मैं अपने सपनों को नहीं छोड़ सकती। मैं तो बहुत कोशिश करती हूँ और आगे भी करूँगी। परिवार वालों का सपोर्ट होगा तो बहुत उम्मीद के साथ मेरा सपना पूरा होगा। मेरी तो इच्छा ही यही है कि बस परिवार वालों का सपोर्ट मिल जाए। ये लोग मेरे साथ हर हाल में खड़े रहें। मेरी हर छोटी से छोटी चीज़ में मदद करें। पर हाँ, अगर मैं गलत रहूँ तो मुझे समझाएँ न कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दें। भले ही मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हूँ पर मैं चाहती हूँ कि मेरे परिवार वाले मुझे सही राह दिखाएँ। वैसे तो मैं पूरी कोशिश करूँगी कि मैं सही तरीके से अपने सपने को पूरा करूँ लेकिन फिर भी अगर कोई भी लालच देकर मुझे मेरी राह से भटकाए तो आप लोग यानि मेरे परिवार वाले मुझे हमेशा सही राह पर चलाना।

– शाहिदा बानो, 15, राजस्थान

निर्दोष के लिए न्याय की तलाश

मेरे माता–पिता मुझे न्यायधीश बनाना चाहते थे। बचपन से ही उन्होंने मुझे इसके बारे में बताया। बचपन से ही मेरे माता–पिता मेरी पढ़ाई पर ध्यान दे रहे थे, जिसके कारण मुझे बचपन से ही पढ़ने में बहुत रूचि हो गयी थी। मैं अपने दोस्तों को हमेशा यह बात बताती थी कि मैं बड़ी होकर एक अच्छी न्यायधीश बनूँगी और सच्चा न्याय करूँगी। कभी किसी पर अन्याय नहीं होने दूँगी। ईमानदार लोगों का हमेशा साथ दूँगी। बेईमान और बुरे लोगों को हमेशा सज़ा दिलवाने में मदद करूँगी।

एक जज बनकर मैं अपने सपनों को पूरा तो करूँगी ही साथ ही मैं उन लोगों के साथ ज़रूर न्याय करूँगी जो निर्दोष हैं। दरअसल, हमारे रिलेशन में एक अंकल जी थे जो न्यायधीश थे। जब भी मैं उन्हें देखती थी काफ़ी इम्प्रेस होती थी। उनके कार्य से भी काफ़ी प्रभावित होती थी। मैं हमेशा सोचती थी कि काश मैं इनकी तरह एक न्यायधीश होती लेकिन फिर मैं सोचती थी कि अभी तो मैं बच्ची हूँ। मैं यह सोचती थी कि अभी तो मेरे पास एक मौका है, मैं मेहनत करूँ तो एक न्यायधीश ज़रूर बन सकती हूँ।

मेरे पिता जी हमेशा कहा करते थे कि बेटी, सफल होने के लिए सबसे आवश्यक बात ये है कि तुम्हारे अंदर उस काम को या अपने सपनों को लेकर व्याकुलता होनी चाहिए। तुम्हें अपने मंज़िल को पाने के लिए सदैव संघर्ष के लिए तत्पर रहना बहुत आवश्यक है। मेरे पिता जी की कही गयी हर एक बात और हमारे घर की दैनीय स्थिति सदैव मुझे यह याद दिलाती थी कि मुझे मेरा सपना पूरा करना है, तो करना है। चाहे उसके लिए मुझे सब कुछ त्यागना पड़

जाए। मैने यह निश्चिय कर लिया था कि मैं एक न्यायपूर्ण न्यायधीश ज़रूर बनूँगी।

मेरे माता–पिता मुझे एक बेटे की तरह मानते थे। अपने प्रति माता–पिता का यह स्नेह देखकर मेरे अंदर और भी हौसला पैदा हुआ और मेरा मन पहले से बेहतर पढ़ाई में लगने लगा था। अब मुझे काफ़ी खुशी होने लगी। मैं जीवन में पहले की अपेक्षा ज़्यादा खुश रहने लगी। मेरे दोस्त भी मुझे न्यायधीश बनता देखना चाहते हैं। मुझे मेरा यह सपना हर हाल में पूरा करना है। अकसर हम देखते हैं कि बच्चों में बचपन से ही कुछ सपने होते हैं कि वह बड़े होकर अपने भविष्य में क्या बनेंगे लेकिन मेरा बचपन से ही यह सपना था। इसी सपने को पूरा करने के लिए मैं बड़े ही जोश और जुनून के साथ पढ़ाई करती हूँ। मेरा सपना एक न एक दिन ज़रूर पूरा होगा।

मेरे पिताजी द्वारा कही गयी ये निम्न बातें हैं जिनसे हम अपना लक्ष्य पा सकते हैं।

- अगर हमें अपने लक्ष्य को वाकई में प्राप्त करना है तो इसके लिए हमें बहुत ही मेहनत करनी होगी। इसके लिए आपको कुछ बातें याद भी रखनी होगी।
- हमें हमेशा अपने लक्ष्य के प्रति सक्रिय रहना चाहिए और लगातार कार्य को पूर्ण रूप से करते रहना चाहिए।
- जितना हो सके उतना हमें नकारात्मक बातों को दिमाग में नहीं लाना चाहिए। सभी कार्य हमें धैर्यपूर्वक करने चाहिए, और काम में संतुलन बनाए रखना चाहिए।
- असफलता और मुसीबतों से नहीं घबराना चाहिए बल्कि गलतियों को सुधार कर और बेहतर बनना चाहिए। हमें किसी सफल व्यक्ति से सहायता लेनी चाहिए और अपना मार्गदर्शन करवाना चाहिए।
- अंतिम परिणाम की कल्पना करनी चाहिए। यह सोचना चाहिए कि वाकई में हम यह काम कर सकते हैं।
- सबसे ज़रूरी बात हमें अपने लक्ष्य पर अडिग रहना चाहिए।

इसी तरह से हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ध्यान केंद्रित रखना होगा। अगर आप मेहनत से अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहेंगे तो आपको सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। आपको सफलता ज़रूर मिलेगी।

इसी प्रकार हमें अपनी इच्छा अनुसार अपने लक्ष्य को हर हाल में पूरा करना ही चाहिए।

सहायता मांगने में शर्म नहीं करनी चाहिए। अगर हमें किसी की भी सहायता लेनी पड़ती है तो हमें सहायता बेझिझक मांगनी चाहिए। हमें अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए हमेशा दृढ़ रहना चाहिए। तभी हम अपने सपने को पूरा कर पाएँगे और जीवन में सफल हो सकेंगे।

– रुकय्या, 18, उत्तर प्रदेश

तन, मन, धन से लोगों की सेवा

मेरे सपने यह हैं कि मैं जीवन में डॉक्टर बनना चाहती हूँ। सभी लोगों की तरह मैंने भी एक सपना देखा है। खूब पढ़ाई और मेहनत करके, मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ। लोगों की तन–मन और धन से सेवा करना चाहती हूँ। मेरे सपने को पूरा करने के लिए मुझे शुरुआत से ही कड़ी मेहनत करने की ज़रूरत है। मुझे विज्ञान विषय में बहुत रूचि है और मानव शरीर के बारे में भी अधिक जानने में गहरी रूचि है। मैं उन ग़रीब लोगों के इलाज के लिए डॉक्टर बनना चाहती हूँ, जो इलाज के लिए पैसे खर्च नहीं कर सकते हैं। उन ज़रूरत मंद लोगों की मदद करने में मुझे संतुष्टि मिलती है। मैं डॉक्टर बनकर लोगों को स्वस्थ रखने की कोशिश करना चाहती हूँ। हम सबको सबसे पहले अपने समाज की उम्मीद पूरी करनी चाहिए। वैसे भी अब्दुल कलाम ने कहा था कि आपकी सफलता देश की सफलता है। लेकिन समाज में फैली बुराइयों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद करनी चाहिए, जिससे समाज को नई सोच मिले। मैं अपने जीवन में ज़रूरतमंद लोगों का मुफ़्त में इलाज करना चाहती हूँ। मैं अपने जीवन में आगे और पढ़कर शिक्षित होना चाहती हूँ और अपने परिवार और समाज की सेवा करना चाहती हूँ।

समाज को भी हमसे वही उम्मीद होती है जो कि एक माता–पिता को अपनी संतान से होती है। वही जो एक गुरू को अपने शिष्य से और एक सेनापति को अपनी सेना से होती है। मानव के विकास में समाज अपनी अहम भूमिका निभाता है। अतः हमें भी समाज के विकास में अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिए।

समाज हमसे यह उम्मीद करता है कि हम उसे ऐसा वातावरण दें जिसमें पलने वाले नन्हे–मुन्हें बच्चे (देश के भविष्य) बड़े होकर एक अच्छा नागरिक बनें और वे भी इस समाज रूपी वटवृक्ष का संरक्षण करते हुए इसे फलने–फूलने में सहभागी बनें।

समाज हमसे ये भी उम्मीद करता है कि हम उसे धर्मनिरपेक्ष रहने दें।

समाज हमसे उम्मीद करता है कि हम अपनी ज़िम्मेदारी को समझें। असहाय, ग़रीब, भूखे, बीमार व समाज के अन्य सभी ज़रूरतमंद लोग हमारी ही ज़िम्मेदारी हैं।

– चुन्नेश्वरी राना, 16, छत्तीसगढ़

दूसरों के बारे में सोचना है

मैं पढ़–लिखकर एक डॉक्टर बनना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं लोगों की सेवा करूँ। मैं ग़रीब लोगों का फ्री में इलाज करना चाहती हूँ। मैं जब भी किसी डॉक्टर को देखती हूँ तो मुझे बहुत गर्व महसूस होता है और मेरा हौसला बढ़ जाता है। मेरे घर के सामने एक नेहा दीदी हैं जो डॉक्टर हैं। वह दिल्ली में जाकर रहती हैं और उनका अपना एक हॉस्पिटल है। मैं उन्हें जब भी देखती हूँ मुझे बहुत प्रेरणा मिलती है। मैं भी चाहती हूँ कि उनके जैसे एक हॉस्पिटल खोलूँ और ज़रूरतमंद लोगों की सेवा करूँ। जो लोग ग़रीबी के चलते अच्छे से इलाज नहीं करवाते हैं, मैं उनकी अच्छी तरह से इलाज करना चाहती हूँ। मैं अपनी पढ़ाई पूरी करके छम्म्ज का इग्ज़ाम पूरा करना चाहती हूँ। मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत करूँगी। हमारे देश में कई सारी बीमारियाँ हैं जैसे– टीबी, कैंसर, अस्थमा...आदि। ऐसी कई बीमारियाँ लोगों को होती है लेकिन ग़रीब लोगों के पास पैसा न होने के कारण, कितनों की जानें चली जाती हैं।

हमारे देश में डॉक्टरों की भी कमी है। मैं चाहती हूँ कि मैं एक डॉक्टर बनूँ और जो लोग अपना इलाज पैसों की वजह से नहीं करवा पाते हैं, मैं उनका अच्छे से इलाज करूँ। मुझे विज्ञान बहुत अच्छा लगता है और मुझे बायोलॉजी बहुत इंट्रेस्टिंग लगती है। मैं जब मनुष्य के शरीर या कीसी बीमारी के बारे में पढ़ती हूँ तो मुझे पढ़ने में मज़ा आता है।

मैं अपने सपने को पूरा करना चाहती हूँ लेकिन हमारे गाँव में पढ़ाई की व्यवस्था नहीं है। हमें बाहर जाकर पढ़ना होता है और बाहर जाने में बहुत मुश्किलें हैं। मुझे खुशी है कि मेरे परिवार में मुझे पढ़ने से रोकने वाला कोई नहीं है और सभी मुझे बहुत सपोर्ट करते हैं। वे सब चाहते

हैं कि मैं खूब पढ़ूँ और अपने सपने को पूरा करूँ। बहुत सारे डॉक्टर ऐसे होते हैं जो कि पैसों के लालच में मरीज़ को गलत–गलत दवाईयाँ दे देते हैं। लेकिन मैं अपने सपने को पूरा करने के बाद लोगों के लिए सबसे अच्छी–अच्छी दवाईयाँ दूँगी। मैं चाहती हूँ कि मैं बड़ी होकर एक अच्छी सर्जन बनूँ। जब मैं अपने सपने को पूरा कर एक हॉस्पिटल खोलूँगी तब वहाँ का पर्यावरण शुद्ध रखूँगी और आस–पास की गंदगी को भी साफ़ रखने की पूरी कोशिश करूँगी।

मैं चाहती हूँ कि मैं ऐसी डॉक्टर बनूँ कि मेरे माता–पिता, परिवार, गाँव, शिक्षक और सबको मुझ पर गर्व हो। मैं अपने सपने को पूरा करके अपने और अपने परिवार का नाम रौशन करना चाहती हूँ। अगर मैं डॉक्टर बन जाऊँ तो मुझे बहुत खुशी होगी क्योंकि ये मेरा बचपन से ही सपना है और मुझे अपने आप पर गर्व होगा। मैं डॉक्टर बनकर लोगों की जान बचाउंगी और मुझे बहुत खुशी होगी कि मैंने किसी की जान बचाई। मैं डॉक्टर पैसों के लिए नहीं बनना चाहती बल्कि लोगों की सेवा और उनका अच्छे से इलाज करने के लिए बनना चाहती हूँ। मेरा सपना डॉक्टर बनकर अपने देश के लोगों के लिए कुछ करना है।

मैं इसलिए भी डॉक्टर बनना चाहती हूँ क्योंकि मुझे डॉक्टरों की बहादुरी, ईमानदारी, हिम्मत और अच्छे व्यवहार बहुत पसंद है। कोविड़–19 के बाद डॉक्टरों की मेहनत देखकर मुझे डॉक्टर बनने के लिए बहुत प्रेरणा मिली है। मैं नहीं चाहती कि कोई भी ग़रीब अपना जीवन खो दे। मैं अपने देश को फिट और स्वस्थ बनाना चाहती हूँ।

इस कोविड़–19 में सभी लोग अपने घर से निकलने में भी डरते थे। डॉक्टर लोग अपने बारे में न सोचकर दूसरों के बारे में सोचते हैं और मैं भी अपने बारे में न सोचकर दूसरों के बारे में सोचना चाहती हूँ। साथ ही साथ समाज सेवा भी करना चाहती हूँ। मुझे पता है कि डॉक्टर बनना इतना आसान काम नहीं है और ये आसानी से नहीं होने वाला है पर मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगी कि मैं अपने सपने को पूरा कर सकूँ। मैं डॉक्टर बनूँ या न बनूँ लेकिन एक अच्छा इंसान ज़रूर बनूँगी। अगर मैं डॉक्टर न बन पाई और लोगों की सेवा न कर पाई तो मैं जितना हो सकेगा सबकी मदद करूँगी। मैं अपने सपने को पूरा करने के लिए खूब–खूब मेहनत करूँगी। मैं जिस दिन डॉक्टर बन गई उस दिन मुझे अपने आप पर बहुत गर्व महसूस होगा।

मेरे सपने के पूरा होने में बस एक रुकावट है कि मेरे समाज में लड़कियों को बाहर भेजने से रोकते हैं। मुझे डर है कि कहीं मेरे परिवार वाले उनकी बातों में आकर मुझे भी बाहर जाने से न रोक दें। यहाँ हमारे गाँव में पढ़ाई की अच्छी सुविधा नहीं है और 10वीं के बाद के लिए न ही कोई अच्छा स्कूल या कॉलेज है। फिर भी मैं खूब मेहनत करके अपने सपने को पूरा करूँगी। और एक दिन मैं डॉ. नैन्सी बनूँगी।

– नैन्सी कुमारी, 15, नई दिल्ली

सरकारी चिकित्सालय में काम

मेरा नाम केसर मेघवाल है। मेरे पिताजी का नाम किशन लाल जी है। मेरी माता जी का नाम राधा बाई है। मेरे विद्यालय का रा.बा.उ.प्रा विद्यालय, जसवंतगढ़ है। मेरे परिवार में कुल 8 लोग हैं। मेरा सपना डॉक्टर बनना है। मैं अभी कक्षा नौवीं की छात्रा हूँ। मैंने यह ठान लिया है कि मैं डॉक्टर बनूँगी। मैं कक्षा 11वीं में साइंस लूँगी जो कि मेरा पसंददीदा विषय है। हमारे विद्यालय में साइंस विषय नहीं है। मुझे अपने गाँव से दूर जाना पड़ेगा और इसलिए मैं अपने परिवार के बड़ों से बात कर गाँव से बाहर जाऊँगी। परिवार वाले मुझे पहली बार मना कर देंगे क्योंकि मैं ग्रामीण क्षेत्र की हूँ। इसलिए वे मना कर देंगे। मैं अपने परिवार वालों को समझाऊँगी की लड़कियाँ भी कुछ कर सकती हैं और अपने लक्ष्य तक पहुँच सकती हैं। इसलिए मैं भी अपना सपना और अपना लक्ष्य पूरा करना चाहती हूँ। हालांकि मेरे माता–पिता के पास इतना धन नहीं हैं कि वह मुझे डॉक्टर बना सकें। क्योंकि मेरे पिताजी किसान हैं और मेरी माता जी घर का काम करती हैं और खेत में मेरे पिता जी की मदद भी करवाती हैं।

मैं कक्षा 12वीं में जाने के बाद मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लूँगी। ताकि मेरे गाँव में जो लड़कियाँ नहीं पढ़ती हैं, वो मुझे देख कर... यानि मैं जब डॉक्टर बनूँ... जब मैं अपने गाँव जाऊं, तो मुझे देखकर लड़कियाँ भी सोचने लगें कि हम भी पढ़ाई करते तो हम भी कुछ कर रहे होते। जैसे, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, अध्यापक, नर्स कुछ न कुछ बन पाती। और मैं अपने गाँव और परिवार का नाम रोशन करूँगी। मैं अपने जीवन में एक बाल चिकित्सक बनना चाहती हूँ। हम रोज़ अखबारों में ख़बरें पढ़ते हैं कि आज उस बच्चे की मौत कैंसर से हुई।

मैं ऐसे बच्चों की ज़िंदगी बचाना चाहूँगी। जब मैं अपने नेम प्लेट के साथ अपने केबिन में बैठूँगी तब मुझे अपने परिवार पर बहुत गर्व होगा। क्योंकि अगर मेरे परिवार ने मेरा साथ न दिया होता तो मैं इस केबिन मैं नहीं बैठी होती। अगर मेरे परिवार ने सपोर्ट न किया होता तो मैं यहाँ तक नहीं पहुँच पाती। मैं अपने गाँव की सारी लड़कियों को समझाऊँगी कि पढ़ाई करनी चाहिए और परिवार का सपोर्ट भी होना चाहिए। मैंने अपना यह सोचना किसी को देखकर निश्चित नहीं किया। जब मैं छोटी थी, जब मैं बीमार हो जाती थी न, तब मेरे पापा मुझे डॉक्टर के पास लेके जाते थे। तब मैं इंजेक्शन से नहीं डरती थी, न अब भी डरती हूँ। और मैंने टी.वी. पर देखकर भी यह निश्चित नहीं किया। डॉक्टर बनने के लिए बड़ी–बड़ी चुनौतियाँ सामने आएँगी। बड़ी–बड़ी समस्याएँ भी और चुनौतियाँ भी। लेकिन हर समस्या को पार कर आगे बढ़ना है। मैं भी एक लड़की हूँ, और अपने जीवन में अपना लक्ष्य पाकर रहूँगी।

मैं अपने गाँव में एक चिकित्सालय खोलूँगी जहाँ पर मेरे गाँव के लोगों को दूर जाने की ज़रूरत नहीं पडेगी। मैं उस चिकित्सालय को निःशुल्क चलाऊँगी। और बाकी लड़कियों के लिए अपने गाँव वालों को समझाऊँगी कि लड़कियों को पढ़ाएँ और आगे बढ़ाएँ। जो लोग बाल विवाह करवाते हैं तो वह न कराएँ और लड़कियों को पढ़ाएँ। क्योंकि ग्रामीण लोग खर्चे से डरते भी हैं क्योंकि अगर लड़कियों को पढ़ाया जाए तो खर्च ज़्यादा हो सकता है। इसलिए अधिकतर लोग लड़कियों को नहीं पढ़ा पाते हैं। इसलिए मैं गाँव वालों से कहना चाहती हूँ कि लड़कियों और लड़कों भी पढ़ाएँ। छोटे बच्चों से मजदूरी न करवाएँ और उन्हें पढ़ने को भेजें। वे देखें कि मैं सरकारी विद्यालय में ही पढ़ती थी। मैंने मेहनत की तो आज मैं डॉक्टर बन गई। लड़कियों को कई समस्याएँ हो सकती हैं, जैसे कि विद्यालय में डॉक्टर की ज़रूरत पड़ सकती है। क्योंकि लड़कियों की समस्या एक लड़की ही समझ सकती है। अगर डॉक्टर न बताना चाहे, तो वह अपने माता जी व अपने कक्षा अध्यापक से बता सकती है। मुझे सरकारी चिकित्सालय में काम करना है।

– केसर मेघवाल, 14, राजस्थान

लड़की बहुत कुछ कर सकती है

मेरा नाम सरिता पांडेय है। मैं बीए कर रही हूँ। मेरा यह सपना है कि मैं पुलिस बनना चाहती हूँ। मुझे पुलिस बनना बहुत पसंद है. पर हमारे यहाँ का समाज बहुत अलग है। लोग बोलते हैं कि लड़की पढ़–लिखकर क्या कर सकती है? शादी के बाद उसे खाना ही तो बनाना है। घर को ही तो देखना है। ये नहीं बोलते हैं कि घर के साथ–साथ वह अपना सपना भी पूरा करे।

मेरा सपना पुलिस बनने का है और मैं बनूँगी भी। कोई कुछ भी बोले। मेरे पापा एक प्राइवेट टीचर हैं। हम चार भाई–बहन हैं फिर भी मेरे पापा सबके पढ़ाई में कोई कमी नहीं करते हैं। वह हमेशा से हम चारो भाई–बहन को सपोर्ट करते हैं। शायद ये पता होगा आप लोगों को कि प्राइवेट टीचर की तनख्वाह कितनी कम होती है। फिर भी मेरे पापा हमारे पढ़ाई में कोई कमी नहीं छोड़ते हैं। इसलिए मैं चाहती हूँ कि मैं पुलीस बनकर अपने पापा और समाज का सर ऊँचा करूँ।

हाँ, ये सच है कि हमारे यहाँ लोग ये सोचते हैं कि लड़की पढ़ाई करके क्या ही कर सकती है? पर शायद उनकी सोच गलत है। वह ऐसा क्यों नहीं सोच सकते कि लड़की बहुत कुछ कर सकती है? फिर भी उनसे इतना भेदभाव क्यों किया जाता है? क्यों लड़के पढ़ सकते हैं और हम लड़कियाँ क्यों नहीं पढ़ सकतीं? जब लड़के बाहर जा सकते हैं तो हम लड़कियाँ क्यों नहीं? लड़के पढ़ने के लिए दिल्ली जा सकते हैं तो हम लड़कियाँ क्यों नहीं? हमारा भी

तो कुछ सपना होता है! हम भी तो जा सकते हैं। अपना सपना पूरा कर सकते हैं। बहुत सारी ऐसी लड़कियाँ हैं जो डर की वजह से न बाहर निलती हैं और न ही अपना सपना पूरा कर पाती हैं। वे घर के अंदर रह कर सबका डिमांड पूरा करती है, पर उनका सपना कोई पूरा क्यों नहीं कर सकता? क्यों लड़कियों को इतना कमज़ोर माना जाता है। क्या लड़की इस धरती पे जन्म नहीं ले सकती? क्यों लड़की अपना सपना पूरा नहीं कर सकती? आख़िर ऐसा क्यों है कि मैं पुलिस बनना चाहती हूँ और मेरे पापा भी चाहते हैं, पर यह समाज नहीं सोचता। फिर भी मैं चाहती हूँ, और मेरा सपना है बिहार पुलिस बनने का। मैं बिहार पुलिस बनूंगी और मैं बिहार पुलिस ही बनना चाहती हूँ।

– सरिता पांडेय, नई दिल्ली

PDCA (प्लान, डू, चेक, एक्ट) चक्र

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारे लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमें एक PDCA चक्र की तरह चलना होता है। जिसमें हमें– 'प्लान, डू, चेक, एक्ट' इस प्रकार की विधिवत रूप से तैयारी करनी होती है। मेरा सपना एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना है और मैंने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपना पहला कदम बढ़ा दिया है। मैंने अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करके प्ज् (औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान) में प्रेवेश लिया है। हमारा लक्ष्य तब ही तय होता है जब हम सपने देखते हैं। यदि मैंने अपने जीवन में यह सपना देखा है तो उसे एक लक्ष्य के रूप से देखा है। क्योंकि मुझे अपने सपने को किसी भी हालत में हासिल करना ही है। तभी मैं अपना सपना पूरा कर करती हूँ। जब मैं छोटी थी तब मेरा सपना मेरे खिलौनों तक ही सीमित था लेकिन जैसे–जैसे उम्र और समझ बढ़ी, वैसे–वैसे अपने सपने की अहमियत पता चली। मैंने अपने सपने के बारे में सोचा और पूरी जानकारी प्राप्त की, ताकि मैं एक सफल सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनूँ। आज मैं वो जानकारी हासिल करने कोशिश करती हूँ जो एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पास होनी चाहिए।

हम जिस भी क्लास में पढ़ते हैं हमसे सबसे पहले यही पूछा जाता है कि आप अपने जीवन में क्या करना चाहते हैं? क्या बनना चाहते हैं? अपने जीवन में हर कोई सफल होना चाहता है और जैसा कि मैंने बताया कि मैं एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहती हूँ और प्ज् में (प्ब्ज्ैड) ज्त्।क्म् से दो साल का कोर्स कर रही हूँ। अपने दो साल पूरे करने तथा अच्छे अंको से स्नातक पूर्ण होने के बाद अन्य प्राइवेट कंपनी में नौकरी करना चाहती हूँ।

नौकरी करने से मुझे सॉफ्टवेयर की अधिक जानकारी प्राप्त होगी। मेरी कार्य करने की क्षमता जागृत होगी। मुझे अधिक अनुभव प्राप्त होगा और मैं सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के लिए तैयार हो जाऊँगी। प्राइवेट नौकरी करने के बाद मैं खुद को आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करूँगी। एक सफल, सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनके अपने परिवार तथा गाँव का नाम रोशन करूँगी। आने वाले युवाओं को इस सपने के बारे में बता कर जागरूकता फैलाउंगी। क्योंकि वर्तमान में जो तैयारी मैं कर रही हूँ और जो मेरा सपना है, लोगों को लगता है ये केवल समय की बर्बादी है। लेकिन यदि मैंने अपने सपनों को पूरा करके दिखाया तो जो युवा, किशोरियाँ, सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहते/चाहती हैं और नहीं कर पा रहे हैं, उन्हें एक प्रेरणा मिलेगी और वे भी अपने लिए निर्णय ले सकेंगे।

मेरे सपनों को पूरा करने में मुझे सरकार की बहुत सहायता प्राप्त हुई है। जैसे मैं अभी प्ज् में हूँ लेकिन यहाँ लड़कियों के लिए प्रवेश राशि केवल 100/– रु. है। वह भी हमें दो साल पूरे होने के बाद वापस मिल जाएगी। वहाँ बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, परंतु मेरी एक समस्या है जो मेरे इस सपने के बीच बाधा उत्पन्न कर रही है। मेरे आगे की पढ़ाई के लिए आसपास में कोई इंस्टीट्यूट नहीं है।

प्ज् में (प्ब्ज्ैड) करने के बाद कोई सरकारी नौकरी उपलब्ध नहीं है। केवल एक कंप्यूटर टीचर की भर्ती होती है जिसकी वैकेंसी भी बहुत कम निकलती है। हमारी प्ब्ज्ैड ज्त्।क्म् में सरकारी अध्यापक न होने की वजह से वे हमारी पढ़ाई पर अधिक ध्यान नहीं देते हैं। जो लड़कियाँ प्ज् जाती हैं उनसे परिवहन बस वाले अधिक पैसे लेते हैं और यदि न दें तो हमें रास्ते में ही उतार देते हैं। मैं बस सरकार से अपनी इन मांगों के लिए सहायता चाहती हूँ क्योंकि अभी वर्तमान में मैं इसकी मांग नहीं करूँगी तो ये सब इसी तरह चलता रहेगा। मैं जैसे–तैसे करके अपनी पढ़ाई पूरी कर लूँगी परंतु मेरी इच्छा है की मैं इसी में कोई अच्छी सरकारी तौर पर कार्य करूँ। क्योंकि प्राइवेट नौकरी करने तथा अच्छी सैलरी के लिए मुझे बहूत दूर प्राइवेट नौकरी करनी होगी। जो शायद मेरे घरवाले न करने दें। लड़कियों को दूर भेजने से उन्हें डर लगता है। इस कारण मैं चाहती हूँ कि मैं किसी सरकारी कर्मचारी के तौर पर कार्य करूँ।

– वंशिका साहू, 18, ओडिशा

रोमांच, इच्छा और मेहनत

मेरा नाम अंजली। पिता का नाम श्री. बलराज। गाँव का नाम करसिंधु है। स्कूल का नाम जीएसएसएस, करसिंधु है। मेरे परिवार में कुल 5 लोग हैं। जिसमें हम दो बहनें, एक भाई, और मम्मी–पापा हैं। मेरे पापा एक किसान हैं और मम्मी हाउस वाइफ हैं। मेरे गाँव में लड़कियों को अपने सपने पूरे करने के लिए बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या तो ये है कि लड़कियों की घर से बाहर कम ही निकलने दिया जाता है। उन्हें पढ़ाई के लिए भी 12वीं तक गाँव में ही स्कूल में पढ़ाया जाता है। उसके बाद तो बहुत ही कम लड़कियाँ ऐसी हैं जो 12वीं के बाद बाहर शहर में पढ़ाई करती है। इस वजह से लड़कियाँ अपने सपनों की पूरा नहीं कर पाती हैं। वे अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाती हैं। दूसरी समस्या ये है कि मेरे गाँव में अगर लड़कियाँ सूट के अलावा अपने पसंद की कोई ड्रेस पहनें तो उसके लिए भी उन्हें रोका–टोका जाता है। घर वाले तो कुछ न भी कहें लेकिन पड़ोसी बहुत टोकते हैं।

प्रत्येक बच्चे का अपना एक उद्देश्य होता है और वह भी उस उद्देश्य पर अमल करने की पूरी कोशिश करता है। हमारे जीवन में भी एक सपना और ऐसी अकांक्षा है, जिसके बिना हमारा जीवन अधूरा है। जैसे हमारा जीवन ही अधूरा है। जैसे हमारा कोई सपना ही नहीं है। हमारा जीवन ऐसा होता है, जैसे चाय में पत्ती के बिना कोई स्वाद नहीं आता। इसलिए हमारे उज्जवल भविष्य के लिए एक सपना होना बहुत ज़रूरी है। इस तरह हर व्यक्ति की कुछ महत्वाकांक्षा या इच्छा होती है। जैसे जब हम बच्चे थे तो हम कई चीजों को देखकर रोमांचित हो उठते थे और बड़े होकर हम उन्हें पाने की इच्छा रखते हैं। जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं, वैसे–वैसे हमारे कुछ

सपने और आकाक्षाएँ बरकरार रहती हैं। हम उन्हें पाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। जीवन में एक लक्ष्य रखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जब आप अपने जीवन में इसे, जब आप अपने जीने में इसे हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे, तभी आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। किसी ने सही कहा है कि जब आप अपने डर के आगे, अपने सपनों को ज़्यादा महत्व देंगे तो चमत्कार हो सकते हैं। दूसरों की तरह मैंने भी छोटी सी उम्र से अपना करियर विकसित करने का सपना देखा है। मैं एक प्रसिद्ध एमबीबीएस डॉक्टर बनना चाहती हूँ। मैंने यह सपना इसलिए चुना है क्योंकि जो हमारे समाज में ग़रीब व छोटे घरों से संबंध रखते है। जिनके पास इलाज करने के पैसे नहीं होते हैं। जो अधिक जानलेवा बीमारी का शिकार हो जाते हैं। जो समय से पहले ही वो इस दुनिया को अलविदा कह जाते हैं। मैं उनका इलाज कर सकूँ। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि पैसों की कमी तथा ग़रीबी के कारण वे समय पर अपना इलाज नहीं करवा पाते हैं। जैसे–जैसे हमारे समाज में महंगाई बढ़ रही है। वहीं दूसरी ओर ग़रीबी के कारण लोग अपना जीवन व्यतीत करने में अधिक मुश्किल का सामना कर रहे हैं। और हमारे समाज में जो सरकारी अस्पताल हैं वहाँ पर अच्छे से उनका इलाज नहीं किया जाता है और जो प्राइवेट अस्पताल हैं वहाँ पर अधिक खर्चा होता है। तो ग़रीब व्यक्ति कहाँ अपना इलाज करवाएगा। उसके लिए तो दोनों तरफ से दरवाजे बंद हो गए हैं। सरकारी अस्पतालों में भी डाक्टरों की कमी बहुत ज़्यादा बढ़ती जा रही है। जहाँ तक देखा जाए तो गाँव में अस्पताल न होने की वजह से गाँव के लोगों को इलाज करवाने के लिए शहर में भी जाना पड़ता है और शहर जाने के लिए पैसों व साधन दोनों की ज़रूरत होती है। गाँव में कच्ची सड़क होने की वजह से लोग अस्पतालों में समय पर भी नहीं पहुँच पाते हैं। इसलिए मैं एक डॉक्टर बनकर ग़रीब लोगों की मदद करना चाहती हूँ और मैं एक प्रसिद्ध डॉक्टर बनकर अपने गाँव में एक अस्पताल खोलूँगी, जिससे ग़रीब लोगों को इलाज कराने के लिए शहर नहीं जाना पड़ेगा। जो अस्पताल मैं खोलूँगी उसमे ग़रीब लोगों का मुफ़्त इलाज करूँगी। इसलिए मेरे ख़्याल से, हमारे सपनों को पूरा करने में हमारी सरकार अपने तरीके से सपोर्ट कर सकती है। जैसे–

1. सरकार ग़रीबों को उनके सपनों को पूरा करने के लिए ऋण दे सकती है।
2. कॉलेज, स्कूल और कोंचिग की फीस कम करवा सकती है।
3. सरकार, कोचिंग सेंटर खुलवा सकती है।
4. स्कॉलरशिप दे सकती है।
5. सरकारी जॉब पर ग़रीब लोगों के लिए सीटें आरक्षित कर सकती है।
6. प्राईवेट कॉलेज में जो रिश्वत देकर दाख़िले होते उसको बंद करवा सकती है।

– अंजली, हरियाणा

सपना ही खेवनहार है

मैं एक भारतीय हूँ जिस पर मुझे गर्व है। मेरा नाम मोनिका कुमारी रेगर है। मैं बीए फ़र्स्ट ईयर में हूँ। मैं गवरमेंट कॉलेज में पढ़ती हूँ। मैं बेसिक कंप्यूटर कोर्स कर रही हूँ। मेरे दादा जी का नाम मेवाराम जी है। वह एक लाइनमैन की नौकरी करते थे। मेरी दादी जी का नाम जीवली है, वह गृहणी हैं। मेरे पापा का नाम माणक चन्द जी रेगर है और वह खेती का काम करते हैं। मेरी मम्मी का नाम सीमा देवी है, वह भी गृहणी हैं। मेरी दीदी का नाम नीतू कुमारी रेगर है वह जीएनएम फ़र्स्ट ईयर में हैं। मेरी छोटी बहन का नाम कोनिका रेगर है, वह 10वीं में है।

मेरे भाई का नाम दिलखुश है, वह 9वीं में है। हम सभी अपने परिवार के साथ–साथ मिलजुल कर रहना चाहते हैं।

हर व्यक्ति का सपना अलग–अलग हेता है, वैसे ही मेरा भी एक सपना हैं – मैं कुछ बन सकूँ और किसी तरह देश को शिक्षित करने में मेरा योगदान दे सकूँ। जिससे कि हमारे समाज और देश में किसी अनपढ़ व्यक्ति को अगर कोई ज़रूरत पड़े तो मैं उसे कुछ सलाह या मशवरे दे सकूँ। मेरा सपना पढ़–लिखकर आगे बढ़ना है। किसी ने सही कहा है कि "जब अपने डर के आगे हम अपने सपने को ज़्यादा महत्व देंगे तो चमत्कार हो सकता है।'' सपने देखना हम सभी के लिए आवश्यक है। लेकिन यह केवल तभी हो सकता है जब हम अपने पूरे दिल से कोई बड़ा सपना देखें। तभी हम बड़े सपने को हासिल करने में सक्षम हो सकते हैं।

जैसे कि मेरा सपना अच्छे अंक प्राप्त करना है व अच्छे दोस्त बनाना है। परिवार से जो सीख ली और जो सोचा कि जीवन में कुछ बड़ा कर सकूँ। मैंने भी दूसरों की तरह छोटी सी उम्र में अपना करियर विकसित करनें का सपना देखा है। मैं एक अच्छी एवं प्रसिद्ध टीचर बनना चाहती हूँ।

मैं एक शिक्षक इसलिए भी बनना चाहती हूँ ताकि लोगों को शिक्षा देकर मैं समाज की सेवा भी कर सकूँ और लोगों को जान भी पाऊँ कि उनकी सोच किस प्रकार की है। अगर उनकी सोच गलत है तो मैं उन्हें शिक्षा का पाठ पढ़ा कर उनकी सोच बदल सकूँ। मेरे जीवन का सपना धन–दौलत कमाना नहीं है क्योंकि धन–दौलत तब तक किसी काम की नहीं है जब तक लोग शिक्षित नहीं हैं।

मेरे सपने का कारण भी मेरा सपना ही है। बिना सपने के हम उस नौका के समान हैं जिसका कोई खेवनहार नहीं है। मेरी नौका कभी भी भंवर में डूब सकती है और कहीं चट्टान से टकराकर चकनाचूर हो सकती है। सपना होने से जीवन में रस आता है।

मैंने तय किया है कि मैं टीचर बनूँगी। टीचर बनकर देश को तोड़ने वाली ताकतों के विरुद्ध संघर्ष करूँगी। समाज को खोखला बनाने वाली कुरीतियों के ख़िलाफ़ लड़ूंगी।

मेरे जीवन का लक्ष्य एक अच्छा शिक्षक बनना है। इस पेशे ने मुझे बचपन से ही आकर्षित किया है। मैं अध्ययन करना और इस महत्व को पढ़ाना बहुत पसंद करती हूँ। यह महत्व मुझे आनंद और संतुष्टि देता है। अपने छात्र जीवन के दौरान मुझे अनेक बार अच्छे शिक्षक की आवश्यकता महसूस हुई और यह मेरे शिक्षक बनने का महत्व है।

अतः मेरा सपना शिक्षक बनना है और यही मेरा महत्व है और यह सबसे सम्मानीय पेशों में से एक है।

इसे सपने के रूप में चुनने का कारण यह है कि किसी देश की प्रगति वहाँ की शिक्षा और शिक्षा की गुणवता पर निर्भर करती है।

इसमें शिक्षक की बड़ी भूमिका होती है। जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ तब उस समय हमारी साक्षरता दर मात्र 12 प्रतिशत थी लेकिन 2011 कि जनगणना के अनुसार अब साक्षरता दर 74 प्रतिशत है। लेकिन अभी हमें एक लंबा रास्ता तय करना है। शैक्षिक दृष्टि से देश के ग्रामीण आवश्यक हैं। यही कारण है जो मुझे एक अच्छा और ज़िम्मेदार शिक्षिका बनना चाहती हूँ।

जीवन का कोई ना कोई लक्ष्य होना चाहिए। यदि लक्ष्य नहीं है तो हमारा जीवन दिशाहीन हो जाएगा, मेरे मन में भी एक कल्पना है। मैंने बचपन में ही ठान लिया था कि मैं बड़ी होकर

एक अच्छी शिक्षक बनूँगी। मैं शिक्षक बनकर शिक्षा का एक दीप जलाना चाहती हूँ। जिससे हमारे समाज में फैली हुई कुरूतियों और अंधविश्वास को कम किया जा सके।

मैं एक शिक्षक इसलिए भी बनना चाहती हूँ ताकि लोगों को शिक्षा देकर मैं समाज की भी सेवा कर सकूँ। भले ही कुछ लोग इसे साधारण उद्देश्य समझें पर मेरे लिए यह गौरव की बात है।

अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है। शिक्षक का जीवन बहुत ही साधारण होता है लेकिन शिक्षा का प्रकाश बहुत ही असाधारण, जो कि लोगों के जीवन को बदल देता है, और विद्यार्थी ही देश की नींव होता है। टीचर बनकर मैं देश की सेवा करने में अपना पूरा–पूरा योगदान देने की पूरी से पूरी कोशिश करूँगी। अपने देश के लिए पूरी मेहनत करूँगी।

मैं उस नींव को मजबूत बनाना चाहती हूँ। मैं मानती हूँ कि एक शिक्षक के ऊपर बहुत सी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं लेकिन मैं उन सभी ज़िम्मेदारियों को निभाना चाहती हूँ। मैं एक शिक्षक बनकर अपने विद्यार्थियों को संस्कारी, सदाचारी, देशभक्त और चरित्रवान बनाऊँगी।

अपने लक्ष्य के लिए मैं खूब मन लगाकर परिश्रम करूँगी। मैं अपने जीवन में यह सब अपने देश और इंसाफ के लिए करना चाहती हूँ। मैं महसूस करती हूँ कि शिक्षक का काम अपने छात्रों को कुशलतापूर्वक पढ़ना है ताकि दुनिया में कोई भी व्यक्ति डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, नेता आदि बने और देश की सेवा करे।

इसके लिए मैं अपने परिवार से बहुत सहायता और मदद चाहती हूँ। और चाहती हूँ कि मेरे परिवार वाले मेरी सहायता और मदद करें। जैसे– कि मैं कहीं बाहर जॉब करना चाहती हूँ तो मुझे अपने परिवार की मदद चाहिए। मेरे परिवार वालों को किसी की बातों में नहीं आना चाहिए और मेरी मदद करनी चाहिए। मेरे परिवार वालों को मुझ पर विश्वास करना चाहिए।

चाहे कोई भी परिस्थिति हो पर हमको भी उनका सम्मान करना चाहिए। उनका भरोसा जीतना चाहती हूँ। ताकि मैं बाहर जा सकूँ और अपनी पढ़ाई की तैयारी कर सकूँ। जब छोटे भाई–बहन के पालन की बात हो तो समझौता नहीं करना चाहिए। परिवार की हम सबके जीवन में अहम भूमिका है। हमारे सुख–दुख में परिवार ही हमारे साथ खड़ा रहता है। मैं अपने परिवार में रहकर ही ऐसा प्राप्त करने को सोचती हूँ कि यहाँ समता है और मैं अपना जीवन सुखमय बना सकती हूँ।

परिवार, सामाजिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है। जिसका व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक महत्त्व है। परिवार, सामाजिक संगठन की एक सार्वभौमिक एवं सर्वकालिक निर्माण इकाई है। परिवार के द्वारा ही सामाजिक संबंधो का निर्माण होता है जो हमारे समाजशास्त्र

की विषय–वस्तु है। यदि आप समर्थ हैं और परिवार के दूसरे कुछ मेंबर समर्थ नहीं हैं तो मुझे उनको समझाना होगा कि मैं बाहर जाकर पढ़ूँगी तो हमारे परिवार का ही नाम रोशन होगा। मैं अपने परिवार को यह कहूँगी कि मैं बाहर जाऊँगी तो मैं ऐसा कोई गलत काम नहीं करूँगी और ध्यान लगाकर पढ़ूँगी और एक अच्छी शिक्षक बनूँगी।

व्यक्ति का परिवार उसका छोटा संसार होता है। हम अपने जीवन में कुछ भी प्राप्त कर पाते हैं तो वह परिवार के सहयोग और समर्थन स्वरूप प्राप्त कर सकते हैं। हमारा परिवार कहता है कि तुम्हारी शादी करेंगे। तो मेरा कहना है कि मैं अभी शादी नहीं करूँगी, मेरा भविष्य अभी पढ़ने के लिए है और आगे बढ़ने का समय है। कोई भी व्यक्ति ऐसा दबाव डाले तो हमारे घर वाले हमारी पढ़ाई ना रूकवाएँ और आगे बढ़ने की इजाज़त दें। मेरे परिवार वाले यह कहते हैं कि बाहर निकलो अच्छे से अपनी पढ़ाई करो। मैं अपने खुद के दम पर खड़ी होना चाहती हूँ। मेरे परिवार वाले मुझे बुक और नोटबुक खरीदने के पैसे देते हैं। अपने परिवार से मैं जब कहती हूँ कि मुझे फीस चाहिए तो मेरे परिवार वाले मेरी सहायता करते हैं। मेरे परिवार वाले बहुत–बहुत अच्छे हैं और उन्होंने मेरी बहुत मदद व सहायता की है और कर रहे हैं। मैंने निश्चिय कर लिया है कि मैं शिक्षक बनूँगी व शिक्षक बनकर देश की सेवा करना सबसे अच्छा तरीका है। सिर्फ़ अच्छे और विद्धान छात्र ही देश को आगे ले जा सकते हैं। मैं अपने देश को ऐसे विद्यार्थी उपलब्ध कराकर प्रसन्न होऊँगी जो देश को ज़्यादा आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनाएंगे। मैं एक अच्छी शिक्षक बनने की कोशिश करूँगी।

– मोनिका कुमारी रेगर, 17, राजस्थान

3-D Printing

I am writing about my dreams. In my life, I have changed my dreams, many times, in, since the little age of 8-10 years. I used to feel like a Barbie girl, but after some time, I had to start doing tailoring, when I was 10 years old. In 2014, I went to community home. There I attended trainings for tailoring, computer, worli painting, paper strips jewellery, hand making things. I was in VIIth class. I did all basic trainings there. After three-four months, I was sent to a hostel. I was to complete my VIIth std in the hostel, and then return home after a couple of months. But I did not live at home. After some months, I was sent back to the community home, and I stayed there till I was 12 years old. I wanted to learn 3D printing but they told me that I had to be 16-17 years of age to start the course. I said OK. They told me to join in 2021. In 2021. when I came to join 3D printing, all projects had stopped I have not complete my 10th class because we are so poor. And my mom never send me to school. I have studied till 7th class, this way. In 2022, I have passed till VIIth Std, but I not live my hopes. I feel in my mind, that I have to do 3D printing but I came to Kshamata in 2022, didi asked me, “What you want to do in your life?” I say, “I want to do 3D printing.” But after some days, one Sir, asked me. “Do you want to do 3D printing?” I said, “yes”. So they said first you have to finish your 10th and 12th, and after that you can take the 3D printing. But you have to get a seat among the 200 seats in the course.

But I think, I have not studied till Xth class so how will I take the course for 10th and 12th passouts and get under a seat under 200? I had to leave my 3D printing dream. But now I am in Kshamata. It gives me lot of opportunities to do something in life. This time, I see my new future in Kshmata. and I realise I have to become a social worker but I don't know my future. In my family, I have 3 sisters and mother. My father is no more. I want only my mom and sister's love. I get everything in my life but I do not get love and school and save life. That'a why I study in Kshamata, because my new family is Kshamata. You can ask what you want with your family. I haveto say only that much. I want only sisters' love and her protection. At this time, my new family is my Kshamata. Myonly hope is that whatevere I need in my life, they will help me to do something in life.

From society, I want only my freedom. Theway society tells everyone tha girls do not do anything, they only the housework, they only stay at home, I want only that society to help to girls and boys from NGOs and community homes achieve something in life. Always society asks you, " What is your full name?" Why does society want surname? All I want from society & Please do not judge girls and boy with their surnames! You have to judge them with their name, and what is there in their life! I only want this much help from society.

I want to fulfill my dreams, but in my home, I have lot of problems in my family. Nobody has a job. That's why, we do not pay any ghar tax and maintenance. We don't have any money to eat all, so me and my sister are stay home. We don't eat nice food, no school, and home problems. I study in Kshamata, I want only this much that, I do not have ajob, my home has a lot of problems; so I want to tell the governmentthat my home tax (rent?) is so much, my father is no more, he died on 17th November 2014, and since then we are not paid any compensation. I do know in time I I will take-up home responsibilites but at this time, I want help of Government.

- Shomya Prajapati, 18, Maharastra

हॉकी टीचर

मेरी उम्र 15 वर्ष है। मैं एक मुस्लिम लड़की हूँ। मेरा नाम मंतशा परवीन है। मैं कक्षा 8वीं में पढ़ती हूँ। मेरी माता का नाम नशीम बानो है। मेरे पिता का नाम मुबारक हुसैन सैयद है। मैं केकड़ी शहर में रहती हूँ।

मैं बचपन से ही कुछ ना कुछ करना चाहती थी पर इस समाज को देखते हुए ऐसा लगता था कि यह समाज लड़कियों को कुछ नहीं करने देगा। लड़कियों की जो इच्छा है और जो अपने बल पर खड़ा होना चाहती हैं। वे अपने माँ–बाप का नाम रोशन करना चाहती हैं। यह समाज उनकी आगे बढ़ने, कुछ करने और अपने बल पर खड़े होने की इच्छाओं को ख़तम कर देता है। समाज का कहना है कि लड़कियाँ कुछ नहीं कर सकती। लेकिन हमारे विद्यालय में एक पीटीआई मैम आईं और उन्होंने हम सबको जागृत किया कि लड़कियाँ बहुत कुछ कर सकती हैं। उन्होंने हमें हॉकी खेलना सिखाया और तभी से मेरे मन में यह इच्छा जागृत हुई कि मैं भी एक हॉकी चैम्पियन बन सकती हूँ।

मैं अपने जीवन में एक हॉकी टीचर बनना चाहती हूँ और समाज को बताना चाहती हूँ कि लड़कियाँ भी कुछ कर सकती हैं। अपने बल पर खड़ी हो सकती हैं। मैं एक हॉकी टीचर बनकर उन लड़कियों को जागृत करना चाहती हूँ जो कुछ करना तो चाहती हैं पर समाज और परिवार की वजह से कुछ नहीं कर पाती। मेरे साथ मेरे परिवार का पूरा सपोर्ट है। लेकिन समाज हमेशा यही कहता है कि लड़कियाँ कुछ नहीं कर सकती। मैं लड़कियों को उन जंजीरों

से निकालना चाहती हूँ जो उनकी इच्छा को मार देती हैं। मैं एक बार अजमेर डिस्ट्रिक्ट में खेलकर आ चुकी हूँ और आगे भी खेलना चाहती हूँ। मैं अपने सपनों को पूरा करना चाहती हूँ। मेरे माता–पिता को भी मुझ पर पूरा विश्वास है, मुझको लेकर उनकी भी कुछ उम्मीदें हैं। मैं उन उम्मीदों को पूरा करना चाहती हूँ। उनके विश्वास को बनाए रखना चाहती हूँ। मैं कुछ बनकर उन माताओं–पिताओं को भी बताना चाहती हूँ जो अपनी लड़कियों को बस घरेलू काम में रखते हैं। उन लड़कियों के मन में जो कुछ बनने की इच्छा है उसे ख़त्म कर देते हैं।

मेरे इन सपनों को पूरा करने के लिए समाज से मैं क्या उम्मीद रखती हूँ?

मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए समाज से यह उम्मीद रखती हूँ कि वह लड़कियों को पूरा सपोर्ट करे। उनके मन में कुछ बनने की इच्छा जागृत करे और उनको उत्साह दे कि लड़कियाँ कुछ कर सकती हैं। लड़कियाँ भी अपने माँ–बाप का नाम रोशन कर सकती हैं। उन्हें यह कह कर स्ट्रांग बनाएँ कि लड़कियों को किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। समाज को चाहिए कि वह लड़कियों को ज़्यादा सपोर्ट करे न कि ऐसा कहता रहे कि लड़कियाँ कुछ नहीं कर सकती। समाज को चाहिए कि वह लड़कियों को आज़ादी दे, उन्हें आज़ाद रहने दे। उन्हें किसी चीज़ की रोक–टोक न करे, और उन्हें सेल्फ़ डिफेंस की शिक्षा दे। जो लड़कियाँ बाहरी माहौल से डरती हैं, समाज उन्हें बाहादुर बनाए। अपने सपनों को पूरा करने की उनके मन में इच्छा जागृत करे। अगर यह समाज लड़कियों की सहायता करे तो हर लड़की अपनी इच्छा को पूरा कर सकती है।

समाज में लड़कियों से भेदभाव पर एक दुर्गा रावत की एक कविता–

इतनी सी तमन्ना थी कि, छू लूँ कभी आसमान को
पर नींद खुली तो बाहर देखा, इस दुनिया के
उस बुरे हाल को
फिर सोचा मैंने मन में कि छोड़ दूँ इस माया–मोह के जाल को
जब देखा घर, गाँव, समाज में लड़का–लड़की में हो रहे भेदभाव को
फिर हुआ सवेरा आ पहुँचे हम आठ मार्च को
बेटी–बचाओ, बेटी पढ़ाओं के शुरू हो रहे जंजाल को
धीरे–धीरे ये भी भूल गए गए लोग
आ गए अपनी औकात पे
फिर से शुरू होने लगे समाज में
भेदभाव लड़का–लड़की में
क्यों लड़कियों को बंधन में रखा जाता है

और लड़को को आज़ाद पंछी की तरह रखा जाता है
काम करने में लड़कियों को ही ज़िम्मेदार माना जाता है
और लड़को को उनका आने वाला भविष्य माना जाता है
लड़कियाँ पढ़ने में कितनी भी होशियार हों
उसे कभी सम्मान नहीं दिया जाता है
पर लड़का कितना भी निकम्मा हो
उसे उतना ही सिर पर बिठा दिया जाता है

— मंतशा परवीन, 15, राजस्थान

वर्ल्ड टूर की चाह

मेरा पूरा नाम मनीषा रीता देवी संजय राम है। मैं 16 वर्ष की एक लड़की हूँ। कुछ दिनों पहले ही मैंने साइंस से अपनी 12वीं पूरी की है। मैं एक निम्न आय वाले परिवार से आती हूँ। मेरा एक सपना है कि मैं पूरी दुनिया घूमूँ। दुनिया के हर कोने में जाऊँ। वहाँ की अलग–अलग भाषा, वेशभूषा, भोजन, सबकुछ देखना और सीखना चाहती हूँ। मैं मस्ती करना चाहती हूँ। मुझे अलग–अलग तरह के खाने का शौक है। इसलिए मैं चाहूँगी कि जब मैं दुनिया की सैर करूँ तब मैं दुनिया के अलग–अलग खाने का आनंद ले सकूँ। मैं दुनिया की सैर इसीलिए करना चाहती हूँ, ताकि मैं अपनी इस खूबसूरत दुनिया को देख सकूँ। मैं दुनिया के अलग–अलग लोगों से मिलना चाहती हूँ, उनसे बात करना चाहती हूँ। उनसे मिलकर उनके देश के बारे में जानना चाहती हूँ। अक़्सर ऐसा होता है कि लड़कियों को कभी अकेले बाहर नहीं जाने दिया जाता है लेकिन मैं जाना चाहती हूँ और घूमना चहती हूँ। मुझे दुनिया के अलग–अलग हिस्से में बसे लोगों के रहन–सहन के बारे में जानने में भी रुचि है।

अपने इस सपने को पूरा करने के लिए, मैं पहले खुद फाइनेंसियली इंडिपेंडेंट बनूँगी और खुद को स्वस्थ भी रखूँगी। इसके लिए मुझे एक अच्छी सी जॉब चाहिए होगी। इसीलिए मैं सबसे पहले अपना ग्रेजुएशन पूरा करूँगी। मुझे रेलवे में जॉब करनी है इसलिए मैं रेलवे में जॉब के लिए तैयारी करूँगी, वो भी मेडिकल के फील्ड में।

इसी के साथ–साथ मैं अपने जीवन में सोसल वर्क भी करना चाहती हूँ। हमारी बस्ती में 'वाचा' एक चैरिटेबल ट्रस्ट है, जो कि एक संस्था है। यह संस्था महिलाओं और किशोरियों के साथ मिलकर काम करती है और उनकी मदद करती है। उन्हें जागृत करने का काम करती है। उनके अधिकारों के बारे में उन्हें बताती है। मैं इस संस्था से सात सालों से जुड़ी हुई हूँ। मैंने वाचा संस्था से बहुत कुछ सीखा है और जागरूक भी हुई हूँ। इस संस्था की वजह से अपनी बस्ती में मैंने लोगों को जागरूक करने की कोशिश की है। लोगों की मदद भी की है और मैं आगे भी लोगों की मदद करना चाहती हूँ।

मैं छोटे बच्चों के साथ काम करना चाहती हूँ। मैं उन्हें 'गुड टच' और 'बैड टच' के बारे में बताना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि किसी भी छोटे बच्चे के साथ में कुछ भी बुरा न हो। अगर कभी उनके साथ कुछ गलत होता है तो वे बच्चे आवाज़ उठा सकें और खुद की सुरक्षा कर सकें। इसलिए मैं अपनी बस्ती के बच्चों के साथ ज़्यादा समय बिताती हूँ। उनसे बात करती हूँ। उनके साथ खेलती और मस्ती करती हूँ और उन्हें कुछ नई–नई चीजों के बारे में बताती रहती हूँ। इसे करने के लिए मुझे बहुत ज़्यादा मेहनत करनी होगी और मुझे यह काम लगन से करना होगा।

सपना हर कोई देखता है और उसे साकार करना चाहता है। अपने सपनों को साकार करने का सबसे अच्छा तरीका यह होता है कि आप कभी भी हार ना मानें और कोशिश करते रहें। जब तक आप अपने सपने को नहीं छोड़ोगे, तब तक आपका सपना भी आपको नहीं छोड़ेगा। यदि में प्रयास करूँ और सही योजना बनाऊँ, तो मैं अपने सपने को पूरा कर सकती हूँ।

मैं अपने परिवार से यही सहायता चाहूँगी कि वो मुझे समझें। मुझे मेरी पढ़ाई पूरी करने दें। मुझे बाहर जाकर काम करने दें। मुझे सही काम करने से ना रोकें और मुझे दुनिया की सैर करने की इजाज़त दें। ताकि मैं अपना सपना साकार कर सकूँ।

धन्यवाद!

– मनीषा राम, 16, महाराष्ट्र

फ्लोरेन्स नाइटिंगेल

मेरा नाम ज्योत्सना है। मैं मोरी गेट के ठन्के सेंटर से हूँ। मैं अपने सपने के बारे में कुछ करना चाहती हूँ। हर इंसान का अपना एक सपना होता है लेकिन हमें अपना लक्ष्य चुनना पड़ता है। सभी का खुद को सबसे बेहतर बनाने का सपना होता है। सपना वह नहीं होता जो हम सोते वक़्त रात में देखा करते हैं। सपने वे होते हैं जो हमारी नींद उड़ा देते हैं। हर इंसान अपने सपने को ऊँची उड़ान देना चाहता है। सपने को पूरा करने के लिए हर इंसान में मेहनत लगन और जज़्बा होना चाहिए। तभी व्यक्ति अपना सपना पूरा कर पाता है। किसी ने सच ही कहा है, 'डर गए, समझो मर गए'। लेकिन डर के आगे अपने सपनों को नहीं त्यागना चाहिए। सपने को हमेशा हमें दिल से देखना चाहिए। और वह भी बड़ा सपना देखना चाहिए। क़ामयाबी ही हमारी पहचान होती है। सभी लोगों की तरह मैंने भी एक सपना देखा है कि मैं लोगों की सेवा करूँ। मैं खूब पढ़ाई और मेहनत करके देश के लोगों की सेवा करना चाहती हूँ। पूरे ईमानदारी से लोगों की अपने तन, मन और धन से सेवा करना चाहती हूँ। लोगों की सुरक्षा ही मेरी सुरक्षा है। मैं अपने करियर में ऐसा काम करना चाहती हूँ जिससे मुझे और मेरे परिवार को सम्मान मिले। मेरा सपना है कि मैं नर्स बनूँ। और मरीजों के लिए नर्स बनकर मदद करूँ। एक मरीज़ के जीवन में नर्स का बहुत बड़ा योगदान होता है। कोई भी मरीज़ जब अस्पताल में अपना इलाज करवाने के लिए आता है तो डॉक्टर के माध्यम से उसका इलाज किया जाता है। डॉक्टर द्वारा इलाज करने में नर्स अपना योगदान देती है। डॉक्टर तो आपको देखकर बस पेपर पर लिख देते हैं लेकिन उसको कब और कितने समय

बाद क्या देना है, इसकी देखभाल नर्स ही करती है। नर्स ही मरीज़ को सही समय पर दवा खिलाती है। नर्स के अंदर दया–भाव होता है। पूरी दुनिया में नर्स लोगों की मेहनत को देखकर विश्व भर में नर्स दिवस भी मनाया जाता है। एक नर्स का जीवन कठिनाइयों भरा होता है, क्योंकि हर परिस्थिति में उसको बहुत ध्यान देना होता है। किसी मरीज़ को कुछ भी दिक्कत होती है तो सबसे पहले नर्स को ही बुलाया जाता है। पूरी दुनिया जानती है कि नर्स से अच्छी देखभाल और कोई नहीं कर सकता है। नर्स का सबसे बड़ा कर्तव्य होता है कि किसी भी मरीज़ की सही तरीके से देखभाल करना। नर्स को मरीज़ की देखभाल बिल्कुल एक बच्चे की तरह करना होता है। नर्स के जीवन का सबसे बड़ा और अहम हिस्सा मरीज़ होता है। जिस तरह एक माँ अपने बच्चे की देखभाल करती करती है, उसी तरह एक नर्स भी अपने मरीज़ का सही ढंग से देखभाल करती है। दुनिया में नर्सिग सेवा की शुरुआत करने वाली सिर्फ़ एक ही महिला थी जिसका नाम फ्लोरेंस नाईटिंगेल था। जिन्होंने रोगियों के जीवन को कठिनाइयों से बाहर निकालने के लिए कई महिलाओं को ट्रेनिंग दी। फ्लोरेंस नाइटेंगल के अथक प्रयासों के कारण ही नर्स के पेशे की उत्पत्ति हुई थी। उनके इस काम की प्रशंसा पूरी दुनिया करती है। मैं चाहती हूँ कि मेरा परिवार इसमें मेरी पूरी सहायता करे। मेरी पूरी फ़ेमिली मुझे इस काम के लिए पूरा सपोर्ट करती है और मेरा हौसला भी बढ़ाती है। मेरा परिवार चाहता है कि मैं एक लाइफ जिऊं। वे मुझे किसी भी काम के लिए मना नहीं करते। वे कहते हैं कि लोगों की सेवा करना अच्छा काम है। मेरा परिवार चाहता है कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो जाऊं। हर माँ बाप चाहते हैं कि मेरा बच्चा ऊँची उड़ान उड़े और वह जीवन में आगे बढ़ता रहे। आज की युवा पीढ़ी बहुत ही समझदार है और वह अपने बच्चों को बड़े–बड़े सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करती है। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे ऊँची उड़ान उड़ें और उनका नाम रोशन करें। माँ–बाप को हमेशा अपने बच्चों को सपने देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। फिर चाहे कितने भी बड़े सपने क्यों ना हों। नई जनरेशन में कई माता–पिता ऐसे हैं जो अपने बच्चों के हायर स्टडीज़ के लिए फाइनेंशियल प्लानिंग करते हैं। इसलिए पैरेंट्स को शुरू से ही सेविंग करनी चाहिए।

– ज्योत्सना, 20, उत्तर प्रदेश

कला की दुनिया में

मेरा नाम निक्की कुमारी है। मैं बोकारो जिले के कसमार गाँव की रहने वाली हूँ। मेरा सपना है की मैं एक चित्रकार बनूँ। मेरे पापा का नाम परमेश्वर कपरदार है और माँ का नाम अंजु देवी है। हम लोग चार भाई–बहन हैं। मैं एक मध्यम परिवार से हूँ। मेरे परिवार में कुल आठ सदस्य हैं। जिसमें मेरे दादा जी और दादी जी हम लोगों के साथ में रहते हैं। मेरे पापा एक छोटे–मोटे बिजली मिस्त्री हैं। किसी तरह से हमारा घर चल रहा है और हम चारो भाई बहन सरकारी स्कूल में पढ़ाई कर पा रहे हैं।

जब मैं नौ साल की थी तब से ही मैंने पैंटिंग करना शुरू कर दिया था। मैं स्कूल में भी प्रथम प्राइज जीत चुकी हूँ। तभी से ही मेरे मन में ख़्याल आया कि क्यों न मैं इससे और भी अच्छी चित्रकार बनूँ। मुझे जब भी मौका मिलता है तो मैं चित्रकारी कर ही लेती हूँ। मैं अक्सर यह सोचती रहती हूँ की काश मेरे परिवार में पैसे की तंगी न होती तो मैं अपने पापा से कह पाती कि मुझे भी चित्रकारी के क्षेत्र में जाना है। लेकिन अपने घर की आर्थिक स्थिति को देखने के बाद मैं अपने मन की बात पापा से नहीं कह पाती हूँ। काश मेरा सपना पूरा हो जाता तो मैं भी अपने पापा की सहायता करती और अपने भाई को भी अच्छे से स्कूल में पढ़ाती। लेकिन मैं अपने पापा की दैनीय स्थिति को देख कर अपने मन की बात बता ही नहीं सकती हूँ।

हम चार भाई–बहनों में हम तीन बहनें हैं और एक भाई है। भाई सबसे छोटा है और मैं तीसरे नंबर पर आती हूँ। घर में कमाने वाले सिर्फ़ एक हैं। कई बार मुझे संस्था से जुड़ने के बाद

चार्ट पेपर पर पेंटिग करने का भी मौका मिला। संस्था से मुझे इनाम भी मिला। तब मुझे और भी चित्रकारी में रूची होने लगी। मैं पेंटिग सीखना चाहती हूँ और आगे अच्छे से पेंटिग करके चित्रकारी के क्षेत्र में एक अलग पहचान बनाना चाहती हूँ। लेकिन मुझे आगे का रास्ता दिखाने वाला कोई नहीं है। चारो तरफ अंधेरा ही अंधेरा है। जब भी मैं अपने घर में पेंटिंग बनाती हूँ तो मुझे टोका जाता है। घर के लोग हमेशा कहते हैं कि ये सब काम नहीं देने वाला है, पढ़ा करो। इससे सिर्फ़ नोटबुक बरबाद होता है। हमारे पास उतने पैसे भी नहीं हैं कि बार–बार नोटबुक खरीद सकें। पढ़ाई करो और आगे चलकर कुछ बनो। लेकिन मुझे ज़्यादा पढ़ाई करना पसंद नहीं है, पढ़ाई में मेरा मन नहीं लगता है। जितना कि मुझे पेंटिंग करने में मन लगता है। पर घर की आर्थिक स्थिति को देखकर मन को मना लेती हूँ। सोचती हूँ कहीं बड़े क्षेत्र में मुझे अपनी कला को आगे बढ़ाने का मौका तो ज़रूर मिलेगा। मैं हार नहीं मानूँगी और पेंटिग करती रहूँगी। जब भी मुझे किसी संस्था में या कोई प्रशिक्षण के दौरान पेंटिंग करने का मौका मिल जाता है तो मैं चित्रकारी कर ही लेती हूँ और आगे भी करूँगी। उस चित्रकारी करने से मुझे दिल से खुशी होती है। मैं अपने जीवन में चित्रकारी के ही क्षेत्र में आगे बढ़कर यह सीख देना चाहती हूँ कि जीवन में सिर्फ़ पढ़ाई करके ही लोग अपनी पहचान नहीं बना सकते हैं। हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना सकते है। मैं अपनी मंज़िल को छूना चाहती हूँ ताकि मुझे देखकर गाँव–घर में जो पुरानी सोच है कि लड़कीयाँ सिर्फ़ खाना ही बना सकती हैं, सिर्फ़ घर के काम ही कर सकती हैं, वह सोच दूर हो जाए और कोई भी अपनी बेटियों को बोझ ना समझे। इसके लिए मैं सरकार से कुछ सहायता चाहती हूँ कि मेरे जैसी लड़कियों के लिए कोई प्लेटफॉर्म हो जहाँ वह छोटे–छोटे मंच से होते हुए आगे बढ़ें।

सरकार हमारी मदद करे, जिससे मेरे जैसे बहुत से लड़कों और लड़कियों का सपना पूरा हो सके। सबकी अपनी–अपनी पहचान है। मुझे मदद चाहिए सरकार से ताकि मैं अपने सपनों को पूरा कर पाऊँ और एक अलग पहचान बना पाऊँ। ताकि जो व्यक्ति अपनी कला को अंदर दबा के रखे है उस कला को वह बाहर निकाल सके। क्योंकि हमारे गाँव में कला को ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाता। मुझे बहुत कुछ आता है जैसे– डांस, मेंहदी लगाना, चित्रकारी करना, गाना–गाना लेकिन हमारे गाँव में इनका महत्व ही नहीं है। यहाँ पर ऐसी सुविधा भी नहीं है कि मैं जा के चित्रकारी की क्लास कर सकूँ। अपने सपनों को पूरा करके अपने माता–पिता का गर्व से सर ऊँचा कर सकूँ और गाँव में एक नई पहचान भी बनाती। कभी–कभी मुझे बहुत ही बुरा महसूस होता है। मेरे दिमाग में कई तरह के सवाल आते हैं, जैसे– की काश मैं ग़रीब परिवार से नहीं होती या छोटे से गाँव में पैदा नहीं होती तो मैं अपने सपनों को पूरा कर पाती। क्योंकि शहर में डांस हो या चित्रकारी या फिर गायन, सभी कला को शहर में

निखारा जाता है। जगह–जगह पर स्कूल और ट्यूशन चलाया जाता है। जबकि हमारे गाँव में संगीत क्लास, डांस क्लास, पेंटिंग क्लास आदि की सुविधा नहीं होती है। इसलिए मन कभी–कभी दुखी हो जाता है।

कैसे अपने सपनों को साकार करें? कोई हमे मार्गदर्शन करने वाला नहीं है। बहुत से लोग अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाते हैं। लोग जीवन में समझौता कर लेते हैं लेकिन मैं अपने सपनों को नहीं मार पाऊँगी। मैं अपने हुनर को ज़िंदा रखी हूँ।

मैं मेहँदी लगाने का भी काम करती हूँ। मैं आस–पास के गाँव में मेहंदी लगाने भी जाती हूँ। क्योंकि आस–पास के लोगों को मेरे बारे में मालूम चल गया है तो वे मुझे मेहँदी लगाने के लिए आमंत्रित भी करते हैं। जब भी हमारे गाँव में किसी भी लड़की की शादी होती है तो मैं दुल्हन को मेहँदी लगाने जाती हूँ। जिससे मुझे जो पैसे मिलते हैं वो पैसा मैं अपनी पढ़ाई में उपयोग करती हूँ। जिससे थोड़ी बहुत मदद मिल ही जाती है। लेकिन मैं अपने सपनों को पूरा करने की कोशिश ज़रूर करूँगी और मुझे यकीन है कि आगे चलकर मैं एक अच्छी चित्रकार बनूँगी।

– निक्की कुमारी, 18, झारखंड

आर्टिस्ट बनना है

मेरा नान हेमा दानू हैं। मैं कक्षा 10वीं में पढ़ती हूँ। मैं जीवीवी के छात्रवास में रहती हूँ। मेरे गाँव का नाम चौड़ा स्थल है। मेरी माता का नाम श्रीमती आनंदी देवी है। मेरे पापा का नाम हरीश चन्द्र सिंह दानू है। मेरा जन्म 7 अप्रैल 2007 को हुआ था। मेरी दो दीदी हैं। मेरा सपना है कि मैं एक आर्टिस्ट बनूँ। मैं जानती हूँ कि सभी सपने देखते हैं और मैं भी कुछ वैसा ही सपना देखती हूँ कि मैं एक आर्टिस्ट बनना मैं चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि सभी के सपने साकार हों। ज़्यादातर गाँव के बच्चों के सपनें साकार हों क्योंकि जब वो 12वीं से पास करते हैं न,उसके बाद उनको शादी के बंधन में बांध दिया जाता है। इस कारण वो अपने सपनों को पूरा नहीं कर पाते हैं। मैं चाहती हूँ कि उनके भी सपने पूरे हों और वो भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। मैं इन बच्चों के लिए आवाज़ उठाना चाहती हूँ। जीवन में लक्ष्य का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। बिना लक्ष्य के, बिना उद्देश्य के भटकना, जीवन को नीरसता से भर देता है। मेरा सपना एक सूर्य की तरह है जो सभी को रोशनी, गर्मी, नया जीवन और ऊर्जा देता है। वैसे ही मैं भी इस देश, इस दुनिया और अपने उतराखण्ड को बदलना चाहती हूँ। मेरा सपना व लक्ष्य आर्टिस्ट बनने का है। मैं एक दिन शायद अपने इस सपने को पूरा कर सकूँ। वैसे मुझे लगता है कि मैं यह पूरा कर भी सकती हूँ।

मैं चाहती हूँ कि सभी को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महनत करनी चाहिए। मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बहुत मेहनत करती हूँ। मैं एक दिन आर्टिस्ट बनकर सभी को दिखाना चाहती हूँ कि लड़कियाँ भी बहुत कुछ कर सकती हैं। जीवन में लक्ष्य को प्राप्त

करने के लिए ज़्यादातर कठिनाइयाँ आती हैं। हमें उससे लड़ना आना चाहिए। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ जब मैं छोटी थी तो मेरे घर कि आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। मेरे पापा का पैर टूट गया था। मेरी मम्मी की छोटी उम्र में ही शादी हो गई थी। हमने इस मुसीबत का सामना काफ़ी समय तक किया। इसमें लगभग 3 लाख का बिल आया। हमने इस मुसीबत का सामना तो कर लिया लेकिन दूसरी मुसीबत आ गयी। मेरी मम्मी का हाथ टूट गया। उसमें लगभग 70 हज़ार का खर्चा आया। हम कर्ज़ में डूब गए। फिर मेरी मम्मी ने रोड पर पत्थर ढोना शुरू किया। सुबह से शाम तक काम करती रहती थी। पैसे नहीं होने के कारण हम 2 या 3 साल स्कूल ही नहीं गए। हमारे 2–3 साल तो बर्बाद हो गए। मेरी मम्मी ने सोचा कि मेरे बच्चों का भी तो कुछ एम होगा। उनका भी कुछ न कुछ तो सपना होगा। फिर किसी ने कहा कि बागेश्वर में एक अनाथ आश्रम है तो मेरी मम्मी ने हमें उस हॉस्टल में डाला। वहाँ 1 से 5 तक की पढ़ाई होती थी। वहाँ सब बहुत छोटे बच्चे थे। मेरी मम्मी ने सोचा कि वह एक सही रास्ते पर हमें ले जा रही हैं लेकिन दूसरी और अपने बच्चों को छोड़कर जा रही हैं। मेरे जीवन का लक्ष्य यही है कि मैं पूरे देश, पूरे भारत को बदल सकूँ।

जब मैं छोटी थी तब से आज तक मैं हॉस्टल में ही पढ़ी हूँ। मैंने पहले बागेश्वर में पढ़ा। वहाँ 1 से 5 तक का ही स्कूल था। वहाँ सभी कर्मचारी मुझे बहुत ही अच्छा मानते थे। वहाँ एक टीचर और तीन भोजन माता थी। वहाँ एक प्रिंसिपल थे। एक टीचर थीं जो हमारे लिए छोटे–छोटे कपड़े बनानी थी। एक टीचर दवाइयाँ देती थीं और नर्स का काम भी करती थीं। वहाँ के प्रिंसिपल का नाम हेम तिवारी सर था। वहाँ एक दादी भी थीं वो इतनी बड़ी थी कि हम उन्हें जब सर उठा के देखते थे तो जैसे आसमान को देखते हैं। फिर जब मैंने 5 पास कर लिया तो मैं कपकोट के हॉस्टल उतरौड़ा में आ गयी। वह भी मुझे बहुत अच्छा लगा। लेकिन सबसे अच्छा बागेश्वर लगता था। बागेश्वर में हम कहीं नहीं जाते थे लेकिन उतरौड़ा में हम हर महीने घूमने जाते थे। फिर भी मुझे उतरौड़ा अच्छा नहीं लगता था। वह 6 से 8 तक का स्कूल था। वहाँ जो टीचर थे उनमे से एक प्रिंसिपल थी। उनका नाम श्रीमती अंजूम जहाँ है। अब मैं कपकोट रा.इ.को. में पढती हूँ। यहाँ 12 कक्षा तक का स्कूल है। यहाँ भी बहुत अच्छा लगता है लेकिन यहाँ लड़को का भी स्कूल है। इसलिए अच्छा नहीं लगता है। यहाँ के प्रिंसिपल का नाम श्री बंसीलाल सर है। यहाँ 8 मैंम और 7 सर हैं।

मेरी भावनाएँ हैं कि मैं अपने भारत को बदल सकूँ और भारत को महान बना सकूँ। ताकि हम पाकिस्तान जैसे देश को हरा सकें। मेरी भावना यह भी है कि हमारा देश स्वच्छ व स्वस्थ रहे। मैं सभी से निवेदन करती हूँ कि कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में ही डालें और जहाँ पर भी गंदगी दिख रही है, उसे साफ करें, ताकि हम स्वस्थ रहें। हम लोग स्वस्थ बच सकें। ज़्यादातर

बीमारी के कारण ही हमारी मृत्यु हो जाती है। बीमारी तब होती है जब हमारे आस–पास का पर्यावरण गंदा होता है। जब प्रदूषण फैला होता है, फैक्ट्री का धुआं वायु में होता है। पेड़ कट रहे होते हैं और ऑक्सीजन कम हो जाता है। लोगों को साँस की बीमारी पैदा हो जाती है। लोग उस बीमारी से ग्रस्त हो जाते हैं। मेरी भावना है कि अगर पेड़–पौधों को लगाएँगे तो साँस की बीमारी का अंत हो जाएगा। और कूड़ा इधर–उधर न फेंक कर कूड़ेदान में डालेंगे तो डेंगू, मलेरिया जैसे रोगों से बच सकते हैं। ऐसे में हम स्वस्थ रहेंगे।

अभी मैं 10वीं में पढ़ती हूँ। मेरा लक्ष्य है कि मैं एक ड्राइंग आर्टिस्ट बनूँ। मेरी अभी तक की तैयारी तो बहुत अच्छी है। हाँ, जब कभी मैं प्रतियोगिता में भाग लेती हूँ तो पहला या दूसरा या तीसरे पर आती हूँ। मैंने आज तक सिर्फ़ दो बार ही भाग लिया है। उसका टॉपिक था– मेरे सपनों की उड़ान। उसमें मैं फ़र्स्ट आई। मुझे गोल्ड मेडल मिला। मुझे खुशी हुई कि मेरी, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश अच्छी है। मेरी तैयारी बहुत अच्छी है।

इसलिए मेरा सपना है कि मैं एक अच्छी ड्राइंग आर्टिस्ट बनूँ।

धन्यवाद!

– हेमा दानू, 15, उत्तराखंड

बिहार पुलिस

मेरा सपना है कि मैं पढ़–लिखकर एक अच्छी इंसान बनूँ और अपने परिवार का और अपने देश का नाम बढ़ाऊँ और मैं बिहार में पुलिस बनना चाहती हूँ। मैं अपने जीवन में बहुत ही अच्छा काम करना चाहती हूँ। इन सपनों को पूरा करने के लिए मेरे परिवार से मुझे बहुत ही ज़्यादा सपोर्ट मिलता है।

मेरे सपने हैं कि मैं पढ़–लिखकर एक अच्छी और बड़ी इंसान बनना चाहती हूँ? और समाज में नाम रोशन करना चाहती हूँ? मेरे इन सपनों को पूरा करने के लिए हमारे घर और समाज ने यही कहा है कि तू वो बन, पढ़–लिख कर जो तू बनना चाहती है। इसलिए मैंने इस साल मैट्रिक की परीक्षा दी थी। और मेरा रिजल्ट प्रथम आया है। मेरे सपनों को लेकर और इसे पूरा करने के लिए समाज मुझे उम्मीद से देख रहा है।

हमारा नाम पूरे देश, पूरी इंडिया में फैले और मेरी ख़बर हर इंसान तक पहुँचे। मैं इतना पढ़ना भी चाहूँगी ताकि सरकार मेरे लिए बहुत कुछ करे और सभी जनता के लिए भी बहुत कुछ करे।

– आशिया परवीन, बिहार

पत्रकार बनने से मुझे कोई नहीं रोक सकता

संसार में जितने भी मानव हैं सभी का कुछ न कुछ लक्ष्य होना चाहिए। बिना लक्ष्य के वह उस नौका के समान है जिसका कोई किनारा नहीं है। ऐसी नौका कभी भी डूब सकती है और कहीं भी चट्टानों से टकराकर चकनाचूर हो सकती है। यानि उससे उस मनुष्य का जीवन बेकार हो सकता है। इसीलिए हर मनुष्य को कोई न कोई लक्ष्य रखना चाहिए, तभी वह जीवन में आगे बढ़ सकता है।

मैंने भी एक लक्ष्य तय करके रखा है कि मैं बड़ी होकर पत्रकार बनूँगी। आजकल यह सबसे प्रभावशाली स्थान है। पत्रकारिता, प्रचार माध्यम भी है और ताजा समाचारों के लिए भी होती है। जिसमें प्रतिदिन की ताजा ख़बरें होती हैं। इसलिए समाचार–पत्र कभी बंद नहीं होने वाला है। मैं चाहती हूँ कि मैं पत्रकार बनकर देश तोड़ने वालों के विरुद्ध संघर्ष करूँगी।, समाज को खोखला बनाने वाली कुरीतियों के ख़िलाफ़ जंग लड़ूँगी, और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वालों का भंडाफोड़ करूँगी। मैं पत्रकार इसलिए बनना चाहती हूँ क्योंकि मुझे देश से भ्रष्टाचार को हटाना है। जब मैं पत्रकार बनूँगी तो मेरा मुख्य लक्ष्य होगा कि मैं देश के भ्रष्टाचारियों को हटाऊँ।

वैसे तो मुझे पहले से ही झूठ बर्दाशत नहीं है। भ्रष्टाचारों को दूर करने के लिए मैं पूरी कोशिश करती हूँ। मुझे सिर्फ़ सच्चा इंसान ही पसंद है। एक दिन की बात है, मेरे पड़ोस में एक पत्रकार आते थे, जिसका नाम सागर था। वे भ्रष्टाचार विरोधी विभाग के प्रमुख पत्रकार हैं। उन्होंने पिछले वर्ष गैस एजेंसी की धांधली को अपने लेख लिखकर बंद करवाया था। नकली दवा बेचने वाले

कई डॉक्टरों को भी पकड़ा और साथ ही हमारे गाँव में भी ऐसे बहुत सारे गुंडे थे जो सड़क पर आते–जाते हुए लोगों को परेशान करते थे, उन सभी को जेल भिजवाया। इन कारणों से मैं उनका आदर करती हूँ। हाँ, पर मुझे पता है कि पत्रकार बनने में बहुत सारी परेशानी है और पत्रकार को पैसा भी बहुत कम मिलता है। परंतु मैं पैसे के लिए पत्रकार नहीं बनना चाहती हूँ।

मैं देश में चल रही बुराइयों को हटाना चाहती हूँ। मेरे जीवन का लक्ष्य होगा, समाज में कुरीतियों और भ्रष्टाचार को समाप्त करना। लेकिन केवल सोचने भर से लक्ष्य नहीं मिलता, उसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए मुझे भी कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। और मैं भी कड़ी मेहनत करना शुरू कर दी हूँ। मैं डेली न्यूज पेपर पढ़ती हूँ, समाचार देखती हूँ, रेडियो सुनती हूँ। साथ ही मैं हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा को भी जानने और सीखने की कोशिश करती रहती हूँ। मैं दिन रात एक करके तैयारी कर रही हूँ। वह दिन दूर नहीं जब मैं पत्रकार बनकर समाज की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त कर लूँगी।

मैं पत्रकार बनना चाहती हूँ लेकिन मैं एक लड़की भी हूँ। मैं पत्रकार बनने के लिए कितना भी संघर्ष कर लूँ, कितनी भी कोशिश कर लूँ और मेहनत करूँ। लेकिन समाज वाले तो यही कहेंगे कि तुम एक लड़की हो, तुम्हारे लिए यह काम ठीक नहीं है, तुम यह नहीं कर पाओगी। कहेंगे, थोड़ा पढ़ लिख क्या लिया उड़ने लगी हो। लेकिन मुझे पत्रकार बनने से कोई नहीं रोक सकता। मुझे समाज में ऐसा बोलने–कहने वालों की बातों से कोई फ़र्क नहीं पढ़ता। क्योंकि मेरे परिवार वाले मेरे साथ हैं। मेरे पत्रकार बनने से मेरे परिवार वालों को कोई परेशानी नहीं है। उन्हें तो गर्व है कि मेरी बेटी अपनी जान को जोखिम में रखकर यह काम करना चाहती है। उन्हें इस बात का गर्व है कि मेरी बेटी साहसी और निडर है। मेरे परिवार का कहना है कि हमनें तुम्हे चूल्हा–चौका करने के लिए नहीं पढ़ाया। उनका कहना है कि मेरी बेटी पढ़ लिखकर अपनी सोच और अपने दम पर कुछ कर सके। और हाँ, यह बात सच है कि जो परिवार वाले कर सकते हैं उसे समाज या सरकार नहीं कर सकती। क्योंकि जब तक आपके परिवार वाले आपको सपोर्ट न करें तब तक आप कुछ नहीं कर सकते। पत्रकार बनने के लिए अगर हमें कहीं भी पैसों की दिक्कत होगी तो परिवार वाले कहीं ना कहीं से पैसों का इंतजाम कर देगें। और अगर समाज वाले आपको कुछ भला–बुरा कहें तो परिवार ही उन लोगों का सामना करने के लिए आपके साथ खड़ा होगा। आपको यह समझाएँगे कि समाज के लोगों का मुँह तो हम बंद नहीं कर सकते। इसलिए हमें उनकी बातों को अनसुना करके आगे बढ़ना चाहिए और अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए। आपके साथ अगर परिवार वालों का साथ होगा तो समाज क्या, पूरी दुनिया भी आपको, आपके लक्ष्य प्राप्त करने से नहीं रोक सकती।

– लक्ष्मी कुमारी, 14, झारखंड

मम्मी-पापा धूप में मज़दूरी न करें

मेरा सपना टीचर बनने का है। मैं टीचर बनकर अपने जीवन में बच्चों को पढ़ाना चाहती हूँ। ताकि बच्चे भी पढ़कर मेरे जैसी कोई नौकरी कर सकें। जब वे आगे बढ़ेंगे तो उन्हें देखकर मुझे गर्व होगा। जब मैं किसी टीचर को देखती हूँ तो मेरा भी मन टीचर बनने का ही करता है। मैं टीचर बनकर पूरे मन से पढ़ाउंगी, पूरे मन से अपना काम करूँगी। मैं टीचर बनकर अपने परिवार और समाज का नाम, और अपनी स्कूल टीचर, सबका नाम रोशन करना चाहती हूँ। मेरे मम्मी–पापा मजदूरी करते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता है। मैं सोचती हूँ कि मैं कुछ बनना, कुछ कर दिखाना चाहती हूँ। ताकि मेरे मम्मी–पापा ऐसे धूप में मजदूरी न करें। मेरा कोई बड़ा भाई तो नहीं है लेकिन मैं यह भाई की कमी पूरी करना चाहती हूँ। हम पाँच बहनें हैं और मेरा एक ही छोटा भाई है। लेकिन हमारे समाज में लड़कियों को बहुत ही कम पढ़ाते हैं और लड़कियों को नौकरी नहीं कराते हैं। समाज में जिनका परिवार लड़कियों को पढ़ा रहा है, उन्हें भी हमारा समाज पढ़ाने को मना करता है। लेकिन फिर भी मैं अपने समाज से यह उम्मीद रखती हूँ कि मेरा समाज बदले। वह लड़कियों को पढ़ाए और आगे बढ़ाए। उन्हें अपने सपने पूरे करने से रोके नहीं। अपनी इस रूढ़ीवादी सोच को बदले और मेरा समाज आगे बढ़े। समाज के लोग मिलजुलकर रहें। एक दूसरे की सहायता करें। अगर मेरा समाज बदला तो मेरे समाज की लड़कियाँ अपने सपनों को पूरा कर सकेंगी। तब कोई अनपढ़ नहीं रहेगा और लड़के–लड़कियों में भेदभाव नहीं किया जाएगा और सब अपनी लड़कियों को पढ़ाएंगे। मैं अपने परिवार और समाज की इस पुरानी और रूढ़ीवादी सोच को बदलते हुए

देखना चाहती हूँ। मैं अपने समाज से यह उम्मीद करूँगी कि वह मुझे मेरा सपना पूरा करने में साथ दे, ताकि मैं अपना सपना पूरा कर सकूँ। अगर हमारे समाज में एक भी लड़की कुछ बन जाए या कुछ कर दिखाए तो समाज लड़कियों को पढ़ने से नहीं रोकेगा। अगर मैं टीचर बन गई तो पापा–मम्मी और मेरा पूरा परिवार मुझ पर गर्व करेंगे। मेरे पापा को कभी भी बेटे की कमी महसूस नहीं होगी। तब हर लड़की के पापा अपनी बेटी को पढ़ाएँगे और बेटे–बेटियों में फ़र्क नहीं करेंगे। मैं अपना सपना पूरा करना चाहती हूँ लेकिन समाज और परिवार यह सपना पूरा नहीं करने देता है। इसीलिए मैं समाज से और परिवार से क्या उम्मीद करूँगी। हमारे जाति के लोग लड़कियों की शादियाँ करा देते हैं या फिर मजदूरी कराते हैं। इसीलिए हमारे समाज की लड़कियाँ ज़्यादा नहीं पढ़ती हैं। सपने बहुत देखती हैं पर पूरा नहीं होता, क्योंकि समाज भी उनका साथ नहीं देता। जो उनका साथ देते हैं उन्हें भी वह चुप करा देते हैं। हमारे समाज में लड़कों को तो पढ़ाते हैं फिर भी लड़के पढ़ते ही नहीं, वे आवारा घूमते रहते हैं। लड़ाई झगड़े करते रहते हैं। समाज में ज़्यादा से ज़्यादा 12वीं तक ही लड़कियों को पढ़ाते हैं। लेकिन आगे कॉलेज में नहीं पढ़ाते हैं। आगे की पढ़ाई नहीं करने देते हैं और शादी कर देते हैं। लड़कियाँ अपने सपने पूरे नहीं कर सकती हैं। मेरा सपना पूरा तो नहीं हो सकता लेकिन मैंने सपना तो देखा है। मेरा समाज और परिवार ही साथ नहीं देता। हमारा समजा कहता है कि लड़कियों को नहीं पढ़ना क्योंकि लड़कियाँ पढ़ के क्या करेंगी? वे तो ससुराल जाएँगी और वे तो पराई होती हैं। इसीलिए लड़कों को ही पढ़ाते हैं क्योंकि वह ही उनका बुढ़ापे का सहारा होते हैं।

– सीमा नाथ, 17, राजस्थान

सरकार से हमें नौकरी मिलनी चाहिए

अभी के वक़्त में सरकार बहुत सारी मदद करती है। कोविड–19 में भी सरकार ने ग़रीब लोगों को घर बैठे राशन दिया। सरकार ने हमारी मदद की। सरकार का यह फैसला है कि सभी ग़रीब लोगों को फ्री में राशन मिले ताकि वे लोग अपना और अपने बच्चों का पालन–पोषण कर सकें।

सरकार का अर्थ– सरकार एक ही होती है। सरकार के अनेक काम होते हैं। सरकार तो पूरी राज्यसभा और लोकसभा को संभालती है। सरकार में बड़े अध्यक्ष बैठते हैं। सरकार के ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। सरकार, कोविड–19 में भी सभी की मदद कर रही थी।

सरकार का महत्व– सरकार अपनी ज़िम्मेदारी से अपनी भूमिका निभाती है। सरकार ने जो भी काम किए अपने क़ायदे व कानून के साथ किए। सरकार ने गाँवों और शहरों में बहुत से राजकीय संस्थान खुलवाए जैसे – राजकीय चिकित्सालय, सार्वजनिक स्थल, नई जगह स्कूल भी खुलवाए, सरकार ने अस्पताल भी खुलवाए। सरकार ने हैंडपंप भी खुदवाए, सरकार ने ज़मीन से पेट्रोल निकाला, सरकार ने रोड भी बनवाए। सरकार ने पूरे देश में लाइट की व्यवस्था की। सरकार ने पशु–पक्षी के लिए गौशाला बनवाई। सरकार ने कई जगहों पर आवास निर्माण भी करवाए। सरकारी आंगनबाड़ी केंद्र भी खुलवाए। नल भी लगावाए। सरकार ने बैंक भी खुलवाए...आदि।

उपसंहार– हमारी सरकार पूरे राजस्थान की सेवा करती है। इसकी देखभाल करना उनका

धर्म है। ग़रीब लोगों की मदद करती है। सरकार को चाहिए कि जिनके घर में कोई कमाने वाला नहीं हो उनको सरकारी नौकरी देना चाहिए। जिनके पिता नहीं हों, उनको भी किसी काम में सरकारी नौकरी देना चाहिए। देश की उन्नति सरकार पर ही आधारित होती है। जैसे– मेरे घर में हम चार जने रहते हैं। मेरी दादी, मम्मी, बड़ी दीदी और मैं। मेरे पिताजी मेरे बचपन में ही गुजर गए थे। मेरे घर में केवल मेरी मम्मी ही कमाती हैं। पता नहीं वो इतनी ताप (गर्मी) में कैसे कपड़े प्रेस करती होंगी। मेरे परिवार में वही कमाती हैं और घर चलाती हैं। मेरे परिवार में मेरी बुआ भी रहती हैं, वे कुल छः बहनें थीं। अब छः बहनों में से चार बहनें ही रह गई हैं, दो बहनों की मौत हो गई। कभी–कभी वे अपने गाँव आती हैं। वे अपने ससुराल में ही काम–धंधा करती हैं। मेरी मम्मी, हम सब की देखभाल करती हैं।

कभी–कभी हम दोनों बहनें अपने मम्मी की मदद करते हैं। वे इसी धूप और गर्मी में बहुत थक जाती हैं, तब हम दोनों मम्मी के काम में हाथ बंटा देते हैं। मेरी दादी अब बुजुर्ग हो गई हैं, और मेरी दादी को साँस लेने की समस्या है। कभी उन्हें बहुत ज़्यादा साँस चढ़ता है। मेरी मम्मी की भी तबीयत कभी–कभी खराब रहती है। तब मेरी दीदी रात बहुत कपड़े आते हैं। उन्हें सोने की भी फ़ुरसत नहीं मिलती है।

कभी हम दोनों दीदी और मैं, अपनी बुआ के पास छुट्टियों में उनके ससुराल चले जाते हैं। कभी हम अपनी नानी के पास चले जाते हैं क्योंकि वो भी अकेली हैं। मेरी मामी कुछ भी काम नहीं करती हैं। सब काम मेरी नानी करती हैं। मेरे मामा जी भी प्रेस करते हैं और थक जाते हैं। मेरी मामी जी बिल्कुल भी प्रेस नहीं करती हैं। मेरी नानी प्रेस करती हैं। वो जूनियां से उनियारा जाती हैं। मेरी नानी अलग हो गई हैं। मेरे दादाजी भी नहीं हैं। मेरे बड़े पिताजी भी नहीं है। मेरी दीदी अब 12वीं में आ गई और मैं नौवीं में आ गई हूँ। सरकार को कहकर हमें नौकरी मिलनी चाहिए।

– चाँद धोबी, 15, राजस्थान

सीनियर वर्ग

19-25 वर्षीय लड़कियों के लेख

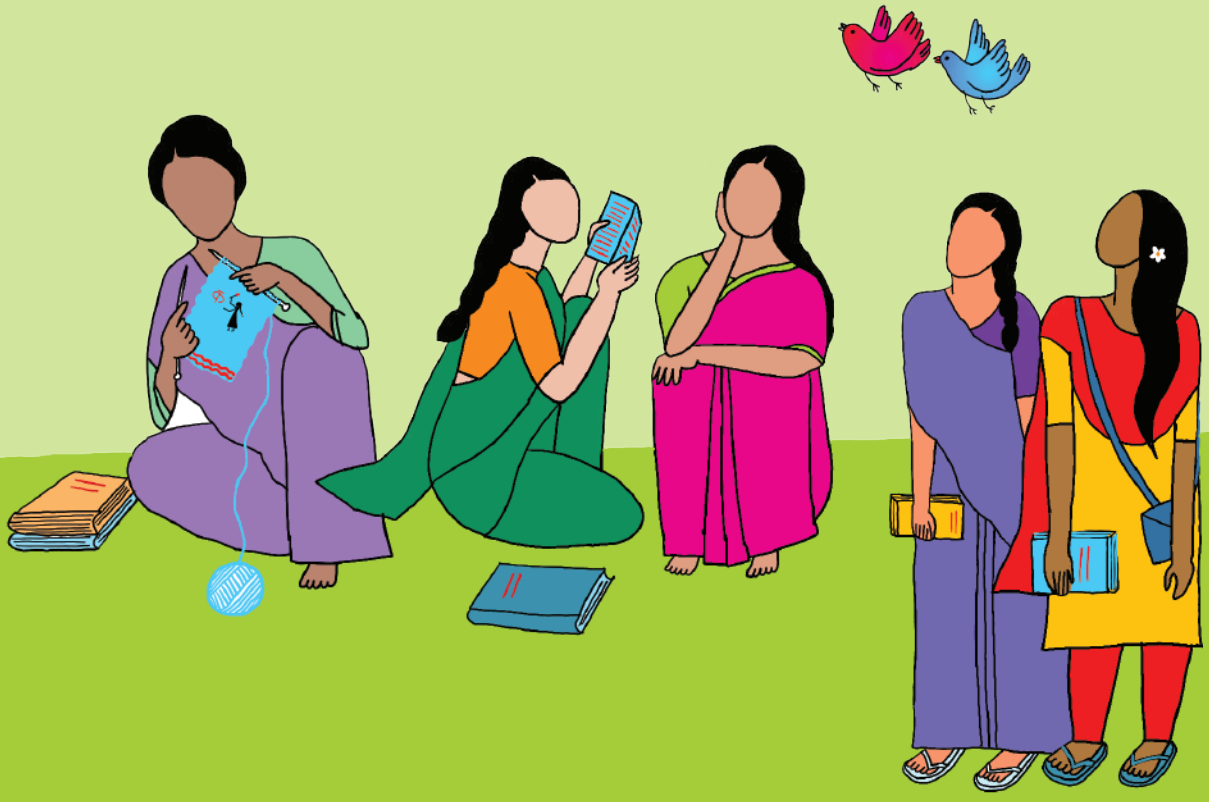

मैं एक फुटबॉल की तरह हो गई हूँ

मेरा नाम शुभांगी सूर्यवंशी हैं। मैं गाँव– गनियारी, जिला– बिलासपुर, छत्तीसगढ़ की निवासी हूँ। मैं एक मध्यमवर्गीय परिवार से हूँ। मेरे माता–पिता मज़दूरी का काम करते हैं, जिससे पूरे घर का खर्चा चलता है। हम चार भाई–बहन हैं, जिनमें मैं सबसे छोटी हूँ। शायद इस कारण मैं घर में अपनी बात नहीं रख पाती और बचपन से अब तक, खासकर मेरे भईया ने मुझ पर अपना दबाव बनाए रखा था। मेरे माता–पिता की तरफ से मुझे बहुत सारी चीजों के लिए आज़ादी हैं। जैसे, मनचाहे कपड़े पहनना, बाहर घूमने जाना और खाना–पीना आदि। लेकिन वे तीन चीजों के लिए हमेशा रोकते–टोकते थे, बाहर खेलना, सहेलियों के घर जाना, खासकर लड़कों से बात करने से। इसी कारण आज भी मेरा कोई लड़का दोस्त नहीं है। बचपन से ही मैं खेलों को छोड़कर स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों, भाषण, नाटक, रंगोली, नृत्य पेंटिंग और एडवेंचर में 10–15 दिन के लिए बाहर जाना, इन सभी चीज़ों में भाग लेती थी। इससे मुझे बहुत सारे इनाम और प्रमाण पत्र मिलते थे। यह सब करने में मेरे माता–पिता मेरा बहुत सहयोग करते हैं। जितना भी खर्चा होता वे कहीं से भी लाकर देते और मेरी सारी इच्छाओं को पूरा करते थे। वे मुझसे कहते थे कि तुम खेल में हिस्सा क्यों नहीं लेती हो? तो मैं उन्हें यह जवाब देती थी कि मुझे मैदान में खेलने वाली लड़कियों की तरह खेलना नहीं आता है क्योंकि आप लोग मुझे बचपन में खेलने नहीं देते थे।

मुझे अपनी किताबों से बहुत लगाव था और मुझे पढ़ना–लिखना अच्छा लगता था। मैं पहली कक्षा से लेकर 8वीं तक अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आती थी। इस बात से मेरे घर के सभी

लोग मुझ पर गर्व करते थे। जब मैं 9वीं कक्षा में आई तब अद्धवार्षिक परीक्षा में पहली बार मेरा गणित विषय में कम नंबर आया। उस दिन मैं बहुत रोई और मैंने खाना भी नहीं खाया। दो–तीन दिन तक उदास रही क्योंकि बाकी विषय के मुकाबले गणित को ज़्यादा समय देती थी। वार्षिक परीक्षा के बाद जब परिणाम आया तब भी मेरा गणित में नंबर कम था।

तब मैंने 10वीं कक्षा में कोचिंग जाने को सोचा। इस बात पर माँ तो तैयार हो गई लेकिन पिता जी ने यह कहक़र मना कर दिया कि अभी पैसों की तंगी है। क्योंकि उस समय मेरे भईया ने दूसरी जाति में अपने पसंद की लड़की से शादी की थी। जिसके कारण हमें जुर्माना भरना पड़ा था और समाज के लोगों को खाना खिलाने में बहुत खर्च करना पड़ा था और कर्ज़ भी हो गया था। घर की स्थिति को समझते हुए मैंने भी ज़्यादा ज़िद नहीं की। उस समय से लेकर अब तक घर का माहौल बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। मैं सिर्फ़ 14 साल की थी फिर भी मेरे घर वाले मेरे ही सामने मेरी शादी की बात करते थे। घर के इस माहौल से मेरी मानसिकता पर बहुत असर पड़ा। मेरा पढ़ाई में भी मन नहीं लगता था और सभी मुझसे प्रथम स्थान पर आने की उम्मीद रखते रहे। जब 10वीं कक्षा का परिणाम आया तो मेरे 43 प्रतिशत अंक ही बने। यह देखकर सभी ने मुझे बहुत कहा–सुना। सिर्फ़ मेरी माँ का कहना था कि कोई बात नहीं पास हो गई न, अब आगे की पढ़ाई पर ध्यान दे।

मेरा बचपन से 10वीं तक यही सपना था कि मैं डॉक्टर बनूँ। इसलिए मैं आगे की पढ़ाई साइंस विषय लेकर करना चाहती थी। लेकिन मेरे भईया का कहना था कि 10वीं में तुम इतना कम प्रतिशत लेकर आई हो और बायो तो कठिन विषय है, क्या तुम पढ़ पाओगी? मैंने कहा, कोचिंग चली जाऊँगी। उन्होंने चिल्लाते हुए कहा कि हम नहीं भेजेंगे। तुम्हारी भाभी कॉमर्स लेकर पढ़ी हुई हैं, तुम भी कॉमर्स ले लो। तुम्हारी भाभी तुम्हें घर पर पढ़ा दिया करेंगी। माँ ने उनकी बात काटते हुए मुझसे कहा कि पढ़ाई तुम्हें करनी है, तुम जो विषय लेना चाहती हो लो, मैं तुम्हें कोचिंग भेजूँगी। माँ की इस बात पर सभी ने चिढ़ते हुए कहा कि आगे जो भी होगा उसकी ज़िम्मेदार आप होंगी, बाद में हमें मत कहना। स्कूल का जो भी खर्च है जैसे– ड्रेस, किताब, बैग, जूता–मोजा और स्कूल फीस सब मेरे घर मिल जाती थी। कुछ गड़बड़ी होने के कारण मेरा स्थायी जाति प्रमाण–पत्र नहीं बना और इस कारण से मुझे स्कूल द्वारा छात्रवृति भी नहीं मिलती थी। ऐसे में कोचिंग फीस और अगर मुझसे कुछ गलती हो गई तो सभी माँ को दोष देंगे, यह सब सोचकर मैंने डॉक्टर बनने की ख़्वाहिश छोड़ दी और कॉमर्स विषय ले लिया। उसी साल हमारा नया एनसीईआरटी का सिलेबस आया, भाभी का कहना था कि तुम्हारा सिलेबस तो पूरा बदल चुका है इसलिए मैं तो नहीं पढ़ा पाऊँगी। मुझे पहले से ही कॉमर्स में कोई रुचि नहीं थी, भाभी की यह बात सुनकर मेरा आत्मविश्वास और कम हो

गया। मैं 11वीं और 12वीं में खुद से बिल्कुल भी पढ़ाई नहीं करती थी, इसलिए इन कक्षाओं में मैं थर्ड और सेकेंड डिवीजन से पास हुई लेकिन यह मेरे लिए सामान्य बात थी। यदि मैं इन कक्षाओं में फेल भी हो जाती तो भी मुझे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था।

मैं गर्मी की छुट्टी मनाने अपनी बड़ी बुआ के ससुराल सांकरिया, राजस्थान आई। मैं उनके घर पर दिनभर खाली बैठी रहती थी। यह देखकर मेरे फूफा जी ने मुझसे पूछा कि क्या तुम स्कूल पढ़ाने जाना चाहोगी? मैंने कहा हाँ, क्यों नहीं, फिर फूफा जी ने अपने पहचान के एक दोस्त से बात की, जो पास के गाँव कादेड़ा में इंग्लिश मीडियम स्कूल में प्रिंसिपल हैं और मैं वहाँ पढ़ाने जाने लगी। स्कूल का माहौल बहुत ही अच्छा था, वहाँ पढ़ाते हुए मुझे कई सारी नई चीजें सीखने को मिली। मैंने उस स्कूल में 3 महीने पढ़ाया और अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए अपने गाँव छत्तीसगढ़ चली गई। वहाँ जाने के बाद जब मैंने कॉलेज में फॉर्म भरने की बात की तो सभी का कहना था कि इस साल तेरी शादी करेंगे। जितना पढ़ना था पढ़ लिया, अब ससुराल जाकर पढ़ती रहना। यह कहक़र कॉलेज में मेरा दाखिला नहीं करवाया गया और जब मैं कुछ बोलती तो कहते, हमें परेशान मत कर और अलग–अलग तरह के बहाने बनाते।

15 दिन गुजर जाने के बाद मेरे माता–पिता, मेरे पिता जी की बुआ और मैं अपनी बड़ी बुआ से मिलने के लिए राजस्थान आए। मेरी बड़ी दीदी महिला जन अधिकार समिति केकड़ी, अजमेर, राजस्थान में एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वे लड़कियों को तकनीकी शिक्षा से जोड़ती हैं। छत्तीसगढ़ वापस जाने से पहले हम उनसे मिलने उनके ऑफिस आए। मेरी दीदी, बुआ और फूफा जी ने उन्हें समझाया कि अभी तो ये 16 साल की है, इतनी जल्दी इसकी शादी क्यों कराना चाहते हैं? अभी इसे यहीं रहने दो, स्कूल पढ़ाने चली जाएगी और थोड़ा बहुत कंप्यूटर सीख लेगी तो आगे इसके ही काम आएगा। मेरे माता–पिता ने उनकी यह बात तो मान ली लेकिन उनका कहना था कि हम सिर्फ़ कुछ महीनों के लिए इसे यहाँ छोड़कर जा रहे हैं। शादी का समय आने पर हम इसे लेने आ जाएँगे। इसलिए इसका किसी भी कॉलेज में दाखिला न करवाया जाए। उन्होंने कहा कि हम इसे आप लोगों की ज़िम्मेदारी से यहाँ रख रहे हैं। मुझे किसी भी प्रकार की शिकायत सुनने का मौका न मिले। सभी ने अपनी–अपनी मनमानी की, किसी ने मुझसे यह नहीं पूछा कि तुम क्या चाहती हो? जिस तरह फुटबॉल को एक से दूसरे को पास किया जाता है, मुझे भी ऐसा एहसास होने लगा कि मैं भी एक फुटबॉल की तरह हो गई हूँ, जिसे जब चाहे छत्तीसढ़ से राजस्थान और राजस्थान से छत्तीसगढ़ भेज देते हैं।

बचपन से ही मैं बहुत गुस्से वाली थी, इस तरह के माहौल ने मुझे और ज़्यादा गुस्सैल और चिड़चिड़ा बना दिया। मैंने पहली बार अपने लिए यह सोचकर फ़ैसला लिया कि मुझे आगे की

पढ़ाई किसी भी तरह जारी रखनी है। इसलिए मैंने कादेड़ा स्कूल में पढ़ाना छोड़ दिया और मेरी दीदी जो महिला जन अधिकार समिति ऑफिस में अकेले रहती थी, मैंने भी वहीं रहक़र पढ़ाई करने का फ़ैसला लिया। इसके लिए दीदी ने ऑफिस की संचालनकर्ता से बात की और उन्होंने मुझे ऑफिस में रहने की अनुमति दे दी। केकड़ी आने के बाद मैंने 1 महीने का बेसिक कंप्यूटर कोर्स फिर छप्प्ज का कोर्स किया। इस बीच मेरी दीदी ने अपने दोस्तों की मदद से मेरे लिए एक प्राइवेट स्कूल में जॉब करने की बात तय की। कॉमर्स विषय और कंप्यूटर शिक्षा के कारण मुझे स्कूल में लिपिक का पद मिला। मैंने अपनी दीदी से बात करके एकाउंट की कोचिंग जाना शुरू कर दिया। यह बात हमनें अपने घर वालों को नहीं बताई थी लेकिन जब परीक्षा फॉर्म में माइग्रेशन सर्टिफिकेट की ज़रूरत पड़ी, तब हमने इसके बारे में घरवालों को बताया। उन्होंने पोस्ट ऑफिस के जरिये सर्टिफिकेट मुझ तक पहुंचाया और मैंने ओपन से बी.कॉम. फर्स्ट ईयर का फॉर्म भरा। इन सब में मेरी दीदी ने आर्थिक और पारिवारिक रूप से मुझे बहुत सहयोग दिया। मैंने 4 महीने स्कूल में काम किया और परीक्षा नजदीक आने के कारण स्कूल जॉब से भी विदा ले लिया। लेकिन कोरोना महामारी की वजह से हमारी परीक्षा नहीं हुई और हमें प्रमोट कर दिया गया। अब मैं सेकेंड ईयर में हूँ। राजस्थान में रहते हुए मुझे 2 साल पूरे हो चुके हैं। केकड़ी का माहौल हमारे गाँव से बहुत ही अच्छा है, मुझे यहाँ बहुत अच्छा लगता है। क्योंकि मुझे यहाँ मेरी दीदी, बुआ, फूफा जी और संस्था की तरफ से बहुत सहयोग मिलता है।

इस संस्था से जुड़ने के बाद मुझमें बहुत बदलाव आ गए हैं। जैसे मैं पहले माहवारी को लेकर बहुत कम लोगों से बात कर पाती थी लेकिन अब मुझे लगता है कि यह प्राकृतिक देन है तो इसमें इतना शर्माने कि क्या बात है? यदि हम अपनी समस्याओं पर खुलकर बात नहीं करेंगे तो हमें ही तकलीफ़ो का सामना करना पड़ेगा। लड़के और लड़कियों से संबंधित बातें और शारीरिक संबंध के बारे में बात करना गंदा लगता था लेकिन अब यह सब जानकर मैं एक समझ के साथ बातें लगने लगी। चीजों को देखने का नज़रिया बदला। चाइल्ड एब्यूज और बाल विवाह के बारे में पहले इतनी समझ नहीं थी, किस तरह किशोरियों और महिलाओं पर हिंसा की जाती है, इसके लिए क्या कानूनी अधिकार बने हैं और जातिगत भेदभाव मिटाना क्यों ज़रूरी है इन सारी चीज़ो पर समझ बनी। अपनी बातों को सही समय और सही व्यक्ति के सामने रखना, इस तरह के कई बदलाव मुझमें आए हैं, जिसे लिख पाना शायद मुश्किल है।

मेरी वर्तमान चुनौतियाँ यह हैं कि मैं अपने गुस्से को काबू नहीं कर पाती और न ही मेरा पढ़ाई में मन लगता है। यह मेरे क़ामयाब जीवन के लिए रुकावट बन सकती है। इसका यह कारण हो सकता है कि मैं अपनी बातें किसी के साथ साझा नहीं कर पाती। मेरी बचपन की जो

सहेलियाँ हैं, उनसे भी मैं अपने बारे में ज़्यादा नहीं बोल पाती। क्योंकि मुझे ऐसा माहौल ही नहीं मिलता, जैसा मैं चाहती हूँ। इस कारण मैं अपने आप में ही उलझी रहती हूँ, आसपास क्या हो रहा है, मुझे इसका ध्यान ही नहीं रहता है। मैं इन सबसे बाहर निकलने की कोशिश तो करती हूँ, पर निकल नहीं पाती। जब तक मैं इससे बाहर नहीं निकलूँगी, मेरा पढ़ाई करना बहुत मुश्किल है। मेरे ऊपर शादी का दबाव हर रोज रहता है, मैं लोगों को जवाब देती तो हूँ लेकिन मेरा तरीका ग़लत होता है। मुझे अपने बोलने के तरीके में सुधार लाने की ज़रूरत है, मुझे सभी से सरल और सहज रूप में बात करनी चाहिए ताकि सभी मेरी बात सुनें, उन्हें बुरा भी न लगे और मैं अपने शादी के इस दबाव को रोक सकूँ।

जब मैं कोई काम करती हूँ और मुझसे कुछ ग़लत हो जाता है, उस समय कोई मुझे डांटे, लेकिन मेरी मेहनत और सही चीजों को परख कर यह भी कहें कि गलतियाँ तो हैं, लेकिन इसमें यह चीज़ या यह बात अच्छी है। इस बात से मुझे ताकत मिलती है। मेरी बुआ और दीदी भी मुझे बहुत सहयोग करती हैं। एक बार जब मेरी दादी ने मुझसे शादी के बारे में पूछा तो मेरी बड़ी बुआ ने उन्हें टोकते हुए कहा कि अभी ये कुछ करना चाहती है, शादी का क्या है कभी भी हो जाएगी। इस बात ने मेरी हिम्मत और बढ़ा दी। कभी–कभी कुछ ऐसी चीजें जिन्हें करने के लिए मुझमें आत्मविश्वास नहीं होता, उस समय यदि कोई मुझे यह विश्वास दिलाता है कि तुम कर सकती हो तो इससे मुझे ताकत मिलती है।

भविष्य में मैं अपने आप को कभी भी सिर्फ़ पति की इच्छा पूरी करने वाली या बच्चे पैदा करने वाली महिला के रूप में नहीं पाना चाहती और न ही किसी पर निर्भर रहना चाहती हूँ। मैं अपने जीवन में शादी से पहले अपने कैरियर को महत्त्व देना चाहती हूँ। मैं आर्थिक रूप से पूरी तरह अपनी बड़ी बहन पर निर्भर हूँ, इसलिए स्विमिंग के बारे में कभी किसी से बात नहीं कर पाती हूँ। कोरोना महामारी की वजह से माहौल अभी भी कुछ खास अच्छा नहीं है। जब माहौल पूरी तरह से ठीक हो जाएगा तो मैं पढ़ाई और जॉब के साथ–साथ अपने सपने को पूरा करने में जुट जाऊँगी। इसके अलावा मैं सोचती हूँ कि मेरा खुद का घर हो, जिसमें मैं अपने माता–पिता के साथ रहूँ। मैं परिवार से यहीं उम्मीद रखती हूँ कि वे लोग मुझे थोड़ा समय दें और मेरा सहयोग करें ताकि मैं अपनी ख़्वाहिशों को पूरा कर सकूँ।

– शुभांगणी सूर्यवंशी, 19, राजस्थान

शोषण शब्द छोटा है, मगर उसका असर बहुत अधिक है

मेरा नाम शिवांगी है। मैं ग्राम पंचायत बरेहटा की रहने वाली हूँ। मेरे परिवार में चार सदस्य हैं। मेरे घर में पापा–मम्मी और एक बड़ा भाई है। पापा पंजाब में एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते हैं। मम्मी घर पर रहती हैं। मेरा भाई मुझसे एक वर्ष बड़ा है। वह अभी पढ़ाई कर रहा है। मैं हिंदी से ग्रेजुएट हूँ और अभी एस.एस.सी. की तैयारी कर रही हूँ। साथ–साथ छोटे बच्चों को भी पढ़ाती हूँ। मेरे पापा का नाम श्री राम अकवाल है। मेरी मम्मी का नाम सिन्दू है। मेरे भाई का नाम शिवम है। मेरी मम्मी घर का काम करती हैं और वे पढ़ी–लिखी नहीं हैं। मेरे पापा ने इंटर तक पढ़ाई की है, वे इस बार एम.ए. सेकेंड ईयर में हैं।

मेरा सपना डीएम बनना है। मैं सिर्फ़ डीएम ही नहीं बनना चाहती हूँ बल्कि डीएम बनकर जो लोग सकरारी कर्मचारी के रूप में जनता का शोषण करते हैं, मैं उसे रोकना चाहती हूँ। मैं डीएम बनकर पूरे जिले में जनता का सहयोग कर सकूँ। मैं सबसे ज़्यादा प्रयास लड़कियों के लिए करूँगी, क्योंकि जनता के द्वारा, लोगों के द्वारा, परिवार के द्वारा, समाज के द्वारा, सबसे ज़्यादा शोषण लड़कियों का ही होता है। इसलिए मैं उसे रोकना चाहती हूँ। मेरे जीवन का लक्ष्य है समाज में हो रहे शोषण, हिंसा और कुरीतियों को रोकना। शोषण एक ऐसा शब्द है जो लगता तो बहुत छोटा है पर इसका शोषित व्यक्ति पर बहुत बुरा असर पड़ता है। शोषण

एक व्यक्ति के जीवन में बहुत तरह से असर डालता है। इससे व्यक्ति के स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है। व्यक्ति कभी–कभी डिप्रेशन की वजह से आत्महत्या भी कर लेता है। शोषण से व्यक्ति के सोचने–समझने की क्षमता ख़त्म हो जाती है, जिससे व्यक्ति सही फ़ैसला नहीं कर पाता और एक ग़लत फ़ैसला व्यक्ति का जीवन बर्बाद कर देता है। शोषण होने के कई वजह हैं, जैसे कि व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक न रहना, जिससे व्यक्ति में चिड़चिड़ापन आता है और वह दूसरे व्यक्ति का शोषण करता है। पैसे की तंगी होना जिससे व्यक्ति किसी के साथ हिंसा करता है और घर की महिला के साथ हिंसा करता है। व्यक्ति को रोजगार न मिलना, किसी मामले का कई दिनों तक चलना, केस का कोर्ट में कई दिनों तक चलना आदि। इस तरह हम देखते हैं कि एक शोषित व्यक्ति ही दूसरे व्यक्ति के साथ हिंसा करता है क्योंकि उसे लगता है कि उसके साथ ग़लत हुआ है और वह दूसरे व्यक्ति के साथ भी वैसा ही करता है। यह ग़लत है और इससे हिंसा को बढ़ावा मिलता है। हिंसा एक ऐसा शब्द है जो हमारे अपनों के द्वारा अपने ही घर में किया जाता है। हमारे समाज में लड़कियों के साथ ज़्यादातर हिंसा होती है, इसलिए डीएम बनकर मैं समाज में हो रहे शोषण को रोकूँगी।

मैं समाज से बस इतनी सहायता चाहती हूँ कि इस तरह के मामले को बढ़ावा न दें। जिस तरह से मेरा सपना डीएम बनने का है, वैसे हर व्यक्ति का, हर लड़की का सपना होता है कि वह पढ़े–लिखे और आत्मनिर्भर बने। हर व्यक्ति अपने परिवार के लिए, अपने समाज के लिए और अपने देश के लिए कुछ करे। एक अच्छा इंसान क्या चाहता है? कोई व्यक्ति बुरा पैदा नहीं होता उसे आसपास का माहौल और हमारा समाज बुरा बना देता है। उसे हिंसा करने के लिए मजबूर कर देता है। मैं अपने समाज से बस इतना कहूँगी कि जिस स्थिति से वे गुजरकर आए हैं, उस स्थिति में दूसरे व्यक्ति को जाने से रोकना चाहिए, न कि उस पर भी हिंसा करना चाहिए। हर व्यक्ति का सपना होता है, सभी लोगों का कोई न कोई सपना होता है। हमारा समाज भी लोगों से बना और लोगों के साथ हिंसा होती है। अगर हमारा समाज चाहे तो हमारा देश महान देश बन सकता है। 'रामराज्य' जहाँ सत्य की जीत होती है और हर जगह सत्य होता है। जहाँ भी किसी के साथ हिंसा हो रही हो उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाएँ, क्योंकि किसी लड़की के सपने को पूरा करने में जितनी मतेहनत उस लड़की को लगती है, उतनी ही मेहनत उसके परिवार वाले को करनी चाहिए। उतना ही समर्थन हमारे समाज को भी करना चाहिए। जैसे अगर कोई लड़की कुछ अच्छा काम करना चाहती है तो सिर्फ़ उसका ही नहीं, उसके परिवार का ही नहीं बल्कि पूरे समाज का नाम रोशन होता है। समाज को चाहिए कि उसके आसपास रह रही लड़कियों को अपनी बहन–बेटी की तरह समझना चाहिए। उसके दुख–दर्द को भी अपना समझना चाहिए। अगर एक लड़की पढ़ती है

तो समझो दो परिवार पढ़ता है। समाज के लोगों को चाहिए कि वे अपने घर या अपने घर के आसपास न तो हिंसा करे और न किसी दूसरे व्यक्ति को हिंसा करने की इज़ाजत दे। अगर किसी के साथ हिंसा हो रही है तो उसके ख़िलाफ़ आवाज उठाएँ। लोगों को अपने आसपास साफ–सफाई भी रखनी चाहिए और आवश्यकतानुसार सरकार की मदद भी लेनी चाहिए। समाज के लोगों को अपने आसपास के ऐसे लोगों को समझाना चाहिए जो अपनी बेटी को नहीं पढ़ा रहे हैं। उन्हें लड़कियों पर टिप्पणी कर परेशान नहीं करना चाहिए। उन्हें ऐसी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए कि लड़की किस तरह के कपड़े पहनती है। हमें अपना नज़रिया बदलना चाहिए क्योंकि गंदी सोच वाले भगवान में भी कमियाँ निकालते हैं। भारत के महान व्यक्तियों में भी कमियाँ निकालते हैं। हर व्यक्ति में कुछ न कुछ कमियाँ तो होती ही हैं और हमें उनकी अच्छाइयों के साथ कमियों को भी स्वीकार करना चाहिए। उनकी कमियाँ बताकर या दिखाकर, उनकी अच्छाइयों को नहीं दबाना चाहिए।

अगर हमारा समाज ऐसा ही रहा तो एक दिन ऐसा आयेगा कि कोई किसी के बारे में नहीं सोचेगा। बस हर कोई अपने ही बारे में सोचेगा और विनाश की तरफ बढ़ता चला जाएगा। अगर हमारे समाज में लड़कियों को थोड़ा सा भी सपोर्ट मिलेगा तो हमारा देश बहुत आगे जाएगा। क्योंकि इतिहास गवाह है कि बिना महिलाओं के आंदोलन किए आज़ादी भी नहीं मिली। सब पढ़ो, सब बढ़ो के साथ बेटी को हिंसा से बचाओ और बेटी पढ़ाओं का नारा लगाओ।

– शिवांगी, उत्तर प्रदेश

दिल्ली आकर सपने देखने की शुरुआत

06 मार्च, 2016 में मेरी शादी हुई थी। मैं उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले से आकर दिल्ली के सराय काले खाँ इलाके में अपने पति और ससुराल वालों के साथ रहने लगी थी। मैंने सपने देखना दिल्ली में ही आकर शुरू किया। मेरा सपना था कि जैसे सभी लड़कियाँ जॉब करती हैं, वैसे मैं भी जॉब करूँ। क्योंकि मुझे ससुराल में किसी से भी पैसे लेना बिल्कुल पसंद नहीं था। मुझे हमेशा से यह भी डर लगता था कि मैं इंग्लिश कैसे बोलूँगी। इसलिए मैं यह सपना देखने लगी कि मैं पार्लर या सिलाई का कोर्स कर लूँगी और इसमें ही कोई जॉब कर लूँगी। आप ये भी सोच रहे होंगे कि कितनी पागल लड़की है। जो शादी के बाद सपने देखने लगी थी। क्योंकि गाँव में तो हमारे मम्मी–पापा ने हमेशा खेती–बाड़ी का ही काम करवाया है और अपने आस–पास ये ही देखने को मिलता है कि उसकी बेटी, बहन और पत्नी खेतों पर काम करने जा रही हैं। इसलिए सपनों में भी बस यही आता था कि हम खेतों पर काम कर रहे हैं। हमारे माता–पिता को हमारी पढ़ाई से कुछ फर्क नहीं पड़ता था। चाहे हम एक महीना स्कूल न जाएँ। उनको सिर्फ़ अपनी खेती–बाड़ी ही दिखती थी। अब ससुराल में आकर मुझे लगा कि कम से कम पति तो कहीं घुमाएगा। लेकिन पति भी हर जगह ले जाने से मना कर देता है और अब दो बच्चे हो गए हैं। अब कहीं जाने का मन करता है तो सास कहती है बच्चों को साथ लेकर जाना। मेरा सपना है कि मैं और मेरे पति लंबे समय के लिए एक ऐसी जगह जाएँ जहाँ कोई हमारे जान–पहचान वाला न हो और न ही कोई भीड़–भाड़ वाली जगह हो। वो मुझे समझे और मैं उनको समझू।

मैं नर्स का कोर्स करना चाहती हूँ। उसके बाद हॉस्पिटल में नौकरी करना चाहती हूँ। कभी मन करता हैं कि घर में ही सिलाई के कपड़े सिल लूँ। क्योंकि पूरे दिन घर से बाहर रहने को सोचती तो फिर बच्चे नज़र आने लगते हैं। कभी–कभी तो ये सब सोचकर बहुत टेंशन हो जाती है क्योंकि लॉकडाउन के बाद से तो मेरी सास को लगता है कि मैं भी जल्दी से पैसे कमा कर लाऊँ। मैं घर का पूरा काम करती हूँ और मेरा दो साल का बेटा है और दूसरी बेटी साढ़े तीन साल की है। उनको भी संभालना होता है। मैं भी बहुत कुछ बनना चाहती हूँ। लेकिन घर का ये सब झमेला देखकर मन मारना पड़ता है। हाँ, मैं हार नहीं मानूँगी। जब मेरे बच्चे थोड़े बड़े हो जाएँगे तब मैं नर्स बनूँगी। मुझे हॉस्पिटल में जॉब करनी है। मुझे नर्स की ड्रेस देखने में बहुत सुंदर लगती है। बस भगवान करे मैं जल्दी से नर्स बन जाऊँ।

मेरे परिवार में मेरे दो बच्चे, पति, सास–ससुर, जेठ–जेठानी, देवर आदि रहते हैं। मेरी सास मुझ से हमेशा ये ही बोलती रहती हैं कि अब तुमको भी नौकरी करनी चाहिए। लेकिन कभी भी मेरे साथ घर के काम में हाथ नहीं बटाती हैं। अगर मैं कहीं जॉब करने भी लगी तो मैं और भी कमजोर हो जाऊँगी क्योंकि जॉब के साथ मुझे सारा घर का काम और बच्चे भी संभालने होंगे।

पहले तो मुझे लगता था कि मेरी सास मेरे फ्यूचर के लिए कितना सोचती हैं। लेकिन उनका बार–बार मुझे जॉब के लिए फ़ोर्स करना, अब ताना लगता है। मैं मेंटली बहुत परेशान हो जाती हूँ। अब तो मेरे चेहरे पर कोई रौनक भी नहीं है।

एक औरत सबसे ज़्यादा अपने पति पर भरोसा करती है। उसको लगता है कि ससुराल में कोई उसे समझे या न समझे पर पति तो ज़रूर उसे समझेगा। यहाँ तो मेरे पति कुछ बोलते ही नहीं हैं। वो भी अपनी मम्मी की तरफ़दारी करते हैं।

मैं अपने परिवार से हाथ जोड़कर निवेदन करती हूँ कि सबसे पहले आप मुझे समझें। मैं भी जॉब करना चाहती हूँ लेकिन मेरी अभी कुछ परेशानियां हैं। इस टेंशन में कितनी बार मेरी तबियत ख़राब भी हो गई थी। इस बार भी टाईफाइड हो गया था, जो पूरे एक महीने में जाकर ठीक हुआ था। इस बीच मैं बहुत कमजोर हो गई थी। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि मैं गाँव ही चली जाऊँ क्योंकि मेरी सास जब यहाँ लड़कियों को जाते देखती हैं तभी मुझे बोलना शुरू कर देती हैं।

धन्यवाद!

– अमिता, 24, नई दिल्ली

2001 से 2022 - वही संघर्ष, वही झगड़े

मेरा नाम सृष्टि कुमारी है। मैं आप लोगों को अपने बचपन की कहानी बताने की आज्ञा चाहती हूँ। मैं एक लड़की हूँ और मेरा जन्म एक साधारण परिवार में हुआ। मैं जब अपनी माँ के गोद में थी तब मेरे पापा, दादी, बड़ी माँ सब मिलकर मेरी माँ पर जुल्म करते थे। उन्हें समय पर कोई भी चीज़ नहीं मिलती थी, जो एक गर्भवती औरत को मिलना चाहिए। जिसके कारण मैं बहुत ही कमजोर पैदा हुई। मेरा जन्म होने के बाद मुझे पलंग के नीचे धकेल दिया जाता था। सारे लोग मुझे देखकर चिढ़ते थे। एक रात की बात है लगभग 1 बजे के आसपास मैं और मेरी माँ को सब लोगों ने कमरे में बंद करके जलाने की कोशिश की। मेरी माँ उस रात जैसे–तैसे मुझे लेकर मेरी नानी के घर भागी। मेरी माँ का पैर पूरी तरीके से जल गया था। उसके बाद मेरी माँ और पापा के बीच तलाक की भी बात हुई। मेरे नाना और मामा जी ने मेरी माँ को तलाक देने के लिए फोर्स किया पर मेरी माँ ने ऐसा नहीं किया। फिर कुछ साल हम लोग अपने नाना जी के घर पर रहे। जहाँ पापा कभी–कभी आया करते थे पर वहाँ वे सब लोग उन्हें मार–पीटकर भगा दिया करते थे। फिर कुछ समय बाद वे वापस आए और दोनों परिवार के बीच बातचीत हुई। इसके बाद मेरी माँ मुझे लेकर पापा के घर वापस आ गई। कुछ समय बाद मेरा एक भाई हुआ। इस तरह हम एक भाई और एक बहन का परिवार हुआ। अगर घर के लोग चाहते तो हमें एक अच्छी परवरिश और अच्छी शिक्षा मिल सकती थी। मेरे पापा एक अजीब किस्म के इंसान हैं। शायद उनके अंदर ये इच्छा ही नहीं थी कि वे अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ाएँ। अगर अच्छे स्कूल न भेजते तो कम से कम एक ट्यूशन

तो लगवा ही सकते थे पर उनसे यह भी नहीं हुआ। हमारे घर के नज़दीक एक आंगनवाड़ी थी जिसमें मैं स्लेट और पेंसिल लेकर जाया करती थी। ऐसा नहीं है कि मुझे वहाँ पढ़ना अच्छा नहीं लगता था। ये मेरी कहानी है जो एक गाँव की कहानी है। मेरे दादा जी का घर पटना शहर में है, जहाँ हम लोग रहते थे। देखा जाए तो पटना एक डेवलप सिटी (विकसित शहर) था। नाना जी का घर भी पटना शहर में ही था। दादी के घर में हम लोगों को रहने के लिए सिर्फ़ एक छोटा सा कमरा मिला था। मेरी माँ कोयले और गोईठा (सूखे गोबर) से खाना बनाती थी। दिन, रात, दोपहर का सारा खाना सबके लिए एक ही बार में बन जाता था। नाश्ते का तो मतलब ही नहीं पता था मुझे, क्योंकि चूल्हे पर खाना बनाते–बनाते दोपहर के दो बज जाते थे। उसके बाद हम लोग खाना खाते थे। माँ को तो सारा काम ख़त्म करने में 3–4 बज जाते थे। कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा, मेरे घर में कभी कोई अच्छी चीज़े नहीं बनती थी। मैं अपने घर के आसपास के घरों में देखती थी कि सब लोग घी, मक्खन खाते थे। अब मैं 4 साल की हो चुकी थी कुछ चीज़े समझ में आने लगी थीं। मेरे सामने पापा मेरी मम्मी को मारते थे और मैं यह देखकर रोती थी। फिर मेरे नाना जी ने मुझे अपने पास बुला लिया क्योंकि शायद मुझमें पढ़ने की ललक बचपन से ही थी। 5 साल की उम्र से मैं अपने नाना जी के घर पर रहने लगी। वहाँ पर उन्होंने मेरा स्कूल में और ट्यूशन में एडमिशन कराया। वे मुझे मेरी माँ की तरह अपने हाथ से खिलाते, नहलाते। मैं उन्हीं के साथ रात को पढ़ते–पढ़ते सो जाती थी। वे मुझे एक माँ की तरह प्यार करते थे। मुझे हर खुशी देते थे। माँ को तो मैं भूल ही गई थी और पापा से कभी बात ही नहीं करती थी। मेरे नाना जी सरकारी नौकरी में थे लेकिन वे रिटायर हो चुके थे। वो मुझे बहुत मानते थे। माँ–पापा की हर रोज़ लड़ाई होती रहती थी। नाना जी मम्मी को हमेशा बोलते रहते थे कि सबकुछ छोड़कर यहाँ चली आओ। लेकिन वे नहीं मानती थी, शायद इस समाज की सोच के कारण कि अपने मायके में रही तो लोगों का ताना सुनना पड़ेगा। एक औरत भी कितना सह सकती है। फिर एक दिन वो भाई को लेकर वापस नाना जी के घर आ गई। मैं तो अपने दादी के घर को भूल ही गई थी। लेकिन मम्मी नाना के घर पर नहीं रही क्योंकि शायद मामा और मामी को यह अच्छा नहीं लगता। उन्होंने वहीं आसपास में एक खपरैल वाला कमरा लिया। वहाँ गर्मी में सोने की दिक्कत होती और बरसात में चार जगह कटोरा लगाकर सोते थे क्योंकि ऊपर से बारिश का पानी टपकता रहता था। वह मिट्टी का एक छोटा सा घर था। फिर मम्मी ने एक स्कूल में काम ढूँढ़ा और उन्हें काम मिल भी गया। वह काफ़ी बड़ा स्कूल था, आचार्य श्री सुदर्शन, पटना सिटी सेंट्रल स्कूल वहाँ उन्होंने मेरा और मेरे भाई का एडमिशन करवाया और खुद वहीं काम भी करने लगीं। हम दोनों की फीस मम्मी के वेतन से कट जाती थी। वहाँ किताबें भी बहुत महँगी थी। माँ ओवरटाइम ड्यूटी भी करती थी वे स्कूल की टीचर से

कपड़े लाती और घर पर फॉल लगाती। उन्होंने हमारा ट्यूशन भी लगा दिया था। स्कूल में जब छुट्टी के वक़्त बाकी स्टूडेंट या क्लासमेट के फादर आते थे तो मुझे कहीं न कहीं वह खटकता था कि काश मेरे पापा भी मुझे लेने आते। मैं एक लड़की हूँ न, शायद इसलिए मेरे अंदर फीलिंग और इमोशन ज़्यादा थे। मेरा भाई तो अपने में मगन रहता था तो ढंग से पढ़ाई भी नहीं करता था। कुछ साल ऐसे ही कटे। मेरे नानी की डेथ हो गई। उसके बाद नाना ने कहा तुम लोग अब यहीं आकर रहो, फिर हम लोग वहाँ रहने के लिए चले गए। पापा ने वहाँ फिर से आना शुरू कर दिया पर मम्मी कभी उनसे बात नहीं करती थी। वे कुछ चॉकलेट्स लाकर हम दोनों को दे दिया करते थे। एक बेटी की इच्छा होती है कि वह अपने बाप के मुँह से बेटी शब्द सुने, जो मुझे कभी सुनने को नहीं मिला। वैसे देखा जाए तो पिता का प्यार क्या होता है, ये मैंने बचपन में देखा ही नहीं, न ही अनुभव कर पाई। वो कभी–कभी भाई को अपने साथ लेकर जाते थे। दादी के घर जाने कौन उसको बहकाता था कि वो मम्मी की बात कभी नहीं मानता था, न ही पढ़ाई करता था। बहुत पिटाई भी हुई उसकी फिर भी उसने नहीं सुना और उसने पढ़ाई छोड़ दी। धीरे–धीरे कुछ साल ऐसे ही बीते पर अब पहले ज़्यादा अच्छा लगता था। हम बिना पापा के भी अच्छे से रहते थे। फिर मामा–मामी और मम्मी में अनबन होने लगी। बात–बात पर यहाँ भी हर रोज कोई न कोई लड़ाई हो जाती थी। 10 साल से ज़्यादा मम्मी बिना पापा के, नाना के घर पर ही रहीं। पापा कभी–कभी आते रहते थे। फिर मम्मी ने डिसाइड किया कि हम लोग वापस दादा के घर जाएँगे, क्योंकि वे नहीं चाहती थी कि उनके कारण मायके में लड़ाई हो। मेरा बचपन कैसे बीता और बचपन में क्या–क्या हुआ यह सब मम्मी ने मुझे तब बताया जब मैं बड़ी हो गई। मैंने छठीं कक्षा तक सीबीएससी बोर्ड से पढ़ाई की। यह सब सिर्फ़ मेरी माँ की वजह से संभव हुआ और उस समय मेरी इंग्लिश भी अच्छी हो गई थी। वरना पापा तो कभी सीबीएससी में पढ़ा ही नहीं सकते थे। मैंने कभी सरकारी स्कूल नहीं देखा, ज़रूरत ही नहीं पड़ी। मम्मी सारी ज़रूरतों को पूरा कर देती थी। 10 से 15 साल बाद हम लोग वापस दादी के घर आए। मुझे, दादी के घर पर रहने का मन ही नहीं करता था। क्योंकि एक छोटे कमरे में चार लोग के साथ रहने की आदत नहीं थी। नाना का घर थोड़ा बड़ा था और मैं वहाँ आराम से रहती थी। यहाँ फिर वही हुआ, दादी मुझे एक सरकारी स्कूल में एडमिशन कराने ले गई। मैंने एक साल जैसे–तैसे काटे लेकिन ट्यूशन का पैसा पापा देते थे। थोड़ा बहुत अनबन अभी भी होता ही रहता था।

एक साल मैंने भी जैसे–तैसे बिताया। मेरी नानी जी को मेरी पढ़ाई की हमेशा चिंता लगी रहती थी इसलिए उन्होंने मुझे वापस बुला लिया। एक सरकारी स्कूल से 10वीं की परीक्षा पास कराई। उसके बाद फिर से मैं दादी के घर आ गई, क्योंकि नाना जी पटना वाले घर को

बेचकर हाजीपुर रहने चले गए थे। मैंने वहीं से अपनी दसवीं पास की थी। सिटी में कॉलेज और कोचिंग अच्छे थे तो मैं यहीं आ गई। मुझे साइंस पढ़ने का मन था पर पापा खर्च तो दे नहीं पाते इसलिए मैंने कॉमर्स ले लिया। अब कॉलेज की कोचिंग की फीस के लिए भी तो पैसे चाहिए थे। मैंने पढ़ाने के लिए एक–दो होम ट्यूशन खोजा और पढ़ाना शुरू किया। पहले मैंने 100 रूपए से पढ़ाना शुरू किया था और धीरे–धीरे दो से तीन ट्यूशन बढ़ा। मैं उसी से अपना खर्च चलाती थी। इस तरह ही मैंने इंटर की परीक्षा पास की। पापा से घर के खर्चे भी नहीं चल पाते थे। गैस सिलेंडर इतना महँगा मिलता है, बिजली बिल और खाने का सामान सब महँगा हो गया है। इसलिए यह सब खर्च उनसे मैनेज नहीं हो पाता था। उन्होंने आज तक कभी मम्मी को एक साड़ी तक ला के नहीं दी। मुझे जॉब की भी तलाश थी। इसलिए कुछ कंसल्टेंसी वालों ने कांटैक्ट किया। क्योंकि होम ट्यूशन का क्या था वो तो मिलते ही रहते थे। फिर मैंने महीने के कांट्रैक्ट पर अमेज़ोन में जॉब किया, उसके बाद मैंने बी.कॉम. शुरू किया, अभी मैं आख़िरी साल में हूँ। बहुत बार मैंने सोचा कि मैं पढ़ाई छोड़ दूँ, पर कभी हार नहीं मानी। मेरी कहानी, मेरी जुबानी, मैं अभी भी जॉब की तलाश में हूँ। परिवार को तो नहीं कह सकती लेकिन सिर्फ़ नाना जी और माँ के बदौलत आज मैं यहाँ पहुँची हूँ। 2001 में मेरा जन्म हुआ था, अभी 2022 चल रहा है। आज भी मेरे घर की हालत वही है। इतने साल बाद भी कुछ नहीं बदला। वही एक कमरे में ज़िंदगी काट रही हूँ। वही स्ट्रगल, वही झगड़े। समय नहीं बदला, बस साल बदल गया है।

– सृष्टि, बिहार

हार के आगे जीत है

किसी ने सही ही कहा है कि यदि हम अपनी हार होने के बाद भी अपने सपने को पाने की ज़िद पर कायम रहते हैं, तो हमें अपने जीवन में क़ामयाब होने से कोई रोक नहीं सकता है। मैंने भी कुछ सपने देखे हैं; पर मैं अभी अपने भविष्य का निर्णय लेने में पूरी तरह से सामर्थ नहीं हूँ। तब भी मैं अपने समाज और परिवार के लिए कुछ करने के सपने देखती हूँ।

हमारे भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी भी सभी बच्चों से यही कहा करते थे कि 'अपने जीवन में बड़े सपने देखो और बड़े व्यक्ति बनो।'

ठीक इसी प्रकार मेरी माँ का कहना हैं– 'सपना देखना अच्छी बात है, परंतु जब आप अपने डर के आगे अपने सपनों को ज़्यादा महत्त्व देंगे, तभी चमत्कार हो सकता है। इसलिए पूरे दिल से सपना देखो, तभी आप बड़े सपनों को हासिल करने में सक्षम होगें।'

इस संसार में तरह–तरह के लोग हैं, उनके अलग–अलग सपने हैं, वैसे ही मेरे भी कुछ अपने सपने हैं। सबसे पहले मैं एक सफल इंसान बनकर कुछ करना चाहती हूँ।

मेरा सपना अपने समाज की कुछ कुरीतियों को दूर करना है, जिसका मैं प्रयास करूँगी। जिसमें शिक्षा का सबसे उच्च स्थान है। समाज में लोगों को तरह–तरह की समस्याएं होती हैं। मेरा लक्ष्य यही है, कि मैं किस प्रकार इनकी समस्याओं को दूर करने में अपनी छोटी सी भूमिका निभा सकूँ। अभी कुछ दिन पहले की बात है, हमारे गाँव से कुछ दूर एक ग्रामीण व्यापारी, मनोज झा अपने परिवार के साथ रहते थे। वे आर्थिक रूप से भी कमजोर थे। वे

पढ़े–लिखे भी ज़्यादा नहीं थे। इसलिए उन्होंने अपने पड़ोसी से कुछ कर्ज लिए थे, जिसे वे चुका नहीं पा रहे थे। पड़ोसी उनको परेशान कर रहा था, अगर वे शिक्षित होते तो सूझ–बूझ से काम लेते। उन्होंने एक दिन आत्महत्या कर ली। अगर शिक्षित होते तो वे अपने पूरे परिवार के साथ आत्महत्या नहीं करते बल्कि समस्या का समाधान करते।

आज भी हमारे समाज में अशिक्षा एक अभिशाप है। समाज में ऐसी कुरीतियाँ, अशिक्षा, बालविवाह, पर्यावरण सुरक्षा, भ्रष्टाचार, और ग़रीबी बनी हुई है। मेरा अब एक ही लक्ष्य है कि मैं इन समस्याओं को दूर करने में अपनी विशेष भूमिका निभा सकूँ। क्योंकि

'नज़र को बदल दे नज़ारा बदल जाता है, सोच को बदल दे सितारा बदल जाता है और कश्ती को बदलने की ज़रूरत नहीं, दिशा को बदल दे किनारा बदल जाता है।'

मैं पढ़–लिखकर अपने पैर पर खड़ी होना चाहती हूँ, ताकि मुझे अपने जीवन में किसी भी काम के लिए दूसरे व्यक्ति पर आश्रित न होना पड़े। मैं एक अच्छे पोस्ट पर जॉब करना चाहती हूँ ताकि मैं अपने परिवार, समाज का सिर गर्व से ऊँचा कर सकूँ। मैं जहाँ भी रहूँ, घर हो या बाहर पूरा साफ–सफाई का ध्यान रखूँ।

पिछले साल कोरोना के समय में मैं अपने गाँव के पुस्तकालय से जुड़ी हूँ। कोरोना के कारण पूरा विश्व हिल के रह गया था। हर जगह लॉकडाउन की स्थिति आ चुकी थी। बच्चों का स्कूल भी बंद हो चुका था और बच्चों का पढ़ाई के प्रति बिल्कुल ध्यान नहीं था। लेकिन मैं अपने गाँव के लगभग 70–80 बच्चों को कोविड–19 के नियम का पालन करते हुए हमारे पुस्तकालय में लाई और उन्हें पढ़ाई के प्रति जागरूक किया। उन्हें किताबों की दुनिया से जोड़ा। अब सभी बच्चे स्कूल जाकर अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। इसी तरह मैं भी...

'अब अश्रु दिखलाओ नहीं
अब हाथ फैलाओ नहीं
हुंकार कर दो एक जिससे
थरथरा जाए धरा।
मानव बनो, मानव जरा।'

लेखक शिव मंगल सिंह 'सुमन' जी के द्वारा लिखी गई कविता 'मानव बनो' की पंक्ति से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

हमें अपने सपने पूरे करने के लिए अपने लक्ष्य पर अडिग रहना होगा। जैसे–जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हमें अपने जीवन की अहमियत का पता चलता है। मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपने समाज के लोगों की मदद चाहती हूँ। मेरी दादी और माँ बताती हैं कि उन्हें बहुत

सारे दुखों का सामना करना पड़ता था। उस वक़्त बेटा–बेटी में बहुत फर्क किया जाता था। बेटों को बाहर के कॉलेजों में पढ़ाई करने के लिए भेजा जाता था कि वह पढ़–लिखकर बड़ा बनेगा और हमारे खानदान का नाम रोशन करेगा। बेटियों को तो गाँव के स्कूलों में भी नहीं भेजा था। दादी बताती हैं कि उन्हें अपना नाम लिखना सीखने के लिए भी समाज की कितनी सारी भली–बुरी बातों को सुनना पड़ा था। इस बदलते हुए समाज में मुझे और मेरे सपनों को भी जगह दी जाए। क्योंकि अभी भी बहुत सारी जगहों पर लड़कियों की जल्दी शादी करा दी जाती है और जल्दबाजी के कारण कुछ ग़लत रिश्ते भी हो जाते हैं। जिससे कि लड़कियों को पूरी उम्र अपने ससुराल वालों की बातों को सुनना पड़ता है। आर्थिक मजबूरियों के कारण उनके घर में आए दिन कलेश होता है।

मैं चाहती हूँ कि समाज लड़का और लड़की दोनों को एक नज़र से देखे और उन्हें प्रोत्साहित करे। समाज में अधिकतर लड़कियों को बुरी नज़रों से देखा जाता है।

उनके कपड़े, उनके उठने–बैठने, चलने सभी चीजों पर बातें बनाई जाती हैं। मैं चाहती हूँ कि हमारा समाज बिल्कुल अलग समाज हो। जहाँ कोई भेदभाव न हो। जिस तरह लड़कों को अपने पसंद का पार्टनर चुनने का हक़ है, उसी तरह बेटियों को भी ये हक़ दिया जाए। उनके इस फैसले को बुरी नज़र से न देखा जाए। हम लड़कियों के लिए सरकार भी इतनी सारी योजनाएँ चला रही है। अगर वह इतना कर रही है, तो हम और हमारा समाज क्यों नहीं कर सकते, फिर भी हम क्यों ग़लत हो जाते हैं?

हमें अपना सपना पूरा करने के लिए हमेशा प्रेरित रहना चाहिए। क्योंकि हम जिस समाज में रहते हैं, वहाँ थोड़ी सी भी समस्या आ जाती है तो उनमें ये विचार आने लगता है कि मैं ये नहीं कर पाऊँगी। ऐसे वक़्त पर सिर्फ़ अपने लक्ष्य पर अडिग रहना होगा। ज़िंदगी डर कर जीने के लिए नहीं होती, बल्कि डर के आगे हमेशा जीत होती है। इसलिए तो कहा गया है–

'नींद को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम
कुछ किए बिना जय–जय कार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।'

अगर ज़िंदगी में जय–जय करवानी है तो सपना मुंगेरी लाल वाला नहीं होना चाहिए। सपना वो हो जो लाइफ में हमें सफलता दे। कुछ ऐसा करें, जिससे पूरी दुनिया याद रखे। ज़िंदगी एक सुनहरा मौका है, अपने क़ाबिलियत के साथ, अपने सपने को साबित करने के लिए।

– मुस्कान कुमारी, 19, बिहार

समष्टि के लिए व्यष्टि

मेरा नाम विजयलक्ष्मी राव है। मैं ग्राम व पोस्ट– पाली अचलपुर, ब्लाक– तारून, जनपद– अयोध्या की रहने वाली हूँ। मेरी उम्र 22 साल है। मैं डी.एल.एड. की पढ़ाई कर रही हूँ। मैंने हाई स्कूल और इंटर की पढ़ाई, स्वावलंबी इण्टर कॉलेज, रनीवां, अम्बेडकर नगर से किया है। मैं प्राइमरी लेवल की अध्यापिका बनना चाहती हूँ। क्योंकि बच्चों का भविष्य यहीं से शुरू होता है। अगर बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जाए तो वे आगे चल कर अपने भविष्य में कुछ न कुछ बन सकते हैं, इसलिए मैंने यही चुना है।

मेरे पिता जी का नाम रामकरन है और वे लखनऊ में रहते है। वे वहाँ एक कॉनट्रेक्टर का काम करते है। मेरी माता जी का नाम राजपती है और वे एक ग्रहणी हैं। मेरे दो भाई हैं। बड़े भाई का नाम सुभाष कुमार है और वह दुबई में रहते हैं। छोटे भाई का नाम राहुल है और वह 12वीं कक्षा की पढ़ाई कर रहा है।

मनुष्य के जीवन में लक्ष्य का होना अत्यंत आवश्यक है। कोई डॉक्टर बनकर रोगियों का इलाज करना चाहता है, तो कोई इंजीनियर बनकर कुछ निर्माण करना चाहता है। कोई भी लक्ष्य हमें तभी प्राप्त होगा जब हम अपना सही लक्ष्य बनाएँगे और इसे पाने के लिए संघर्ष करेंगे। जीवन में मेरा लक्ष्य, एक अच्छी अध्यापिका बनना है।

भले ही कुछ लोग इसे एक साधारण उद्देश्य समझें पर मेरे लिए यह गौरव की बात है। देश की सेवा और समाज सेवा का सबसे बड़ा साधन यही है। मैं व्यक्ति की अपेक्षा समाज और राष्ट्र

को अधिक महत्त्व देती हूँ। मैं मानती हूँ कि जो नींव की ईंट होती है, महल उसी पर खड़ा होता है। मैं धन, कीर्ति और यश की भूखी नहीं हूँ। मेरे सपने तो राष्ट्र कवि 'श्री मैथलीशरण गुप्त' का यह सिद्धांत था 'सर्मिष्ट के लिए व्यक्ति हो बलिदान।' विद्यार्थी देश की नींव हैं। मैं उस नींव को मजबूत बनाना चाहती हूँ। हमारे समाज और संस्कृति में गुरू का बहुत महत्त्व रहा है। गुरू को माता–पिता तथा ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया हैं।

कबीर के अनुसार–

गुरू गोविंद दोनों खड़े, काके लागूँ पाय। बलिहारी गुरू आपने, जिन गोविंद दियो बताय।

अर्थात् गुरू और ईश्वर दोनों खड़े हों तो मैं पहले गुरू के चरणों में प्रणाम करूँगी। क्योंकि ईश्वर को दिखाने वाला तो गुरू ही है। माता–पिता तो जन्म देते हैं पर ज्ञान रूपी आँख देने वाला तो गुरू ही होता है। मेरी इच्छा पूरी होगी या नहीं, ऐसा विचार करने वाले लोग स्थिर मति के नहीं होते हैं। वे अपने काम को छोड़ देते हैं, केवल इसलिए कि काम कठिन है लेकिन वहीं दूसरा व्यक्ति जीवन में उस लक्ष्य तक पहुँच ही जाता है। जिसके इरादे पक्के होते हैं वह संकटों की परवाह नहीं करता। उसका ध्यान सदा अपने लक्ष्य में सफलता पाने का होता है। इन सब बातों को देखकर लगता है कि यदि मैं हिम्मत करूँ तो अवश्य ही अध्यापिका बन जाऊँगी। अध्यापक, दीपक की भाँति खुद जलकर, दूसरों को प्रज्जवलित करता है। वह देश को उन्नति के शिखर पर ले जाता है। इस पेशे ने मुझे बचपन से ही आकर्षित किया है। मैं अध्ययन करना और पढ़ाना बहुत पसंद करती हूँ। यह मुझे आनंद और संतुष्टि देता है। छात्र जीवन के दौरान मैंने अनेक बार अच्छे शिक्षक की अराजकता को महसूस किया है जबकि यह सबसे सम्मानीय पेशों में से एक है।

इसे लक्ष्य के रूप में चुनने के पीछे का भी कारण है। किसी देश की प्रगति वहाँ की शिक्षा और कुशलता पर निर्भर करती है। इसमें शिक्षक की बड़ी भूमिका होती है। जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ तब उस समय हमारी साक्षरता दर मात्र 12 प्रतिशत थी। 2011 की जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 74 प्रतिशत है। अभी हमें एक लम्बा रास्ता तय करना हैं। शैक्षिक दृष्टि से देश के ग्रामीण हिस्सों की स्थिति सबसे बेहतर है। सबको शिक्षित करना आवश्यक है और यही कारण है जिस वजह से मैं एक अच्छी और ज़िम्मेदार अध्यापिका बनना चाहती हूँ।

मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि एक प्राइमरी शिक्षक ज़्यादा नहीं कमाता। उसका जीवन विलासिताओं से भरा नहीं होता है, किंतु मुझे इससे कोई समस्या नहीं है। मैं महसूस करती हूँ कि शिक्षक का काम अपने छात्रों को कुशलतापूर्वक पढ़ाना है। ताकि वे कुशल डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, नेता आदि बनें और देश की सेवा करें।

मैं अध्यापिका बनकर अपने विद्यार्थियों को संस्कारी, सदाचारी, देश भक्त एवं चरित्रवान बनाना चाहती हूँ। मैं शिक्षिक बनकर अपने समाज में फैली हुई कुरीतियों और अंधविश्वासों का नाश करना चाहती हूँ। अध्याक बनकर ग़रीबों और असहायों को मुफ़्त शिक्षा देना चाहती हूँ। विद्यार्थी, देश की नींव हैं, मैं शिक्षक बनकर उस नींव को और मजबूत करना चाहती हूँ। मैं शिक्षक बनकर अपने गाँव के बच्चों को और ग्राम वासियों को ऐसा बनाना चाहती हूँ ताकि उन्हें कोई लूट न सके।

मैं बताना चाहती हूँ कि यू.पी. में प्राइमरी का अध्यापक कैसे बन सकते हैं। पहले ग्रेजुएशन करना होगा, बीए, बीएससी, बीकॉम इत्यादि। इसके बाद प्राइमरी शिक्षक बनने के लिए बीटीसी करना होगा, यह दो साल का कोर्स होता है। इसके बाद, अध्यापक पात्रता परीक्षा होती है, जिसे टेस्ट के रूप में यूपीटेट या सीटेट, दोनों में से कोई भी एक परीक्षा पास करनी होती है। तब आप सभी टेस्ट की परीक्षा दे सकते हैं। सुपरटेट में एक मुख्य परीक्षा होती है। जब कोई बैकंसी निकलती है, उसे ही सुपर टीटी कहते हैं। अगर आप सुपर टीसीटी की परीक्षा पास कर लेते हैं तो आप आसानी से प्राइमरी टीचर बन सकते हैं।

मैं सरकार से यही सहायता चाहती हूँ कि सरकार, चाहे सरकारी या प्राइवेट कोई भी फार्म निकाले तो उसे समय पर करवाये। बहुत से विद्यार्थी फॉर्म भरते हैं और परीक्षा का इंतज़ार करते हैं। वे सोचते हैं कि सरकार कब परीक्षा कराएगी और उन्हें परीक्षा देने का मौका मिलेगा। मैं सरकार से यही सहायता चाहती हूँ कि सरकार हर वैकेंसी समय से निकाले। बहुत से विद्यार्थी तैयारी करके बेठे रहते हैं लेकिन सरकार समय से परीक्षा नहीं करवाती है। सरकार को सभी परीक्षाएं समय पर करवा देनी चाहिए ताकि हमारे देश के युवा बेरोजगारों को नौकरी का अवसर मिल सके। मैं सरकार से यह भी सहायता चाहती हूँ कि उन्हें ब्लॉक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे से अच्छे कॉलेजो का निर्माण कराना चाहिए। ताकि हमारे जो ग्रामीण इलाके की लड़कियाँ हैं, जो बाहर किसी शहर में जाकर किसी कारण से नहीं पढ़ पा रही हैं, उन्हें भी अपना सपना पूरा करने का मौका मिले। ताकि वे भी अपने गाँव, अपने माता–पिता का नाम ऊँचा करें। बाकी जिन लड़कियों की पढ़ाई बीच में छूट गयी है, उसे वे पूरा कर सकें। ताकि जो लोग गाँव में रहते हैं, उन्हें अपना भविष्य बनाने का मौका मिले।

मैंने यह निश्चय कर लिया है कि शिक्षक बनना, देश की सेवा करने का सबसे अच्छा तरीका है। सिर्फ़ अच्छे और विद्वान छात्र ही देश को आगे ले जा सकते हैं। मैं अपने देश को ऐसे विद्यार्थी उपलब्ध करा कर प्रसन्न होऊँगी। वे भारत को ज़्यादा आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनाएँगे।

– विजयलक्ष्मी, 22, उत्तर प्रदेश

आज़ादी से रहना पसन्द है

मैं यशोदा गुर्जर, 23 वर्ष की हूँ। मैं अजमेर के छोटे से गाँव में रहती हूँ। हमारे घर में कुल 7 लोग रहते हैं, पिता, भाई–बहन, भाभी और मैं। मेरे पिता मज़दूर हैं। मेरा बाल विवाह होने के कारण मेरे सपने बनने से पहले ही टूट चुके हैं। जब मैं 10 वर्ष की थी, तभी मेरे हँसते–खेलते जीवन में बाल विवाह के अभिशाप ने मुझे हमेशा के लिए पीछे धकेल दिया। बाल विवाह होने के बाद मैंने जैसे–तैसे बीए तक की पढ़ाई पूरी की और अभी मैं मास्टर ऑफ आर्ट्स की पढ़ाई (एमए) कर रही हूँ। ये पढ़ाई मैं इसलिए पूरी करना चाहती हूँ ताकि मैं अपने सपनों को साकार कर सकूँ।

मैं 16 वर्ष की थी जब मेरी माँ का कैंसर की वजह से डेथ हो गया। हम पाँच बहन–भाईयों में मैं सबसे बड़ी हूँ। बड़ी होने के कारण घर की ज़िम्मेदारियाँ मेरे ऊपर आ गई थी और मुझे घर संभालना पड़ा। ससुराल वालों का दबाव भी आया कि ससुराल भेज दिया जाए पर मैंने निर्णय लिया था कि मैं कम उम्र में ससुराल नहीं जाऊँ और अपने पैरों पर खड़ी होऊँ।

मुझे आज़ादी से रहना पसंद है। मुझे कोई रोक–टोक पसंद नहीं है। गाँव में जाति और पंचों के द्वारा किए जाने वाले फ़ैसले भी मुझे पसंद नहीं हैं। मेरा सपना है कि मैं पुलिस बनूँ और इस सपने को साकार करने की लगातार तैयारी भी कर रही हूँ। ताकि

मैं पुलिस में जाकर मेरे जैसी कई लड़कियों, जिनका बाल विवाह हो जाता है और जिन पर हिंसा होती है और जो बाल श्रम करने वाली हैं, उन सभी प्रताड़ित महिलाओं की सहायता

कर सकूँ। इसलिए मैं दिन रात अपने सपने को साकार करने के लिए सोचती रहती हूँ। पढ़ाई करती हूँ, लोगों से अनुभव लेती हूँ और खुद पर लागू कर रही हूँ, जिससे मेरे सपने साकार हो सकें।

सरकार से मेरी ये उम्मीद है कि समय–समय पर पुलिस विभाग में भर्तियाँ निकाले। जिससे मैं आवेदन कर सकूँ और भर्ती की प्रक्रिया निष्पक्ष हो। किसी प्रकार से पेपर निरस्त नहीं हो या लीक नहीं हो। ताकि हमारी उम्मीदें कायम रहें और सपने न टूटें और मैं भी सरकार को अपनी सेवा दे सकूँ।

अभी की परिस्थितियों में जब हम पेपर देकर शांति से घर जाते हैं तब पेपर लीक की ख़बर आ जाती है और हमारी मेहनत यूँ ही ख़राब हो जाती है।

जब मेरे सपने पूरे होंगे तो वह मेरी ज़िंदगी का सबसे खुशनुमा दिन होगा, जब मैं पुलिस अफसर बन जाऊँगी। वैसे तो मैं एक सोशल वर्कर बनकर भी ये कर सकती हूँ लेकिन आज देश भर में महँगाई काफ़ी बढ़ गई है और घर चलाने के लिए एक अच्छे वेतन की आवश्यकता भी है। क्योंकि मैं एक ग़रीब परिवार से हूँ तो इसलिए भी ये ज़रूरी है। मैं और मेरे जैसे युवा जो समाज के रोक–टोक वाले रीति–रिवाजों को बदलना चाहते हैं उनके साथ बदलाव की कोशिश करूँ। अगर किसी कारण से मैं इसमें नहीं जा पाई तो इसके आगे का भी रास्ता निकाल लूँगी, ताकि मैं बदलाव ला सकूँ।

सरकार मेरे जैसे सभी युवाओं की सहायता करे तो काफ़ी अच्छा रहेगा और हम अपने सपने पूरे कर सकेंगे। आजकल भष्ट्राचार इतना बढ़ गया है कि लड़कियों तक सरकार की योजनाएँ पहुँचना मुश्किल है। क्योंकि दस्तावेजों को पूरा करने में पैसे देने पड़ते हैं और मज़दूरी करने वालों के पास इतने पैसे नहीं होते हैं। थोड़ी सी ग़लती होते ही योजना से नाम कट जाता है और हम बाहर हो जाते हैं।

सरकार इन पर कड़े कदम उठाए और जो भी सरकारी अधिकारी हैं वो ईमानदारी से अपना काम करें, सरकार यह सुनिश्चित करे। ताकि हमारे जैसे कई लोगों के सपने न टूटें और हमें अपने छोटे–छोटे कामों के लिए दर–दर न भटकना पड़े। मेरी आशा है कि सरकार जल्द ही यह व्यवस्था ठीक करेगी और मेरे जैसे कई युवाओं के सपने साकार करने में हमारी सहयोगी बनेगी।

धन्यवाद।

– यशोदा गुर्जर, 23, राजस्थान

चमत्कार की संभावना

हम जब भी किसी से मिलते हैं, सबसे पहले हमसे यही पूछा जाता है कि कौन सी क्लास में पढ़ते हो और इसके बाद आप क्या करना चाहते हो या फिर क्या बनना चाहते हो? अपने जीवन में हर कोई सफल होना चाहता है। हर किसी का सपना होता है कि वह बड़ा आदमी बने और एक सफल जीवन जिए। किसी ने सही ही कहा है कि जब आप अपने डर के आगे अपने सपनों को ज़्यादा महत्त्व देंगे तो चमत्कार हो सकता है। सपने ज़रूरी हैं लेकिन यह केवल तभी संभव हो सकता है, जब आप पूरे दिल से बड़ा सपना देखें। तभी आप बड़े सपने को हासिल करने में सक्षम होंगे।

हमें अपने सपने के प्रति प्रेरित रहना चाहिए। जब भी हम किसी काम को करते हैं तो उसके लिए मोटिवेट रहना ज़रूरी है। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके सामने थोड़ी सी कोई समस्या आती है तो वे थक जाते हैं और डिमोटिवेट हो जाते हैं। फिर उनके मन में यही विचार आता है कि मैं ये नहीं कर सकता। उस समय हमें सिर्फ़ अपने सपने पर ही फोकस करना चाहिए डिमोटिवेट नहीं होना चाहिए। क्योंकि आप सपने देख सकते हैं तो उसे हासिल भी कर सकते हैं। हमें यह बात खुद को याद दिलाना होगा कि मैं इसे कर सकता हूँ और उसके लिए पुनः कोशिश करें। हम एक दिन ज़रूर अपने सपने को हासिल करने में क़ामयाब होंगे।

सपनों को पूरा करने के लिए हमें अपना महत्त्वपूर्ण काम नहीं भूलना चाहिए। कई लोग अपने सपने पूरे करने के लिए इतनी पढ़ाई करते हैं कि वह बाकि के कार्यों को महत्त्व नहीं देते।

जैसे– समय पर मनोरंजन, खेलना, टहलना आदि। अपने जीवन में कुछ हासिल करने के लिए हमें पढ़ाई तो करनी ही पड़ेगी लेकिन इसके साथ ही हमें वह सब भी करना ज़रूरी है। आप ये तय कर लें कि मैं इतना पढ़ने के बाद खेलने जाऊँगा, इतने घंटे पढ़ाई के बाद ही मोबाइल का उपयोग करूँगा। क्योंकि हमारे जीवन के विकास में इन सब चीजों का भी बहुत योगदान है। आप निश्चित समय तक खेलें, निश्चित समय तक टीवी देखें, निश्चित समय तक मोबाइल का प्रयोग करें और इसी तरह से अपने अन्य कामों के लिए समय निश्चित कर लें। शिक्षा के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इन सभी चीज़ों का प्रयोग करें क्योंकि हमारे लिए ये सब चीज़े उतनी ज़रूरी नहीं हैं।

हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हम एक सकारात्मक वातावरण में रहें। आप हमेशा ऐसे ही लोगों के साथ रहें जो आपको एक सकारात्मक सोच देते हों। जिनसे आपको कुछ सीखने को मिलता हो, ऐसे लोगों से आपके हमेशा मोटिवेशन मिलता रहेगा। आप ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखें जिनसे नकारात्मकता आती हो। क्योंकि ऐसे लोग आपके बारे में बुरा ही कहते रहेंगे।

असफलता भी हमारे जीवन का एक हिस्सा है। यदि हमारे जीवन में असफलता नहीं होगी तो हम कभी भी सफलता के महत्त्व को नहीं जान पाएँगे। कई बार हम अपनी ही गलतियों के कारण अपने काम में सफल नहीं हो पाते हैं और हार मान लेते हैं। हमें हार नहीं मानकर उन गलतियों से सबक लेना चाहिए और उन गलतियों को सुधारकर फिर से कोशिश करनी चाहिए। ऐसा करने से निश्चित ही हमें सफलता हासिल होगी।

– गमिता कोला, 20, छत्तीसगढ़

सपने मेरी जान हैं

मेरे सपनों की उड़ान कुछ ऐसी है जो मुझे वास्तव में मुझे बहुत खुशी देती है। मैं हमेशा अपने सपनों में ही जीना पंसद करती हूँ। जब भी मैं अपने सपनों के बारे में किसी से कहती हूँ तो उसे थोड़ा मज़ाक लगता है। मुझे पता नहीं कि ऐसा क्यों होता हैं लेकिन मुझे अपने सपनों में रहना बहुत ही पसंद है। मैं अपने सपनों के लिए सब कुछ कर सकती हूँ। अपने सपनों को पूरा करने के लिए जीवन में पूरी मेहनत करूँगी। सपने दो तरह के होते हैं, एक हम जो रात में देखते हैं और दूसरा हम जो जागते हुए खुली आँखों से देखते हैं। अक्सर हम रात में सोते हुए भी सपनों की उड़ान में खोए रहते हैं। हम रात में कई तरह के सपने देखते हैं जैसे कि हम किसी बगीचे में खड़े हुए हैं और हमारे पास एक सुंदर सी परी आती है। वह हमें आसमान में उड़ा ले जाती है और हमें अपने साथ आसमान की सैर कराती है। फिर, कुछ दिनों तक वह अपनी जगह पर घुमाती है और वापस मुझे मेरी जगह पर छोड़ जाती है। इस तरह से हम कई तरह के मनमोहक़ सपने अक्सर रात में सोते हए देखते हैं लेकिन जब हम जागते हैं तो हक़ीक़त कुछ और ही होती है। दुनिया में बहुत सारे ऐसे लोग होते हैं जो दिन में जागते हुए भी सपने देखते हैं। ऐसे लोगों में मैं भी हूँ और मेरे सपनों की उड़ान ऐसे सफल लोगों की तरह ही है। कभी–कभी जब मैं अपने सपनों के बारे में सोचकर मुस्कुराती हूँ तो मेरे घर वाले मुझ पर हँसने लगते हैं। जब वे मुझसे पूछते भी हैं तो उन्हें बताते हुए मुझे काफ़ी खुशी होती है कि मैं अपनी सफलता के सपने देख रही हूँ।

मेरे घरवाले मुझे पागल कर देते हैं। मेरा सपना शुरू से ही एक शिक्षिका बनने का रहा है।

मैं अपने गाँव में काफ़ी प्रसिद्ध हूँ क्योंकि मैं बच्चों को रोज चार घंटे फ्री पढ़ाती हूँ। मेरे पिता जी एक मज़दूर हैं। वो पढ़े–लिखे नहीं हैं लेकिन उन्होंने मुझे पढ़ाया। मैं शिक्षिका बनके ग़रीब बच्चों की पढ़ाई में मदद करूँगी। मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक दिन बहुत अच्छी शिक्षक बनूँगी। मेरे सपनों की उड़ान बहुत लंबी हैं और मैं एक अच्छी शिक्षिका बनना चाहती हूँ। मैं अपने सपनों में ही रहना चाहती हूँ, सपने बगैर मेरा जीवन संभव नहीं है इसलिए मेरे सपने, मेरी जान हैं।

हर किसी का सपना सफल कैरियन बनाना है। जब मैं छोटी थी तब मैंने एक पुलिस बनने का सपना देखा और फिर हम बड़े होते गए। मैंने 12वीं पास किया तो मेरा ध्यान शिक्षक बनने की ओर आकर्षित हो गया। बड़ा सपना देखने में कोई हानि नहीं है लेकिन ध्यान रखें कि अपना रास्ता बुद्धिमानी से चुनें। अपनी क्षमता और अन्य पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अवास्तविक कैरियर या न पा सकने वाले लक्ष्यों को निर्धारित न करें।

केवल कैरियर के लक्ष्यों का पीछा करने और पेशेवर बनने के बाद जीवन में एक समय ऐसा आता है कि आप अपने आपको अकेला पाते हैं। इसलिए यह महत्त्वपूर्ण है कि आप सजग रिश्तों और फिटनेस के लक्ष्यों को भी ध्यान में रखते हुए पेशेवर रूप से सफल होने का सपना देखें। अपने कैरियर के सपने को साकार करने के लिए, इन्हें प्राप्त करने के लिए ईमानदारी से काम करें।

मैं समाज से बस यही सहायता चहाती हूँ कि वह किसी के सपनों पर हँसे न। किसी के सपनों के असफल होने पर उसको ताने न दे बल्कि उसको प्रेरित करें कि तुम ऐसा कर सकते हो। अपनी लड़कियों को भी प्रेरित करें कि वे भी सपने देखने की हक़दार हैं। उनके सपनों को पूरा करने में सहायता करें। मैं समाज से बस यही सब सहायता चहाती हूँ। जिससे कि मैं बाद में गर्व से कह सकूँ कि मेरा समाज बहुत अच्छा है।

यही जज़्बा रहा तो मुश्किलों का हल भी निकलेगा। जमीं बंजर हुई तो क्या, वहीं से जल भी निकलेगा। न हो मायूस, न घबरा अँधेरों से मेरे साथी। इन्ही रातों के दामन से सुनहरा कल भी निकलेगा।

– सुमित्रा, 19, राजस्थान

सपने तो हज़ार हैं, करने को भी तैयार हैं

सपने तो हज़ार हैं, करने को भी तैयार हैं।
चाहे पड़े कितने भी दिन–महीने, जागने को भी तैयार हैं।
पूरा ज़ोर लगा देंगे, रात कई जग जाएँगे, सपने ज़रूर पूरा करेंगे
सपने ज़रूर पूरा करेंगे, एक दिन ज़रूर जीत जाएँगे।
क़ामयाबी अवश्य पाएँगे।

सपने देखें तो कई हज़ार थे और कई हज़ार देखती भी हूँ। लेकिन कुछ सपनों को पूरा करने में शायद किस्मत साथ दे और शायद कोई नहीं दे पाए। सपने सिर्फ़ पढ़ाई से जुड़े नहीं हैं, कुछ परिवार से भी हैं। जिस सपने में परिवार न हो वो सपना शायद ही कभी हक़ीक़त हो। सपने देखना बहुत पसंद है और पूरा करने को भी तैयार है। लेकिन किस्मत में जो लिखा है उसको बदलना सिर्फ़ अपने हाथो में ही है और कुछ सिर्फ़ भगवान के अनुसार होता है।

मेरे सपनों में मेरा परिवार भी है, जिनको हमेशा से साथ खुश रहते हुए देखना भी मेरा सपना है। पहले पापा भी थे, अगर पापा अभी भी हमारे साथ होते और अच्छे से होते तो कितना अच्छा होता। लेकिन अब मेरे पापा भगवान जी के पास हैं, उनकी कमी महसूस होती है, लेकिन माँ हैं जो पापा की जगह बनी रहती हैं। वे एक मर्द के जैसे रहती हैं और करती हैं। इसलिए अब सोचती हूँ कि हम जितने भी हैं, मेरी माँ, मेरा भाई और मेरा भाई (शेरू) एक डॉग है। अब हम ही एक साथ रहें और खुश रहें।

मेरा सपना अपने परिवार को एक साथ खुश देखने का है। मैं अपने सपने को पूरा करने से पहले चाहे आगे शिक्षा प्राप्त हो या न हो लेकिन मुझे अपने जीवन में एक नेक मनुष्य बनना है। जिसमें मैंने व्यवहारिक विधा, हाव–भाव, सब कुछ अच्छे से अपने जीवन में सीखा है। इनके बिना शिक्षा अधूरी है। शिक्षा प्राप्ति से मनुष्य जब तक व्यवहार में अच्छा नहीं होगा, तब तक उसके कदम पीछे रहेंगे और कभी क़ामयाबी हासिल नहीं कर पाएगा। एक नेक मनुष्य के बाद मैं अपने आप को एक वकील के रूप में देखना चाहती हूँ। जो औरों के लिए इंसाफ का दूसरा दरवाज़ा है। मैं वकील बनकर उनकी सहायता करना चाहती हूँ जो खुद की भी मदद नहीं कर पाते। जिनकी पुलिस भी मदद नहीं कर पाती। जिनकी पुलिस तक नहीं सुनती, जो बेबस और लाचार हों। जो इंसान की गुहार लगाते हैं। जिनको चंद रूपयों की वजह से इंसाफ तक नहीं मिल पाता। मेरा सपना इलेक्शन में खड़ा होना भी है। अगर मैं जीत जाती हूँ तो गरीबों की सहायता करना चाहती हूँ। बेघर को घर दिलवाना चाहती हूँ। जिन बच्चों को पढ़ाई नहीं मिल पा रही, उनको परिवार पालने के लिए पढ़ाई/शिक्षा दिलवाना चाहती हूँ। मैं ग़लत फर्ज़ी काम बंद करवाना चाहती हूँ।

ऐसा नहीं है कि मैं इलेक्शन में जीतने पर ही ये सब कार्य करूँगी। मैं ये कार्य एक आम मनुष्य के रूप में भी करूँगी।

मेरा सपना ये भी हैं की मैं अपने माता–पिता के नाम पर एक कंपनी खोलना चाहती हूँ। जो वेब ड़िजाइनिंग से रिलेटेड होगी। मैं अपने माँ–भाई के नाम पर अच्छी सी सोसाइटी एरिया में एक फ्लैट लेके रहना चाहती हूँ। मुझे पैसे नहीं नाम कमाना हैं। कहते हैं कि अगर पूरा परिवार सपनों को पूरा करने में साथ हो तो हिम्मत और भी बढ़ जाती है और खुशी भी चौगुनी हो जाती है। मुश्किलें भी असानी से पार हो जाती हैं।

मेरा परिवार मेरे सपनों को पूरा करने में हर तरह मेरे साथ है और सहायता भी करता है। सिर्फ़, पापा नहीं हैं, क्योंकि वो भगवान जी के पास हैं लेकिन वे दूर होकर भी हमारे पास हैं। मुझे पूरा यक़ीन है अगर मेरे पापा होते तो वे भी मेरे सपनों को पूरा करने में ज़रूर साथ देते।

मैं अपने परिवार से बस यही एक चीज़ माँगती हूँ कि जबतक मैं अपने सपनों को पूरा न कर लूँ तबतक और आगे भी ऐसे ही साथ दें और हमेशा खुश रहें। मैं दूसरें परिवारों से एक सहायता अवश्य माँगती हूँ, जो आज के आधुनिक वक़्त में भी पिछड़े वक़्त में जीते हैं। मेरे जैसे ही दूसरे बच्चों के भी सपने होते हैं, इनको अपने बच्चों के सपनों को पूरा करने में सहायता करनी चाहिए। कुछ परिवार अपनी फाइनेंशियल स्थिति की वजह से और कुछ तो मजबूरी की वजह से भी ऐसा नहीं कर पाते।

मैं उनकी बात कर रही हूँ जो आज के मॉर्डन टाइम भी डिस्क्रिमिनेशन करते हैं। जो सिर्फ़ लड़कों को ही परमिशन देते हैं और लड़कों को ही आगे बढ़ाते हैं। लड़कों की हर तरह से सहायता करते हैं और साथ भी देते हैं। आज भी कुछ परिवार ऐसे हैं। ऐसा ज़्यादातर राजस्थान, गुजरात और देहात के इलाकों में होता है। और वहाँ भी जहाँ पढ़े–लिखे कम हैं, यह पूरी तरह से ग़लत है। क्या लड़कियाँ ही घर की इज्ज़त हैं? क्या लड़कियाँ सिर्फ़ घर के कामों के लिए हैं? उनका कोई सपना नहीं? ये सवाल उन परिवार से हैं जो इस तरह की सोच रखते हैं। क्योंकि समाज से पहले परिवार आता है और बच्चों की खुशी किस चीज़ में है इसे परिवार से अच्छा कौन जानेगा। अगर परिवार साथ नहीं खड़ा होगा तो समाज भी साथ नहीं देगा। परिवार और समाज को क्या सिर्फ़ लड़कों से उम्मीद है लड़कियों से नहीं? अरे, परिवार में माता–पिता से ज़्यादा यह कौन जान सकता है की उनकी बच्चियों के आँखों में क्या सपना छिपा है। सभी परिवार से यही विनती है कि लड़का–लड़की दोनों को समान रूप से देखें और मानें। दोनों के सपनों को देखने में और पूरा करने में सहायता करें और साथ दें। क्योंकि समाज से पहले परिवार आता है और जब हर घर, हर परिवार बदलेगा तभी समाज बदलेगा और आगे बढ़ेगा।

हर परिवार को अपने बच्चों को समय देना चाहिए। कुछ वक़्त बच्चों के साथ बिताना चाहिए। घर का माहौल ऐसा होना चाहिए जिससे उनके बच्चों की ज़िंदगी पर कोई असर न पड़े। घर में लड़के हों चाहे लड़कियाँ दोनों को अपने सपने पूरा करने का अधिकार है। परिवार का भी सपोर्ट होना अवश्य है। देखो, बच्चों में हिम्मत होते है। बच्चों को ऐसा माहौल दें जिससे वह पढ़ाई पर ध्यान दे सकें और अपने सपनों के प्रति भी ध्यान दे सके।

– शालू, 21, नई दिल्ली

पंख देकर देख लो

मेरा नाम शहर फातिमा है। मैने पिछले साल अपना ग्रेजुएशन पूरा किया है। इस महामारी (कोविड–19) की वजह से हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति बदहाल हो गई, हमारे परिवार को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा। जिसके फलस्वरूप अब मेरे घर वाले, मेरे छोटे भाई–बहनों को भी अच्छी शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं।

बचपन से मेरा एक ही सपना रहा है कि मैं वकील बनूँ। ऐसी वकील जिसकी ज़रूरत आज हमारे पूरे समाज को है। आज के समय में लोगों की यह सोच बनी हुई है कि वकील सिर्फ़ लूटने–खाने के लिए होते हैं। मैं वकील बनकर उनकी और अपने समाज की इस सोच को बदलूँगी। मैं वकील बनकर उन्हें यह यक़ीन दिलाऊँगी कि मैं एक अच्छी वकील हूँ और मैं अच्छी वकील बनने की पूरी कोशिश करूँगी। पूरी कोशिश करूँगी कि उन्हें उनके हिस्से का इंसाफ दिला सकूँ। जिसके फलस्वरूप उन्हें यक़ीन हो जाए कि मैं वकील के साथ–साथ एक अच्छी समाज सेविका भी हूँ। यह मेरा संकल्प भी है और मेरा सपना भी है।

सपनों को पूरा करने में आने वाली बाधाओं को मैं भलिभाति जानती हूँ। मैं जानती हूँ कि मेरा सपना इतनी आसानी से नहीं पूरा होगा। यह सिर्फ़ मेरी ही दिक्कत नहीं है, हमारे समाज की लगभग सभी लड़कियों की यही दिक्कत है। किसी को पैसों की दिक्कत है तो किसी को किसी के घर वालों की इज़ाजत नहीं मिलती। जैसे कि हमारी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं हैं। इसलिए मैं अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए एक–एक सीड़ी पार करूँगी।

हमारे माता–पिता ने हमारा ग्रेजुएशन ही बड़ी मुश्किल से कराया है. क्योंकि हमारी आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर है। दूसरी बात यह है कि मेरे अलावा मेरे और भी चार भाई–बहन हैं। जिनकी भी पढ़ाई का बोझ मेरे माता–पिता पर है। इसीलिए मैं नौकरी करके अपने सपने को स्वयं अपने बल पर पूरा करना चाहती हूँ।

बनकर एक सितारा आसमान का
खुद को इतना चमकाऊँगी
अपने समाज की लड़कियों के लिए
एक ऐसी मिसाल बन जाऊँगी।

मुझे अपने सपनों को पूरा करने के लिए न ही सरकार से न अपने परिवारसे कोई मदद चाहिए। बल्कि मैं आत्मनिर्भर होकर खुद के पैरों पर खड़ी होकर अपने सपनों की ऊँची उड़ान भरना चाहती हूँ। क्योंकि मेरे घरवालों ने और मेरे माता–पिता ने मुझे इतना पढ़ाया–लिखाया और इस क़ाबिल बनाया है कि मैं जो भी चाहूँ करूँ। अब मैं उनका सहारा क्यों लूँ? मुझे अब घर वालों का कोई सहारा नहीं चाहिए। अब मैं जो करूँगी अपने पैरों पर खड़े होकर अपने दम पर करूँगी। और हाँ, मुझे इस समाज से तो कोई भी सहारा नहीं चाहिए क्योंकि ये समाज लड़कियों को तो वैसे भी आगे बढ़ना पसंद नहीं करता है, न ही उनका कहीं घूमना–फिरना न ही कहीं आना जाना। बस मैं अब यही चाहती हूँ कि मैं अपने समाज और समुदाय के लिए एक मिसाल बनकर उनके सामने खड़ी हो जाऊँ। ताकि वे मुझे देखकर अपने घर की लड़कियों को उनके सपनों को पूरा करने से न रोकें। वे लड़कियाँ जिन्होंने बचपन से अपने दिल में जो सपना पाला है, उसे पूरा करने में वे सक्षम हों। इसीलिए मैं अपने समाज के लोगों से चंद शब्दों में एक बात कहना चाहती हूँ।

कि पंख देकर देख लो, उड़ सकती मैं भी हूँ।
ज़रा अपने बच्चियों को, एक उड़ान भरने तो दो।
ये समाज क्या कहेगा, ये सोचना अब बंद करो।
और उनके सपने पूरे करने में अब उनकी मदद करो।

मेरी ये पंक्तियाँ अपने समाज की उन छोटी सोच वालों के लिए है, जिन्हें लगता है कि अगर लड़कियाँ बाहर निकलेंगी तो वे बर्बाद हो जाएँगी। जिन्हें लगता है कि लड़कियाँ तो सिर्फ़ बर्तन झाड़ू के लिए ही होती हैं और जिन्हें ऐसा लगता है उन्हें मैं स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहती हूँ कि लड़कियों के भी कुछ सपने और कुछ अरमान होते हैं। लड़कियाँ सिर्फ़ घर के कामों के लिए नहीं होती हैं। वह भी सपने देखती हैं पर किसी कारणवश वह उन्हें पूरा नहीं कर पाती हैं। मैं चाहती हूँ कि मैं वकील के साथ–साथ एक अच्छी समाज सेविका भी बनूँ और

उन परिजनों को समझा सकूँ कि लड़कियों को भी लड़कों की तरह आज़ादी मिलनी चाहिए। क्योंकि वह भी एक इंसान हैं। आपके बेटों की तरह उनके भी कई सारे सपने हो सकते हैं। अब पुरानी सोच को टाटा, बाय–बाय करिए और उन्हें भी उतनी ही आज़ादी दीजिए, जितनी की आपने अपने बेटों को दे रखी है। मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन वह भी आपका बेटा बनकर दिखाएँगी। बस उन्हें एक मौका मिलना चाहिए। मैं चाहती हूँ कि आप सब अपनी बेटियों को वह मौका दें। मैं यह भी चाहती हूँ कि मेरी तरह हर लड़की अपने सपनों को पूरा करने की हिम्मत करे। मुझे यह हिम्मत देने में सबसे बड़ा हाथ मेरे घर वालों और 'हमसफर' संस्था का है। मैं इन सबको धन्यवाद देना चाहती हूँ। सबसे पहले धन्यवाद मेरे अम्मी–पापा का जिन्होंने मुझ पर इतना भरोसा किया और धन्यवाद 'हमसफर' संस्था का जिन्होंने मेरे सपनों को पूरा करने के लिए मेरी ज़िंदगी को एक नई ऊर्जा दी।

इस सबके पीछे मेरा उद्देश्य यह है कि मैं अपना सपना पूरा करके अपने अम्मी–पापा का नाम रोशन कर सकूँ, जिन्होंने मुझे इतनी आज़ादी दी। मैं चाहती हूँ कि मैं अपने समाज की लड़कियों के लिए मिसाल बनूँ। जिससे हमारे समाज में लड़के–लड़की का भेदभाव समाप्त हो सके। इसलिए मैं ये कुछ लाइने कविता के रूप में लिख रही हूँ।

ये समाज क्या कहेगा, अब ये कहना छोड़ दो।
अपनी लड़कियों को अब, आज़ादी देकर देख लो।
पंख खुले हैं उनके भी, वह भी उड़ना चाहती हैं।
पंखों को फैलाने दो, और ज़रा उड़ जाने दो।
एक सितारा बनके एक दिन, आसमान में चमकेंगी वो।
तब कहोगे मेरी बेटी, वो रही ज़रा देखो लोगों
उसे अंधेरों से उजालों, में ज़रा जाने भी दो।
तब कहोगे मेरी बेटी, वो रही ज़रा देख लो।

– सहर फातिमा, 23, उत्तर प्रदेश

भरो बाज की उड़ान

मेरे सपने ये नहीं हैं कि मैं सिर्फ़ कोई नौकरी करूँ। मेरे सपने यह हैं कि मैं नौकरी प्राप्त करके सबको शिक्षा पाने के लिए तरह–तरह के उदाहरण और सलाह देती रहूँ। उन्हें बताऊँगी कि शिक्षा प्राप्त करके केवल नौकरी पाना ही हमारा लक्ष्य नहीं है बल्कि आत्मनिर्भर बनना भी बहुत ज़रूरी है। हर व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ लक्ष्य होता है, जिसे वह पाना चाहता है। मेरे जीवन का लक्ष्य है, यू.पी.एस.सी. पास करके आई.ए.एस बनना। लेकिन उससे पहले मैं बैंक की नौकरी करूँगी फिर आई.ए.एस. बनूँगी।

मेरे जीवन में मेरी नौकरी बहुत मायने रखती है। जीवन में समाज की भी अहम भूमिका होती ही और मेरे जीवन में भी है। हमें समाज बोलना, चलना, पहनना, सिखाता है। परम्पराओं और संस्कृतियों को तो सिखाता है लेकिन दूसरी तरफ लड़कियों के घर से बाहर निकलने और कहीं जाने पर तरह–तरह की बातें भी बनाता है। हम लड़कियों को नौकरी करने के सपने तो दिखाए जाते हैं लेकिन घर पर चूल्हा–चौका भी करें और साथ में नौकरी भी करें। समाज हमें बोलने को तो कहता है लेकिन समाज हमें अपने हक़ के लिए लड़ने नहीं देता। समाज, हमारे सपने को नहीं रोकता लेकिन हमारे पीठ पीछे बहुत सी बुराईयाँ करता है।

इसीलिए समाज हमें आगे कम बढ़ने देता है और पीछे ज़्यादा ढकेलता है। इसीलिए समाज के हिसाब से चलेंगे तो घर तक ही सीमित रह जाएँगे। इसलिए खोलो पंख, भरो बाज की उड़ान और तितलियों का साथ छोड़ना होगा। मैं एक बात और कहना चाहती हूँ कि मेरे

जीवन में नौकरी का उतना ही महत्त्व है, जितना की आत्मा और शरीर का या जल और मछली का होता है।

मेरे इन सपनों को पूरा करने में पहले सरकार से कुछ ज़्यादा उम्मीद नहीं थी। लेकिन अब जब से हमारे साथ सितारे खान सर है मुझे उम्मीद बढ़ी है। मेरी, सरकार से अपील है कि उनकी हर एक बात को अमल करे ताकि हमारा भारत देश शिक्षित होने के साथ–साथ आत्मनिर्भर भी बने। अगर खान सर जैसे शिक्षक हमारे भारत देश में रहेंगे तो देश को बुलंदियाँ छूने ज़्यादा समय नहीं लगेगा। सरकार को हम जैसे हजारों शिक्षित युवाओं के लिए बहुत ज़्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। सरकार से बस इतनी उम्मीद है कि अगर हमें शिक्षा और रोजगार मिले तो सरकार को हमें घर देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। इसीलिए हमारी अपील है कि सरकार हमारे लिए शिक्षा और रोजगार की व्यवस्था करे।

मिलेगी मंजिल एक दिन, बस जीतने की चाह रखना।
तमाम मुश्किलें आएँ, पर काबू में हर हालात रखना।

– महिमा कुमारी, बिहार

अंतरिक्षयात्री

मैं एक अंतरिक्ष यात्री बनना चाहती हूँ। जब मैं छोटी थी तो मैं और मेरी दादी छत पर सोते थे और मैं आकाश की ओर देखते हुए उनसे कई सवाल किया करती थी। जैसे कि आकाश कितनी दूर है? तारे इतने छोटे क्यों लगते हैं३ आदि। आकाश हर समय मुझे आकर्षित करता था और मैं अपनी दादी के जवाब से कभी संतुष्ट नहीं होती थी। मैं आकाश और तारों को हमेशा अपनी नग्न आँखों से देखना चाहती हूँ। फिर एक दिन मेरे माता–पिता ने मुझे कहा कि मुझे ऐसी चीजों को देखने और उनके बारे में जानने के लिए एक अंतरिक्ष यात्री बनने की आवश्यकता है। यह सब मेरे लिए एक सपना जैसा है और वास्तव में, भविष्य में मैं आकाश और सितारों को देखना चाहती हूँ। मैंने कल्पना चावला, सुनीता विलिएम्स, आदि के बारे में सुना है। मैं उनके जैसा ही बनना चाहती हूँ।

मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकती हूँ। एक अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए एक मात्र रास्ता यही है कि ठीक तरह से अध्ययन किया जाए और अपने अपने अध्यापकों से अच्छे अंक प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया जाए। जिससे कि आगे के कॉलेजों में प्रेवश पाने में मदद मिले। इन सबके अलावा मैं हमेशा अंतरिक्ष से संबंधित विभिन्न टीवी शो और कई अन्य चीजों से भी सीखने की कोशिश करती हूँ।

हम सभी को अपने सपने को एक लक्ष्य की तरह देखना चाहिए। क्योंकि हम मानव हैं और भगवान ने हमें एक जैसा मस्तिष्क दिया है। जो कि हमें जानवरों की तुलना में कहीं बेहतर

बनाता है। जैसा कि जानवर और कीड़े भी होते हैं और वे खाते हैं, सोते हैं। लेकिन इंसानों और जानवरों में फ़र्क बस इतना है कि उनका कोई उद्देश्य नहीं होता है। इसलिए आप एक जानवर की तरह मत बनों। अपने मस्तिष्क का उपयोग करो और एक लक्ष्य निर्धारित करके उसकी ओर आगे बढ़ो। मैं कई अन्य चीजों से भी सीखने की कोशिश करती हूँ। मेंरे पिताजी हमेशा मेरी मदद करते हैं और वे अंतरिक्ष से संबंधित विभिन्न दिलचस्प पुस्तकें लाकर मुझे देते हैं। वे मेरा ज्ञान बढ़ाने में मेरी मदद करते हैं। और वे हमेशा मुझे प्रेरित करते हैं। मेरे माता–पिता मुझे इतना समर्थन देते हैं कि लगता है जैसे यह उन ही सपना है। मेरे स्कूल के शिक्षक भी मुझे अपना समर्थन देते हैं। मैं अपने स्कूल के विज्ञान प्रतियोगिता में हमेशा ही भाग लेती हूँ। यह प्रतियोगिता मुझे नए गैजेट बनाने और मेरी रचनात्मकता को दिखाने में मदद करती है। ऐसा करना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

मुझे यकीन है कि एक दिन मैं अंतरिक्ष यात्री ज़रूर बनूँगी। क्योंकि मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए बहुत उत्सुक हूँ और यह मेरा जुनून है। जब कोई व्यक्ति अपने सपनों को लेकर बहुत भावुक होता है तो कोई भी उसे रोक नहीं सकता है। अंतरिक्ष यात्री बनना मेरा सबसे बड़ा सपना है। मैं जब आसमान को देखती हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं आसमान तक पहुँच जाऊं। जब मैं दिन में आसमान को देखती हूँ तो आसमान में बादल मुझे बहुत ही सुंदर दिखाई पड़ते हैं। आकाश में सफेद–नीला रंग मुझको दिखाई देता है। जब मैं रात में आसमान को देखती हूँ तो टिमटिमाते हुए तारे मुझे बहुत ही सुंदर लगते हैं। मेरा मन करता है कि शायद मैं तारों तक पहुँच सकूँ। इस तरह सोचते–सोचते मैंने अपने मन में कब अंतरिक्ष यात्री बनने का सपना जगा लिया मुझे भी नहीं मालूम चला। अगर मैं अंतरिक्ष यात्री बन जाती हूँ तो मेरे सारे सपने पूरे हो जाएंगे। जब मैं अंतरिक्ष यात्रियों के बारे में पढ़ती हूँ तो मुझे अंदर से ही खुशी महसूस होने लगती है। मैं यह सोचने लगती हूँ कि मैं भी अंतरिक्ष यात्री बन जाऊं और मेरा नाम भी अखबारों, समाचार पत्रों में आए।

अंतरिक्ष यात्रियों को जब अंतरिक्ष स्टेशन पर दिखाया जाता है, जब वह अंतरिक्ष में जाने के लिए तैयार किए जाते हैं तो उनको देखकर ऐसा लगता है कि उन यात्रियों को अपनी ज़िंदगी की परवाह ही नहीं है। वह यह भी नहीं सोचते कि रास्ते में कोई दुर्घटना न हो जाए। उनका एक ही मकसद होता है कि वह इस यात्रा को पूरा करके लौटें। अंतरिक्ष यात्री को अंतरिक्ष से हमारी पृथ्वी गोल और नीली दिखाई देती है। मैं कल्पना करती हूँ कि अंतरिक्ष से हमारी पृथ्वी कितनी अद्भुत दिखाई देती होगी। मैं कभी–कभी कल्पना करने लगती हूँ और सोचने लगने लगती हूँ कि मनुष्य चन्द्रमा पर पहुँच चुका है। पुराने समय के लोग यह कल्पना भी नहीं करते होंगे कि मनुष्य कभी चंद्रमा पर भी पहुँच सकेगा। लेकिन यह हो चुका है। अब

हमारे वैज्ञानिक मंगल पर पहुँचने की तैयारी कर रहे हैं और कुछ ही सालों में वहाँ पर भी पहुँच जाएंगे।

मैं अपने माता–पिता और अपने स्कूल, कॉलेज में पढ़ाने वाले गुरूओं से हमेशा यह पूछती रहती हूँ कि अंतरिक्ष यात्री बनने के लिए क्या करना चाहिए। तो हमारे गुरू बताते हैं कि अंतरिक्ष यात्री बनाने के लिए हमें अपना शरीर स्वस्थ रखना होगा। हम हर मौसम में अपने शरीर को एडजस्ट करके रखें और अच्छे–अच्छे फल–फ्रूट, भोजन खाना चाहिए जिससे हमारा शरीर स्वस्थ होगा।

मैं हमेशा अपने बेस्ट अंतरिक्ष यात्री वेलनटीना तेरेश्कोवा और नील आर्म्सट्रांग जैसे यात्रियों के बारे में पढ़ती रहती हूँ। यह दोनों अंतरिक्ष यात्री मेरे फेवरेट हैं। यह वो व्यक्ति हैं जिन्होंने सबसे पहले चाँद पर कदम रखा और इतिहास में अपना नाम रोशन कर दिया। मैं हमेशा उनके द्वारा दी गई टिप्स को पढ़ती रहती हूँ। हमारा देश भी अंतरिक्ष में काफ़ी तरक्की कर रहा है और मेरी तो यही सोच है कि मैं अपने भारत की ओर से अंतरिक्ष यात्री बनकर वहाँ पर पहुँचूँ।

– पूजा, 21, पंजाब

वाइल्ड लाइफ़ फ़ोटोग्राफ़र

"सपने सच हों इसके लिए, सपने देखना ज़रूरी हैं"

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने सच ही कहा है कि 'सपने देखने चाहिए, भले ही वे छोटे हों या मामूली ही क्यों हों।' सपने देखने का हक़ सबके पास है। उसमें न ही कोई टैक्स लगता है और न ही कोई धर्म, जाति, ऊँच–नीच को लेकर भेदभाव कर सकता है। सपने देखना हमारा अधिकार है और कोई हमें उसके लिए नहीं रोक सकता। इतना ही नहीं, उस सपने को पूरा करने के लिए अगर हम दिन–रात महेनत करें तो कोई हमें उस बुलंदी तक पहुँचने से भी नहीं रोक सकता। हर समाज में कई सारी बाधाएँ आती हैं। हर बार भेदभाव के चलते और बाधाओं के चलते हमें अपने सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करना बहुत कठिन लगता है लेकिन इस परीक्षा में कई लोग सफल हो जाते हैं।

मैं अपने सपने के बारे में बात करूँ तो मुझे एक वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर बनना है। मैंने यह समझने में देर कर दी और सिविल इंजीनियरिंग की फील्ड पसंद कर ली। बचपन से ही मुझे प्रकृति के साथ ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त बिताना पसंद था। इसलिए बचपन से ही मेरे सपने प्रकृति से ही लगाव रखने वाले रहे हैं। जैसे कि वेटरनरी डॉक्टर बनना, फॉरेस्ट ऑफिसर बनना। लेकिन इस सपने के बारे में मैंने कभी सोचा ही नहीं था। अब मैंने सोच लिया है कि पहले मैं अपने कैरियर पर ध्यान दूँगी फिर अपने सपने पूरे करूँगी। क्योंकि मैंने जो सपने देखे हैं, उसे पूरा करने के लिए मुझे बहुत महेनत करनी पड़ेगी और आर्थिक रूप

से सक्षम भी होना पड़ेगा। क्योंकि मंहगाई दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। मेरे सपने इतने बड़े हैं कि उसमें खर्च भी बहुत होगा।

अगर हम अपने समाज की बात करें तो हमारा समाज माता–पिता, परिवार, मित्रो, और आसपास के लोगों से बनता है। जो मुझे बहुत करीब से जानते हैं उन सभी से मैं यही उम्मीद रखना चाहूँगी कि वे मेरे सपने को पूरा करने में मेरा समर्थन करें। अगर मैं कहीं पर ग़लत हूँ तो मुझे समझाएँ और मुझे भी समझें। बहुत बार ऐसा भी हुआ है कि लोग समझते नहीं हैं और मेरे माता–पिता को मेरे विरुद्ध भड़काते हैं। जिसकी वजह से मुझे और मेरे जैसे कई लोगों को काफ़ी संघर्ष करना पड़ता है, फिर परिवार समझाने लग जाता है कि फोटोग्राफ़ी में कोई कैरियर नहीं है। उसमें करना भी क्या है, जानवरों की तस्वीर खीचने से अच्छा है कि इंसान की तस्वीर खींचे और पैसे कमाए। कई लोग मुझे बोलते हैं कि सिविल इंजीनियरिंग करके भी तुम्हें इस सब में रुचि कैसे है। कई बार कुछ चीज़ें सुन कर मुझे हरिवंश रॉय बच्चन की यह पंक्ति याद आती है कि...

स्वप्न मेरे, ध्वस्त सारे हो गए हैं।
किंतु इस गतिवान जीवन का, यही तो बस नहीं हैं।
अभी तो चलना बहुत है, बहुत सहना, देखना है।
अगर मिट्टी से, बने ये स्वप्न होते।
टूट मिट्टी में मिले होते, हृदय में शांति रखता।

हरिवंश रॉय बच्चन

कई बार मेरे दिमाग में यह विचार आता है कि उनसे लड़ लूँ, झगड़ लूँ और उन्हें बताऊँ कि समाज में हर इंसान अलग होता है। जैसे हाथों की पाँच उंगलिया बराबर नहीं होती, अलग होती हैं, ठीक वैसे समाज के हर एक मनुष्य में भिन्नताएँ होती हैं। सबके सोच, मंतव्य और अपने विचार प्रस्तुत करने में अंतर होता है। हम जिस समाज में रहते हैं, उसके हिसाब से मेरे सपने काफ़ी भिन्न हैं क्योंकि मैं बचपन से ही अलग वातावरण में पली–बढ़ी हूँ। समाज की सोच को तो बदलना बहुत कठिन काम है। जब तक हम आपने आपको साबित नहीं करेंगे, तब तक कोई भी हमारा साथ नहीं देगा। ऊपर से हमारी पीठ पीछे बुराई करेगा। कहा गया है कि "अंत भला, तो सब भला"। वैसे ही अगर हम अपने आपको सिद्ध करने में सफल रहे, तो परिणाम भले अच्छा न आए पर कुछ लोगों का हमारे प्रति नज़रिया बदलेगा। यही समाज के बदलाव के प्रति हमारा पहला कदम होगा। मेरी समाज से यही आकांक्षा है कि अगर वह मेरे सपनों को सराहे नहीं तो चलेगा, पर उन्हें तोड़ने की कोशिश हरगिज न करे। क्योंकि सपने बहुत कीमती होते हैं, उसे तोड़ने से सामने वाला इंसान टूट कर बिखर जाता है।

– ध्वनि डी घेलणी, 22, गुजरात

लेखन अब जीवन का एक तरीका बन गया है

हर व्यक्ति की कुछ महत्वाकांक्षा या इच्छा होती है। जैसे, हम बच्चे थे तो हम कई चीज़ों को देखकर रोमांचित हो उठते थे और बड़े होकर हम उन्हें प्राप्त करने की इच्छा रखते थे। जैसे–जैसे हम बड़े होते हैं, वैसे–वैसे कुछ सपने और आकांक्षाएँ बनती जाती हैं। हम उन्हें प्राप्त करने की कोशिश करते हैं और उसके लिए कड़ी मेहनत करते हैं। जीवन में एक सपना या लक्ष्य रखना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। जब आप अपने जीवन में इसे हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करेंगे तभी आप इसे हासिल कर पाएँगे। मैं एक प्रसिद्ध लेखक बनने की इच्छा रखती हूँ। एक उपन्यास लिखना चाहती हूँ।

किसी ने सपनों के बारे में सही ही कहा है कि जब आप अपने डर से ज़्यादा अपने सपनों को महत्त्व देंगे तो चमत्कार हो सकते हैं। सपने ज़रूरी हैं लेकिन इसे पूरा करना तभी संभव है जब आप बड़े सपनों को हासिल करने में सक्षम होंगे। जैसा कि छात्रों का सपना अच्छे अंक हासिल करना होता है। परिवार को अच्छे दोस्त की तरह होना चाहिए और सहयोग करना चाहिए। दूसरों की तरह मैं भी छोटी सी उम्र से ही अपना कैरियर बनाने के सपने देखती हूँ। मैं एक प्रसिद्ध लेखक बनना चाहती हूँ। मैं एक उपन्यास लिखना चाहती हूँ और उसे प्रकाशित कराना चाहती हूँ। मैं मौखिक रूप से बात करने में कभी भी उतनी अच्छी नहीं थी न ही मेरा वैसा स्वभाव ही है। मुझे पंडित होना पसंद नहीं है। मैं किसी को जवाब नहीं दे सकती क्योंकि मैं एक शांति प्रिय लड़की हूँ। मुझे किसी के साथ दिल खोलकर बातचीत करना पसंद नहीं करती है। दिल खोलकर भावनाओं और इच्छाओं को दिखाना अच्छा नहीं हैं क्योंकि इससे

आपको तनाव हो सकता है। अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए मौखिक रूप से संवाद करना मेरे लिए जरा मुश्किल है। मेरे लिए लिखना आसान है। लेखन मेरे जीवन का एक तरीका बन गया है। मैं अपनी सारी भावनाओं को लिखकर रखती हूँ और यह मेरी लिए एक जूनून से भी अधिक हो गया है। अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं को मैं कहानियों के माध्यम से लिखना पसंद करती हूँ। जल्द ही मैं एक उपन्यास लिखूँगी। मैं अपने जीवन और कैरियर में अपने परिवार से पूरी सहायता लूँगी।

हर किसी का सपना सफल जीवन बनाने का होता है। जब मैं एक छोटी बच्ची थी तो मैंने एक वैज्ञानिक बनने का सपना देखा था। जैसे–जैसे मैं बड़ी होती गई, बॉलीबुड के अभिनेताओं की ओर आकर्षित होती गई और एक अभिनेत्री बनने का सपना देखने लगी। जब मैंने अपनी 12वीं कक्षा पास की तब मुझे यह एहसास हुआ कि मेरे पास अच्छा ज्ञान है। तब मैंने अपना फैसला बदल दिया और एक अच्छी लेखिका और उपन्यासकार बनने की इच्छा पैदा हुई और इसी के लिए पूरा प्रयत्न करने लगी।

अपने परिवार से ही हम नागरिकता का पहला पाठ सीखते हैं। हमारे माता–पिता बचपन से हमारा पालन पोषण करते हैं। पढ़–लिखकर किसी लायक बनाने के लिए एक परिवार का होना ज़रूरी है। वैसे देखें तो दुनिया में परिवार एक बहुत छोटी ईकाई है परंतु परिवारों से मिलकर समाज बनता है और समाज से मिलकर राष्ट्र बनता है और राष्ट्रों से मिलकर इस दुनिया का निर्माण होता है। इसलिए ही वसुधैव कुटुंबकम कहा जाता है।

जीवन के विभिन्न उतार–चढ़ाव में परिवार का साथ होता है। हमारी माँ हमें जन्म देती है और हमारा पालन–पोषण परिवार वाले करते हैं। वे हमें चलना, बोलना सिखाते हैं। परिवार ही हमारी पहली पहचान होता है। हमारी किशोरावस्था 13–18 वर्ष के बीच होती है। इस अवस्था में परिवार वाले बच्चों को शिक्षा दिलाते हैं। हमें नियमित विद्यालय भेजना और मन लगाकर पढ़ना सिखाते हैं। फिर आती है युवा अवस्था, जिसमें हम जवान व वयस्क बन जाते हैं। इस अवस्था में हमारे परिवार वाले हमारी शादी करते हैं और कॉलेज में अच्छी पढ़ाई के लिए भेजते हैं। हमारे भविष्य को आकार और दिशा देने में हमारे सपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मैं एक प्रसिद्ध लेखक बनने की इच्छा रखती हूँ। लिखना, तनाव दूर करने का एक अच्छा माध्यम है। जब मैंने लिखना शुरू किया तो मुझे पता चला कि मैं वास्तव में अच्छा लिखती हूँ।

– जनक कुमारी, 20, उत्तर प्रदेश

मेकअप आर्टिस्ट

नमस्कार,

मैं नेहा हूँ। जब मैं छोटी–सी थी तब से मुझे मेकअप करना, बाल बनाना, तैयार होना बहुत पसंद था। मेरी ये पसंद ही मेरा सपना बन गया। मैं हमेशा से मेकअप आर्टिस्ट बनना चाहती हूँ। मैं एक बहुत बड़ी मेकअप आर्टिस्ट बनना चाहती हूँ। इसके लिए मैं बहुत कुछ सीखना भी चाहती हूँ। जैसे कि आजकल कितना कुछ नया आ गया है। जिसमें नेल एक्सटेंशन, आईलैश एक्टसेंशन और भी बहुत सारी चीजें हैं। मैं सब कुछ सीखकर अपने पार्लर में सारी सुविधाएँ उपलब्ध करना चाहती हूँ, ताकि मेरे पास आने के बाद कोई भी ग्राहक़ किसी चीज़ के लिए दूसरे पार्लर में न जाए। इसकी तैयारी मैंने शुरू कर दी है। मैं पहले जॉब करना चाहती हूँ और सब सीखना चाहती हूँ। एक अच्छा अनुभव और एक्सपीरियंस लेकर तब मैं अपना पार्लर खोलूँगी।

मेरा दूसरा सपना, वैसे यह सपना मेरे पापा का है जो कि मैं पूरा न कर पाई। लेकिन जब अपने पापा के सपने को पूरा होता मैं न देख पाई तो मैंने नया सपना चुना। मेरे पापा चाहते थे कि मैं दिल्ली पुलिस में भरती हो जाऊँ। मैं ऐसा नहीं चाहती थी। मेरा इसमें बिलकुल भी इंट्रेस्ट नहीं था। मेरी पढ़ाई छूट जाने के बाद तो पापा का यह सपना टूट ही गया। घर में हम चार बहनों के आलावा मेरा एक भाई भी है। बस अब मेरा यही सपना है कि मेरा छोटा भाई पढ़–लिखकर पापा का सपना पूरा करे। क्योंकि मेरे पापा भी पुलिस बनना चाहते थे पर

मेरे पापा जब छोटे थे तभी मेरे दादा जी नहीं रहे। जिसके चलते मेरे पापा ने 10 साल की कम उम्र से ही मज़दूरी करनी शुरू कर दी और अब मेरे पापा अपने सपने को हमारे जरिए पूरा करना चाहते हैं। मैं तो उसे पूरा नहीं कर पाई, लेकिन पापा के साथ मेरा भी अब यही सपना है कि पापा का जो सपना मैं पूरा नहीं कर पाई मेरा भाई उसे पूरा करे। इसलिए हम उसे अच्छी पढ़ाई–लिखाई करवा रहे हैं।

मेरा तीसरा सपना मेरी निजी ज़िंदगी को लेकर है। मैं अपनी ज़िंदगी में एक ऐसा जीवन साथी चाहती हूँ जो हमेशा मुझे समझे, मुझे इतना प्यार करे कि उसके साथ मुझे कभी किसी चीज़ की कमी महसूस न हो। जो मेरे परिवार को भी समझे, हर खुशी, हर गम में मेरा और मेरे परिवार का साथ दे। हर लड़की चाहती है कि उसका पति उसकी सारी बातें माने। मैं भी उसकी सारी बातें मानूँ। उसके परिवार को अपना परिवार बना पाऊँ, सभी को अच्छी तरह समझूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं, उसके परिवार और वो मेरे परिवार की ढाल बनकर चले। हम दोनों एक दूसरे के परिवार को साथ लेकर चलें और ऐसा एक लड़का मेरी ज़िंदगी में आया है। अब मैं चाहती हूँ कि वह मेरी सारी उम्मीदों पे खरा उतरे और मेरे सारे सपने पूरे करने में मेरा साथ दे। उम्र भर मेरा साथ निभाए और सिर्फ़ मुझे चाहे।

मैं अपने सपनों को पूरा करने के लिए समाज से कुछ इस तरह की सहायता चाहती हूँ। पहला यह कि जैसे, मेरा सपना एक पार्लर खोलने का है। ऐसे बहुत सारे लोग जो पार्लर को लेकर ग़लत सोचते हैं। मैंने खुद कितने लोगों के मुँह से सुना है कि यह काम ग़लत है। लड़कियाँ यह काम ग़लत करती हैं। वे कहते हैं कि पार्लरों में पार्लर के काम के अलावा सेक्स संबंधित काम होते हैं। अगर कोई औरत या लड़की पार्लर खोलती है या उसमें जॉब करती है तो उसे ग़लत निगाहों से देखा जाता है। मैं समाज को यह बताना चाहती हूँ कि ऐसा नहीं है। जब समाज पार्लर में जाने वाली महिला को ग़लत नहीं मानता तो पार्लर चलाने वाली को ग़लत क्यों माना जाता है। जैसे, पुरुष अपनी हजामत करवाने नाई की दुकान पर जाते हैं, तो उस नाई के काम को क्यों ग़लत नहीं समझा जाता? शायद इसलिए क्योंकि वह काम आदमी का है। इसलिए जिस तरह आदमी नाई के पास जाता है, वैसे ही औरतें पार्लर जाती हैं, इसमें बुराई क्यों देखी जाती है? क्यों पार्लर के लिए ग़लत बोला जाता है? ज़्यादातर लड़कियों को अपने परिवार से छुपकर पार्लर में आना पड़ता है। मैं चाहती हूँ कि लोग इस मुद्दे पर अपनी सोच को बदलें। अपनी बहन–बेटियों की ज़रूरतों को समझें और हमारे काम को भी किसी दूसरे काम की तरह ही समझें। यह काम किसी काम से कम नहीं। समय बदल रहा है और हमें भी खुद को बदलना होगा।

आजकल समाज में ऐसा है कि बेटा अपनी मर्ज़ी से शादी कर ले तो कोई बात नहीं लेकिन लड़की अगर अपनी मर्ज़ी से शादी करे तो यह ग़लत क्यों है। आजकल लड़कियों को लड़कों से कम नहीं माना जाता है। अगर यह हक़ समाज में लड़कों को मिल सकता है तो लड़कियों को क्यों नहीं? समाज में लड़कियों को भी अपना जीवन साथी चुनने का पूरा अधिकार होना चाहिए। लड़कियों के भी कुछ सपने होते हैं। उनके पास भी दिल होता है। उन्हें भी किसी से प्यार हो सकता है। लेकिन माँ–बाप बिना लड़की की मर्ज़ी, पसंद और सपने को जाने, बिना उसकी पसंद पूछे, उसका हाथ किसी को भी ऐसे ही थमा देते हैं। जिसे न तो वह जानती है, न ही समझती है। इसलिए ऐसा नहीं होना चाहिए। इस समाज में लड़कियों से भी उनकी पसंद पूछकर उनकी शादी का फ़ैसला करना चाहिए।

मैं आशा करती हूँ कि मेरी यह बात समाज को समझ में आए। समाज लोगों से ही बनता है और अगर हम लोग ही एक दूसरे को नहीं समझेंगे तो समाज एक साथ मिलकर कैसे चलेगा?

इसलिए समाज की ग़लत सोच को बदलना होगा। ताकि सब साथ चलें, किसी की ग़लत सोच की वजह से किसी लड़की की ज़िंदगी के सपने पीछे न छूट जाएँ।

यह समाज हमारा है। इसे साफ सुंदर और खूबसूरत बनाना हमारी ज़िम्मेदारी बनती है।

धन्यवाद!

– नेहा, 20, नई दिल्ली

कंप्यूटर इंजीनियर की राह पर

ग्रामीण क्षेत्र में बालिकाओं को उच्च शिक्षा देने के लिए नहीं भेजा जाता है। स्कूली शिक्षा के बाद उनकी पढ़ाई रूक जाती है और उनका विकास भी नहीं हो पाता है। उनको उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करने के लिए विभिन्न प्रकार कि योजनाएँ प्रारंभ कि जाती हैं। उनकी आजीविका के लिए विभिन्न तरह के व्यावसायिक व डिप्लोमा कोर्स चलाए जाते हैं। जैसे– सिलाई का कोर्स और कंप्यूटर कोर्स, आदि कई प्रकार के कोर्स चलाए जाते हैं।

मेरा सपना एक कंप्यूटर इंजीनियर बनना है। हर इंसान का सपना होता है कि वह कुछ न कुछ बने। इसी तरह मेरा सपना इंजीनियर बनना है और इसके लिए मैंने अभी से तैयारी करना और पढ़ाई करना शुरू कर लिया है। वैसे तो कंप्यूटर इंजीनियरिंग में बहुत सारी साखाएँ होती हैं। जैसे कि हार्डवेयर इंजीनियरिंग और सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग। कंप्यूटर इंजीनियर बनकर मैं अपने देश के लिए कुछ कर सकूँगी। कंप्यूटर इंजीनियर बनकर मैं कई तरह के उपयोगी सॉफ्टवेयर बनाऊँगी और अपने देश और देश के लोगों की मदद करूँगी। इंजीनियर इसलिए नहीं बनना चाहती कि मुझे सिर्फ़ अच्छा पैसा कमाना है बल्कि इंजीनियर बनने की मेरी इच्छा कुछ और है। मैं इंजीनियर बनकर अपने देश की सेवा करना चाहती हूँ। अपने देश के लिए कुछ करना चाहती हूँ और अपने माता–पिता के लिए कुछ करना चाहती हूँ। इसलिए इंजीनियर बनना सिर्फ़ मेरा सपना ही नहीं बल्कि यह मेरा जुनून भी है। मैं इंजीनियर बनकर अपने देश के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करूँगी। एक नागरिक का कर्तव्य होता है कि वह अपना काम ईमानदारी से करे। मैं इंजीनियरिंग का काम पूरी ईमानदारी से करते हुए अपना

कर्तव्य निभाऊँगी। हमेशा अपने देश के लोगों को अच्छी राह पर चलने की प्रेरणा दूँगी। वैसे, आजकल के जमाने में इंजीनियर बनने की होड़ में कई लोग शामिल होते हैं लेकिन मैं पूरी मेहनत के साथ इंजीनियर बनने की कोशिश करूँगी। जब तक मैं इंजीनियर नहीं बन जाती तब तक मैं कोशिश करती रहूँगी। मैं एक सफल कंप्यूटर इंजीनियर बनकर एक अच्छी जॉब करूँगी और अपने देश के विकास में योगदान दूँगी। आजकल के जमाने में लोगों को इंटरनेट कंप्यूटर से संबंधित बहुत सी प्रॉब्लम देखने को मिलती है, मैं इंजीनियर बनकर लोगों की उन प्रॉब्लम को हल करने में मदद करूँगी। आजकल हमारे देश में बहुत से लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई है लेकिन जब मैं कंप्यूटर इंजीनियर बनूँगी और मुझे वेतन मिलेगा तो मैं अपना कुछ काम स्वयं करूँगी। मैं अपनी भी आर्थिक स्थिति को बेहतर कर पाऊँगी और साथ ही मैं ग़रीब लोगों की भी मदद करना चाहती हूँ। इस तरह से कंप्यूटर इंजीनियर बनकर मैं बहुत से लोगों के लिए बहुत कुछ अच्छा करना चाहती हूँ। जिससे मुझे भी खुशी मिलेगी और उन्हें भी खुशी मिलेगी और मेरे माता–पिता भी बहुत खुश होंगे। इस तरह से मैं अपने माता–पिता का नाम रोशन करना चाहती हूँ।

एक बच्चे के रूप में हमें जन्म के बाद परिवार और माता–पिता हमारा पालन–पोषण करते हैं। वे हमें पढ़ा–लिखा कर समाज का एक शिक्षित वयस्क बनाते हैं। भाई–बहन के रूप में हमें घर में ही दोस्त मिल जाते हैं। जिनसे कई बार हमारी लड़ाई भी होती है। समाज में हमारे माता–पिता के नाम के साथ हमें पहचान मिलती है। माता–पिता और परिवार के लोग हमें हर तरह से सहयोग करते हैं। हमारे लिए हमारा परिवार इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि परिवार, हमारी पहली पहचान है। हमारा परिवार हर तरह से हमारी रक्षा करता है और परिवार के लोग अपने बच्चे को समझने का पूरा प्रयास करते हैं।

हमें बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे शिक्षा संबंधी हमारी जो नकारात्मक भ्रांतियाँ हैं वे कम हो सकें। लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहन मिले। बालिकाओं को दी जाने वाली शिक्षा में उनको व्यावसायिक शिक्षा भी दी जानी चाहिए, जो उनके आगे के जीवन मेन काम आ सके। हमारे परिवार को लड़कियों को शिक्षा और प्रोत्साहन देना चाहिए।

धन्यवाद!

– मंजू नैणावा, 19, उड़ीसा

आदर्श शिक्षिका

सभी के सपने अलग–अलग होते हैं। बचपन से लेकर आज तक हम सिर्फ़ अपने सपनों के बारे में ही सोचते हैं। कुछ सपने ऐसे भी होते हैं जिन्हें हम पूरा नहीं कर सकते। लोग सपने तो देखते हैं पर उन्हें पूरा करने में वे असफल होते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कई मुश्किलों का सामना कराते हुए भी अपने सपने को कभी नहीं ख़त्म होने देते। सपने देखना सबके बस में है परंतु उन्हें पूरा करना सबके बस की बात नहीं है।

मेरा सपना एक आदर्श शिक्षिका बनना है और मैं अपने सपने के लिए बहुत ही मेहनत करती हूँ। शिक्षिका बनना सबके सब में नहीं है क्योंकि उसमें हमें अपने आपको शिक्षित और क़ाबिल बनाना पड़ता है। गुरू ही ऐसा होता है जिससे शिष्य ज्ञान लेते हैं और अपने भविष्य या सपने को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं। शिष्य का जीवन गुरू से ही तो उज्जवल बनता है। जब गुरू में ही अंधकार हो तो वह शिष्य को कैसे प्रकाश की ओर ले जा सकता है? एक आदर्श गुरू ही शिष्य को अंधकार से प्रकाश की और ले जा सकता है। दुनिया में कई ऐसे लोग हैं जो बहुत ही आगे बढ़ चुके हैं और उन्होंन भी अपने गुरू के चरणों से ही सीख और शिक्षा ली है।

मेरा परिवार मेरे सपने पूरा करने में बहुत ही अच्छे से साथ देता है। मेरे सपने पूरे करने में मेरे माँ, पिता का साथ भी मुझे मिलता है। उन्होंने मेरी पढ़ाई में बहुत मदद की है। मेरे परिवार के कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मेरे सपने पूरा करने में मदद नहीं करते, परंतु मेरे लिए

मेरे माँ–बाप हैं, वे मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। उन्होंने कभी मुझे अकेला महसूस नहीं होने दिया। परिवार की ज़िम्मेदारी से मेरे पिता थक जाते हैं फिर भी वह मेरे सपने पूरे करने के लिए तैयार रहते हैं।

हम जिस समाज में रहते हैं वहाँ लड़कियों को पढ़ाई नहीं करवाते हैं क्योंकि उनका मानना है कि लड़की पढ़–लिखकर क्या करेगी, उसे तो सिर्फ़ घर संभालना है? हमारे समाज में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो लड़कियों की पढ़ाई के बहुत विरोधी भी हैं। समाज के लोगों को कैसे समझाएँ कि हम औरतें किसी से कम नहीं हैं। जब औरत इतने दुख–दर्द सहन कर बच्चों को जन्म दे सकती है तो फिर वह आगे तो कितनी ऊँची उड़ान भर सकती है।

सरकारों ने नारियों को आगे बढ़ाने में कई कोशिशें की हैं। वह महिलाओं के लिए कुछ सुविधाएँ भी उपलब्ध कराती है। सरकार भी हमें प्रोत्साहन देती है और हमारे सपनों को पूरा करने में मदद करती है। कुछ लोग ग़रीब होते हैं जो सपने देखते हैं परंतु उन्हें अपनी ग़रीबी के कारण अपने सपनों को त्यागना पड़ता है लेकिन सरकार उन्हें कुछ सहायता देती है। जिससे वे आगे बढ़ सकें और अपना सपना पूरा कर सकें। लोग अपने सपने को अवश्य पूरा करते हैं।

मेरी बस यही इच्छा है कि मैं और मेरे दोस्त अपने सपने के लिए तत्पर बनें और अपने सपने को पूरा करें। मैं अपनी आख़िरी साँस तक अपने सपने को पूरा करने के लिए तत्पर रहूँगी। कोई भी मुश्किल आ जाए फिर भी मैं कभी हार नहीं मानूँगी। मैं अपनी क़ामयाबी के लिए यह हौसला बनाए रखूँगी।

– बारीआ संजलबेन मंगल सिंह, 22, गुजरात

जीवन में सफलता

मैं अपने सपनों के बारे में क्या लिखूँ क्योंकि मैं एक लड़की हूँ। कहते हैं न कि लड़कियाँ सिर्फ़ सपना देख सकती हैं, पूरा नहीं कर सकती हैं। अपने सपनों को साकार करने में उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसा नहीं है कि लड़कियाँ अपने सपनों को पूरा नहीं कर सकती हैं। लड़कियों ने जो मुकाम पिछले वर्षों में हासिल किया है, उसे देखकर यह नहीं कहा जा सकता है कि लड़कियाँ अपने सपने पूरे नहीं कर सकती हैं।

मैं भी सपना देखती हूँ। क्या करूँ, मुझे सपने देखने की आदत जो है। किसी लड़की के बारे में जब पता चलता है कि उसने कुछ अच्छा किया है और अपने समाज व माता–पिता का नाम रोशन किया है तो गर्व महसूस होता है। तब मुझे यही लगता है कि मेरा भी यही सपना होना चाहिए। परंतु लड़कियों का एक सामान्य सा सपना गाना और डांस करना होता है। ज़िंदगी हमें ऐसे उलझाए रहती है कि समझ न आता कि यह सही है या ग़लत। इन्हीं प्रश्नों से उलझे मन में एक नया सपना उभर आता है। पुराने और नए सपने का यह काम चलता रहता है। मैं अपने पुराने सपनों को छोड़कर नया सपना बनाती रहती हूँ। जीवन की तमाम उलझनों के बीच मैं भी अपने सपनों को देखती हूँ। जिसमें से सबसे उत्कृष्ट सपना है 'जीवन की सफलता'।

'जीवन में सफलता' एक ऐसा सपना है जो आपके जीवन में एक नया मोड़ लाता है। जीवन की सफलता में नया मोड़ लाने के लिए उच्च शिक्षा की अहम ज़रूरत होती है। मैं भी शिक्षा

ग्रहण कर एक नई सोच बनाने की कोशिश करती हूँ ताकि अपने परिवार एवं समाज को नई दिशा दे सकूँ। इसलिए मैं बिहार सरकार में सब इंस्पेक्टर बनना चाहती हूँ।

लड़कियों के सपनों को पूरा करने में सबसे अहम भूमिका परिवार, समाज एवं शिक्षण संस्थानों की होती है। परिवार, माता–पिता, भाई–बहन एवं दादा–दादी की भी सम्मिलित रूप से भूमिका बनती है। परिवार के सपने एक दूसरे सदस्यों से जुड़े रहते हैं। गाँव और शहर के लोगों की सोच भी अलग–अलग होती है। मेरी माँ की सोच पुराने ख़्यालात वाली है। वह अपने सपनों को सिकोड़ कर अपनी बेटी को सिर्फ़ सिलाई बुनाई व चूल्हा–चौका तक ही रखना चाहती थीं। लेकिन अब बदलते समय को देखते हुए मेरी माँ भी अपनी बेटी को पढ़ाकर एक अफसर बनाना चाहती हैं। मेरे पापा और मेरे परिवार के अन्य सदस्य भी मेरे सपनों को पूरा करने की कोशिश करते हैं।

किसी भी लड़की के सपने को पूरा करने में परिवार की अहम भूमिका है। मैं अपने परिवार से यही चाहती हूँ कि वे मुझे मेरे लक्ष्य को पाने के लिए प्रेरित करें। अपने बेटों की तरह अपने बेटियों पर भी विश्वास करें।

किसी भी बेटी के सपने को पूरा करने में परिवार के अलावा समाज के भी मदद की ज़रूरत होती है। आज भी ग्रामीण क्षेत्र में समाज, पुरानी ख़्यालातों में बंधा है। जिसे बदलने की ज़रूरत है। यह तभी संभव है, जब समाज शिक्षित हो। एक शिक्षित समाज ही शिक्षित परिवार को जन्म दे सकता है। समाज बेटियों को शिक्षित करे और उन्हें अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रेरित करे। एकजुट होकर उनकी आर्थिक समस्याओं एवं अन्य समस्याओं से लड़ने में मदद करे, ताकि आज की बेटी भी अपने सपनों को पूरा कर सके।

आज बेटियों को उनके सपनों को पूरा करने में जितनी भूमिका परिवार और समाज की होती है उतनी ही सरकार की भी होती है। आज सरकार बेटियों को शिक्षित करने का प्रयास कर रही है, ताकि बेटियाँ अपने लक्ष्य को पा सकें। लेकिन सिर्फ़ प्रयास करने से कोई भी बेटी अपने लक्ष्य नहीं पा सकती। इसके लिए मुक़म्मल प्रयास की ज़रूरत है। सरकार की कुछ योजनाएँ ऐसी हैं जो बेटियों को उनके लक्ष्य को पाने में सहायता करती हैं।

जैसे– बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओ योजना का अनावरण किया। जिसका प्राथमिक उद्देश्य लड़कियों को लिंग आधारित गर्भपात जैसी समस्याओं से बचाना और बालिकाओं को बढ़ावा देना है। यह एक शैक्षिक कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य

सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण को बदलना है और इसके लिए तुरंत नकद भुगतान की आवश्यकता नहीं होगी। इस कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य, बालिकाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना एवं लड़कियों के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है।

इसी तरह एक बालिका समृद्धि योजना है। बालिका समृद्धि योजना, एक छात्रवृति की पहल है जो ग़रीब परिवारों की युवा लड़कियों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।

माध्यमिक शिक्षा की लड़कियों के लिए प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना भी है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के वंचित वर्गों की लड़कियों की मदद करना और उन्हें अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी करने में सक्षम बनाना है।

इसके अलावा मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना भी है। बिहार सरकार द्वारा लड़कियों की उच्च शिक्षा को प्रोत्साहित करने एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए कन्या उत्थान योजना की शुरूआत की गई है। इस योजना के अंतर्गत शिक्षण के लिए प्रोत्साहन राशि के तौर पर इंटर मीडिएट पास करने वाली लड़कियों को 25 हजार एवं ग्रेजुएट करने वाली लड़कियों को 50 हजार रूपए दिए जाते हैं।

सरकार की ये उत्कृष्ट योजनाएँ बेटियों को अपने मुकाम प्राप्त करने में मदद करती हैं। इसके साथ ही सरकार को कुछ और भी ज़रूरी कदम उठाने चाहिए। जैसे–

1. प्रत्येक पंचायत में एक बालिका महाविद्यालय हो।

2. नौकरी में लड़कियों के लिए और ज़्यादा स्थान आरक्षित किया जाना चाहिए।

3. सिविल सेवा में लड़कियों को आगे लाना चाहिए।

सपने देखना कोई बुरी बात नहीं है, लेकिन केवल सपने देखते रहना ठीक नहीं है। उन्हें साकार करने का प्रयत्न जारी रखना चाहिए। एपीजे अब्दुल कलाम ने एक बहुत सुंदर बात कही थी कि "सपने वे नहीं होते जो आप नीद में देखते हैं, सपने तो वे होते हैं जो नींद नहीं आने देते।"

निधि अग्रवाल ने अपने कविता के माध्यम से बेटियों और महिलाओं को सशक्त करने का प्रयास किया है, जो इस प्रकार है–

ज़रूरत है महिलाओं को
शिक्षा की ओर अग्रसर करना
उनके स्वयं के अधिकारों के ज्ञान के लिए
ज़रूरी है महिलाओं की
स्वतंत्रता और उनका सम्मान
समाज में एक नई पहचान के लिए ज़रूरी है महिलाओं को
हर एक क्षेत्र में अवसरों को प्रदान करना
एक नवनिर्माण के लिए
ज़रूरी है महिलाओं के
विचारों को महत्त्व देना और समझना
उनकी भावनाओं के मान के लिए
ज़रूरी है, महिलाओं की
आवश्यकताओं का ध्यान रखना
उनके उत्तम स्वास्थ्य के लिए
ज़रूरी है, महिलाओं को
सक्षम और शक्तिशाली बनाना
उन्हें स्वयं की सुरक्षा के लिए सुदृढ़ करना

मैं भी इन सब बातों को ध्यान में रखती हूँ और जो बिहार सब–इंस्पेक्टर बनने का सपना देखा है उसके लिए जी तोड़ मेहनत करना चाहती हूँ। अपने परिवार और समाज का मान बढ़ाना चाहती हूँ। राज्य की सेवा में अपना योगदान कर राज्य का मान बढ़ाना चाहती हूँ। मैं गाँव की बेटियों के लिए प्रेरणा बनकर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहती हूँ।

– मनीषा कुमारी, 16, बिहार

दरवाज़े के अन्दर से बाहर की ओर

मन में लक्ष्य ले ठान, किशोरियों की शान।
पानी संस्थान बदायूँ, मान सम्मान।।

श्यामा देवी

मैं एक सामान्य परिवार से हूँ। मेरे दो भाई और चार बहनें हैं। मेरे पापा राजेन्द्र प्रसाद जी किसान हैं और मेरी मम्मी श्रीमती श्यामा देवी जी एक आगनबाड़ी कार्याकर्ता हैं। मेरा सपना आर्मी हॉस्पिटल में नौकरी करने का था। मैं बचपन से अपने मामा के घर पर ही रहती थी। जब मैं गोद में थी तब मेरे नाना और मामा मम्मी को ससुराल पहुँचाने आए। उनके साथ हम दो जुड़वा बहनें भी थी। उस समय मेरी दादी ने हम दोनों लड़कियों को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा, 'इन दुनौ का वहीं लई जा औ ननिहाल में पालन पोषन करा' (इन दोनों को वहीं ले जाओ और ननिहाल में पालन पोषण करो)। उस वक़्त नाना और मामा ने उनसे बहुत विनती की लेकिन नहीं मानी। उस वक़्त पापा भी कुछ नहीं बोले और हम सब वापस चले आए। नाना, मामा, मम्मी और हम दोनों बहनें। हमारा मामा के घर ही पालन–पोषण हुआ। नाना–नानी ने हमें अच्छे संस्कार दिए। मैं वहीं नानी के पल्लू से लिपटकर रहने लगी। एक दिन नाना इस दुनिया को अलविदा कह गए। वे छत से गिर गए थे। घर आने से हमें डर लगता था और लड़कियों से ज़्यादा काम लिया जाता था, ऊपर से हमें डाट–मार भी मिलती थी। गलती करने पर हमें समझाया नहीं जाता था। मेरा एडमिशन मामा ने वहीं करवाया। मेरी सबसे बड़ी बहन यहीं घर पर ही रहती थी। दोनों भाई भी जुड़वा थे। सबसे छोटी बहन

भी घर पर मम्मी के साथ ही रहती थी। मुझसे बड़ी बहन मामा के ही घर रहती हैं। वही मुझे अपने साथ विद्यालय ले जाती थी। हम दोनों घर में भी पढ़ती थीं। एक दिन दादी पापा से बोली, दोनों बड़ी हो गई हैं, जात्या पप्पू, बिटिया लोगन का लेके अउत्या, नाहि तो हुआं बर्बाद होई जाए (जाओ पप्पू, बेटी लोगों को ले के आओ, नहीं तो वहाँ बर्बाद हो जाएँगी)। इहाँ सबके साथे ऊहौ काम करे, अब तव खाना बनावत होए (यहाँ सबके साथ वो भी काम करेगी, अब तो खाना बनाना आता होगा)। पापा मुझे लेने गए। उनके साथ मेरा आने का मन नहीं था। हम नानी के पास जाकर रोने लगे। नानी समझाई, 'जाओ फिर जल्दी आना, तोहरे मामा का भेज देब (तुम्हारे मामा को भेज दूँगी), कि जा लै आवा हमरे नातिन का' (कि जाओ हमारे नातिन को ले आओ)। पापा के साथ हम चले आए लेकिन हमें प्यार, अपनापन सबसे ज़्यादा मामा के परिवार से था। आज भी है और आगे भी रहेगा। मम्मी से भी प्यार है क्योंकि जन्म देने वाला और पालन–पोषण करने वाला ही ईश्वर होता है। मुझे मेरा नाम देने वाला पापा हैं। हम, इन सबका मोल कभी नहीं चुका पाएँगे। जब मैं अपने गाँव 'पूरब पट्टी' आई तो खेती का ज़्यादा काम नहीं कर पाती थी, खाना नहीं बना पाती थी। कदम–कदम पर बहन, दादी, पापा, सब अलग तरह से व्यवहार करते थे। यह व्यवहार मुझे बिल्कुल गंदा लगता था। मैं पापा के तो सामने भी नहीं पड़ती थी। मम्मी के साथ सोती थी और मम्मी के साथ ही रहती थी। मुझे अपने पास कोई नहीं सुलाता था। यहाँ पर काम के अलावा पढ़ाई के लिए कभी नहीं कहा जाता था। मेरी जो भी रूचि थी वह भी ख़त्म हो जा रही थी। मामा के घर पर मैंने चौथी तक पढ़ाई की। मेरे पापा ने एक स्कूल शुरू किया। मेरी पढ़ाई मेरे भाई–बहन की अपेक्षा ज़्यादा ठीक थी। मम्मी मुझे मामा के घर से यहाँ ले आई। मैं अपने विद्यालय में पाँचवीं क्लास में पढ़ती थी लेकिन उससे नीचे के क्लास को पढ़ाती भी थी। क्योंकि यहाँ स्कूल में टीचर कम थे। छठवीं से आठवीं तक मैं कन्या पूर्व माध्मिक विद्यालय में पढ़ी। मेरा एडमिशन कराने के बाद पापा कभी मेरे विद्यालय में नहीं गए। मैंने ये ठान लिया था कि यहाँ के संस्कार का प्रभाव खुद पर नहीं पड़ने दूँगी। नानी के द्वारा दिए गए संस्कार में ही अपना विकास करूँगी। मैंने वही किया और अभी भी वही कर रही हूँ। नवीं से बारहवीं तक राडी में पढ़ाई की। लेकिन मैं झूठ नहीं बोलती थी क्योंकि पनीस्मेंट (दंडित) मिलता था। मैं सबकुछ सहती थी। इण्टर के बाद मैं पढ़ाई छोड़ देना चाहती थी। मैं जब फीस माँगती थी तो पापा–मम्मी लड़ते थे तो मुझे अच्छा नहीं लगता था। इन सब चीज़ों का बच्चों पर असर पड़ता है। इसमें गलती पापा की ही रहती थी। मम्मी घर की पूरी ज़िम्मेदारी उठाती हैं। इण्टर पास करने के बाद मुझे पानी संस्थान से मदद मिली जिसकी वजह से हम बी.एस.सी. कर रहे हैं। एक दिन मेरे हाथ की हड्डी टूट गई थी जो अब जुड़ गई है। हाथ में प्लास्टर बाँध दिया गया। मैं अपने जीवन से एकदम हार मान गई थी और मेरा दिल टूट सा गया था। फिर मैं

मामा के घर गई तो मेरे ममेरे भाई ने मुझे जीवन जीने का तरीका बताया। मैं उस वक़्त बहुत मायूस थी। उसने बताया कि 'परिस्थिति कैसी भी हो, बस हँसते रहो' आज भी अगर कोई मुझे डाँटता या मारता है तो हँस लेती हूँ। फिर वह खुद ही सोचता कि इन्हें रूलाने और मायूस करने के लिए मैंने ऐसा किया लेकिन ये तो हँस रही है। फिर मैंने हौसला जुटाया कि मुझे आगे बढ़ना है, कुछ करके दिखाना है। यह ठान लिया है कि कितनी भी मुसीबत आए मैं उसका मुकाबला हँसकर करूँगी।

मेरा जन्म, नई दिल्ली के एक अस्पताल में 25 मई, 2002 को हुआ है। उस दिन हम दो जुड़वा बहनें साथ पैदा हुई। बचपन में जब तक मामा के घर थी तब तक खुशहाल थी। पूरब पट्टी गाँव में आने के बाद काम ने यहाँ मेरा बचपन छीन लिया। पापा के न रहने पर कभी मौका मिलता तो चोरी–चुप्पे घर में खेल लिया करती थी। मैंने बहुत संघर्ष किया। चुपचाप सबके ताने सुने। मुझे कहीं भी जाना होता था तो जाने से मना कर दिया जाता था। फिर भी मैं निकल जाती थी और अपना काम करके आ जाती थी। अब पानी संस्थान से काफ़ी जानकारी मिली इसलिए अब सब चीज़े आसान हो गईं। अब संर्घष कम है। सिर्फ़ मामा के घर ऐसा था कि मनमानी करने को मिलती थी। मेरी सारी इच्छाएँ पूरी होती थी। लेकिन यहाँ पूरब पट्टी में बिल्कुल ऐसा नहीं है। यहाँ जबसे पानी संस्थान जाने लगे तो अपने मन का करने को मिला और मैं घर में इन चीज़ों के ख़िलाफ़ आवाज़ भी उठाने लगी। परिवार के अनुसार ही करना होता था। जो घर वाले कहें वही करो, वही पहनो, वही खाओ। कुछ कहने पर यही जवाब मिलता था कि 'खुद को काबू में रखो'। मैं अपने अधिकार के बारे में नहीं जानती थी तो घर के अंदर ही रहती थी। अब तो पानी संस्थान के जरिए बहुत कुछ पता चला। खुलकर रहो, उत्तम विचार रखो, अपने मन का पहनो, खाओ, कैरियर चुनो, जितनी

इच्छा हो और जहाँ मन हो पढ़ो और 'अपना लक्ष्य हासिल करो, सपना पूरा करो।

मैं अपने सपने को पूरा कर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ। दूसरों के सहारे मुझे कुछ नहीं करना है। मैं चाहती हूँ कि लोग मुझसे सीखें और अपने अधिकारों को हासिल करें। मैं समाज की इन प्रथाओं को मिटाना चाहती हूँ। समाज में जो रोक–टोक, भेदभाव, ऊँच–नीच इन सबको ख़त्म करना चाहती हूँ। ताकि मुझे देखकर लोगों को सीख मिले। मुझे पारिवारिक की बस यही मदद चाहिए कि उनका मुझपर विश्वास बना रहे न कि किसी बाहरी के कहने पर भड़क जाएँ।

– अंशिका, उत्तर प्रदेश

सलंग्न

लेखकों के बारे में जानकारी :

जूनियर वर्ग के निबंध

क्र. सं.	निबंध विषय	लेखक	संस्था
1.	सैर, फ़ैशन और उर्दू	अनम	बाल उमंग दृश्य संस्था (BUDS)
2.	जीवन को दिलचस्प बनाना है	शाहिदा बानो	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)
3.	निर्दोष के लिए न्याय की तलाश	रुकय्या बानो	पीपुल'स एक्शन फॉर नेशनल इंटीग्रेशन (PANI)
4.	तन, मन, धन से लोगों की सेवा	चुन्नेश्वरी राना	बस्तर सामाजिक जन विकास समिति (BASTAR)

5.	दूसरों के बारे में सोचना है	नैन्सी कुमारी	किशोरी मंच, निरंतर
6.	सरकारी चिकित्सालय में काम	केसर मेघवाल	विकल्प
7.	लड़की बहुत कुछ कर सकती है	सरिता पांडेय	किशोरी मंच, निरंतर
8.	PDCA (प्लान, डू, चेक, एक्ट) चक्र	वंशिका साहू	द हंगर प्रोजेक्ट (THP)
9.	रोमांच, इच्छा और मेहनत	अंजली कुमारी	द जेंडर लैब
10.	सपना ही खेवनहार है	मोनिका कुमारी रेगर	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)
11.	3D Printing	सौम्या प्रजापति	क्षमता
12.	हॉकी टीचर	मंतशा परवीन	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)
13.	वर्ल्ड टूर की चाह	मनीषा राम	वाचा ट्रस्ट
14.	फ्लोरेन्स नाइटेंगल	ज्योत्सना	बाल उमंग दृश्य संस्था (BUDS)
15.	कला की दुनिया में	निक्की कुमारी	सहयोगिनी

16.	आर्टिस्ट बनना है	हेमा दानू	चरखा डेवलपमेंट कम्युनिकेशन नेटवर्क
17.	बिहार पुलिस	आशिया परवीन	
18.	पत्रकार बनने से मुझे कोई नहीं रोक सकता	लक्ष्मी कुमारी	स्वाभिमान संस्था
19.	मम्मी–पापा धूप में मज़दूरी न करें	सीमा नाथ	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)
20.	सरकार से हमें नौकरी मिलनी चाहिए	चाँद धोबी	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)

सीनियर वर्ग के निबंध

क्र. सं.	निबंध विषय	लेखक का नाम	संस्था
1.	मैं एक फुटबॉल की तरह हो गई हूँ	शुभांगणी सूर्यवंशी	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)
2.	शोषण शब्द छोटा है, मगर उसका असर बहुत अधिक है	शिवांगी	पीपुल'स एक्शन फॉर नेशनल इंटीग्रेशन (PANI)
3.	दिल्ली आकर सपने देखने की शुरुआत	अमिता	बाल उमंग दृश्य संस्था (BUDS)
4.	2001 से 2022 – वही संघर्ष, वही झगड़े	सृष्टि	

5.	हार के आगे जीत है	मुस्कान कुमारी	स्वस्ति सेवा समिति
6.	समष्टि के लिए व्यष्टि	विजयलक्ष्मी	पीपुल'स एक्शन फॉर नेशनल इंटीग्रेशन (PANI)
7.	आज़ादी से रहना पसन्द है	यशोदा गुर्जर	महिला जन अधिकार समिति (MJAS)
8.	चमत्कार की संभावना	गमिता कोला	बाल उमंग दृश्य संस्था (BUDS)
9.	सपने मेरी जान हैं	सुमित्रा	महिला जन अधिकार समिति
10.	सपने तो हज़ार हैं, करने को भी तैयार हैं	शालू	एरिया नेटवर्किंग एंड डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स (ANANDI)
11.	पंख देकर देख लो	सहर फातिमा	हमसफ़र
12.	भरो बाज की उड़ान	महिमा कुमारी	समृद्धि संस्था
13.	अंतरिक्षयात्री	पूजा	पीपुल'स एक्शन फॉर नेशनल इंटीग्रेशन (PANI)
14.	वाइल्ड लाइफ़ फ़ोटोग्राफ़र	ध्वनि डी घेलणी	सहियर स्त्री संगठन
15.	लेखन अब जीवन का एक तरीका बन गया है	जनक कुमारी	सहजनी शिक्षा केंद्र

16.	मेकअप आर्टिस्ट	नेहा	बाल उमंग दृश्य संस्था (BUDS)
17.	कंप्यूटर इंजीनियर की राह पर	मंजू नैणावा	द हंगर प्रोजेक्ट (THP)
18.	आदर्श शिक्षिका	बारीआ संजलबेन मंगल सिंह	एरिया नेटवर्किंग एंड डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स (ANANDI)
19.	जीवन में सफलता	मनीषा कुमारी	स्वस्ति सेवा समिति
20.	दरवाज़े के अन्दर से बाहर की ओर	अंशिका	पीपुल'स एक्शन फॉर नेशनल इंटीग्रेशन (PANI)

जूरी की ओर से:

यह अच्छी बात है कि तमाम तरह की बाधाओं के बावजूद लड़कियाँ आगे बढ़ना चाहती हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, पत्रकार, पुलिस अधिकारी, वकील, टीचर, समाज सेवक, पायलट बनकर दुनिया बदलना चाहती हैं। लड़कियाँ बार–बार अपने लेखन में समाज में फैली तमाम तरह की सामाजिक कुरीतियों को खत्म करना चाहती हैं। यही लड़कियाँ हमारी उम्मीद, आशा और इस बात का विश्वास है कि एक दिन ऐसा आएगा जब हमारा समाज तमाम तरह के भेदभाव से मुक्त होगा।

–अनीता भारती, दलित और महिलाओं के अधिकारों के लिए प्रमुख लेखिका और कार्यकर्ता।

जिस सुंदरता से अपने सपनों और विचारों को लिखा गया, उसे देख कर मैं दंग रह गया, क्योंकि जब मैं आपकी उम्र का था, मैं इतनी सहजता से अपने विचारों को व्यक्त करना नहीं जानता था। इस पूरी प्रतिक्रिया में मुझे खूब आनंद आया। कई निबंधों को मैंने 3-3 बार भी पढ़ा, वे इतने मार्मिक थे, इसलिए जूरी के रूप में निर्णय लेना मेरे लिए बहुत कठिन था। सभी को मेरी शुभकामनाएँ, आशा करता हूँ आप ऐसे ही लिखते रहेंगे।

– कबीर मान, 2018 से जेंडर संवेदनशीलता और यौन शिक्षा के मुद्दों पर पढ़ाने के साथ–साथ अभियान भी चला रहे हैं। उनका नज़रिया दलित ट्रांसमैन की अपनी पहचान एवं घरेलू हिंसा के अनुभवों पर आधारित है।

कई निबंध खूबसूरत राईटिंग, डिज़ाइन और फूल–माला से सजा कर लिखे गये थे जो देखने में बहुत खूबसूरत लगे। कई ऐसे थे जो बिना सजावट के थें लेकिन उन में लिखी बाते दिल को छू गई। लड़कियों को क्या करना है अपने लिए और समाज के बदलाव के लिए, कैसे उनके मौके ये समाज और पितृसत्ता छीनता है वो भड़ास, दर्द और संघर्ष की पीड़ा भी महसूस हुई है, और आगे कुछ करने का जज़्बा जूनून और साहस दिख रहा है। ऐसे मौके हमें खोलने चहिए, ताकी हम युवाओं के दिल तक पहुँच सकें। सबको प्यार और ताकत।

– कविता बुंदेलखंडी, ज़मीनी स्तर के नारीवादी समाचार नेटवर्क, 'खबर लहरिया' की सह–संस्थापक और प्रधान संपादक, एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया की सदस्य बनने वाली पहली और एकमात्र दलित हैं।

Being a juror of the NCAAC essay competition made me realise why essay is considered a spontaneous, open, and reflective form of writing. And why it is used to teach young people how to write. Reflective writing has always been a very important tactic of the women's rights movement because of the limited avenues of expression for women. Young women writing essays can be understood, in a way, to be apprenticed into creative, critical and contrarian modes of thinking.

– ग़ज़ाला जमील, सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर

National Coalition Advocating for Adolescent Concerns (NCAAC)